प्रस्तुत सकलन में जैन-धर्म के तीन महत्त्वपूर्ण ग्रन्य सकलित हैं— (१) चतुविशतितीर्यकर अनाहत मन्त्र-यन्त्र विदि, (२) श्री कल्याण मन्दिर स्तोत्र तया (३) भन्तामर स्तोत्र ।

उक्त ग्रन्थों में सम्बन्धित ऋदि, मन्त्र-यन्त्र उनकी साधन-विधि तथा प्रभावादि का उल्लेख भी इसमें किया गया है।

पूर्वाचार्यकुन 'श्री चनुविश्वति नीर्थक्य अनाहत यन्त्र-मन्त्र विधि' नामक ग्रन्य अव तक नेयन क्षप्तड भाषा में ही उपनव्य था। श्री १०६ गणधराचार्य श्री कुणुसागर जी महाराज द्वारा उका क्ष्यर-ग्रन्य का प्रथम हिन्दी-अनुवाद प्रस्तुत क्षिया गया, ऐतदथ संपूष्ण ममाज उनका अरयन्त अनुग्रहीत है।

'कत्याण गन्दिर म्नोत्र' यथार्थम मानव-वर्ग्याण का मन्दिर ही है। जैन धर्म के दोनो सम्प्रदायो—श्वेताम्बर तथा दिगम्बर—मे इसे समान रूप से प्रनिष्ठा प्राप्त है। ज्वेताम्बर सम्प्रदाय इसे सिद्धसेन दिवाकर की तथा दिगम्बर सम्प्रदाय अवार्य कुमुदचन्द्र की रचना मानता है। इस स्तीत्र का रचना-सान यार्ग्य गायार्थ कुमुदचन्द्र की रचना मानता है। इस स्तीत्र का रचना-सान यार्ग्य गायार्थ कुमुदचन्द्र की यदा माना जाता है। यह चमत्कारिक स्तीत्र भी दीर्घनाल म अनुपत्व-प्रथा। खुर्द निवासी प० कमलकुमार जैन शास्त्री 'कुमुद' के कठिन परिश्रम के फलस्वरूप ही यह मुलम हो पाया है।

भननागर स्तोत्र का रचना-काल भी सुनिष्चित नही है, परन्तु इसवे प्रणेता उज्जयिनी ने महाराजा विकासादित्य के समय मे विद्यमान थे, ऐसी मान्यता है। प्रह स्ताप भी अधितास्य तथा दिगम्बर—दोनो सम्प्रदायो द्वारा मान्य है नया सेभी जैन मतानुषायो इसे मनोभिसापाओं की पूर्ति करने वाला स्वीकारते हैं।

आधुनिक युग म श्रुतज्ञान परम्परा के प्रतिष्ठापक मुनि श्री १०६ धरतेनाचार्यज्ञी ने पञ्चपरमेष्ठी वाचक णमोकार मन्त्र की 'क्षनादि निधन' कहा है। इस्मन्त्र के प्रति अनादि निधन शब्द का प्रयोग शब्दात्मक पुद्गल (Matter) के पदाय का परिवर्तन तथा उसका ध्रौब्यपुद्गल द्रव्यात्मकता हाने मे त्रिकालाबाधित सत्य की कसीटी पर आज के वैज्ञानिक साथना द्वारा सिद्ध हो गया है।

मृति भी भूतवली न पृण्यत्न को परीक्षा मन्त्र-साधना विधि से की भी तथा उमम गफलता मिलन न बाद ही उन्हें श्रुत का ज्ञान कराया गया सल्तु मन्त्र-ज्ञान्त्र भी द्वादणाग रण श्रुत के विद्यानुवाद का विषय रहा है। मन्त्र-साथना वे द्वारा ही एकाग्रता को प्रास्त कर, क्रमण मोक्ष-सीपान पर आरुढ हुद्रा था सकता है।

मन्त्र के उच्चा ग्यांस उत्पन्न हुई तरमों की बाकृति की रचना Photograph of Vibrations हो यन्त्र का प्रतिरूप हैं। चौदी, ताझ आदि पर लिखित मन्त्र स्वरूप की हो यन्त्र कहा जाता है। वह मन्त्र को स्मरण कराने का माधन होता है। यथार्थ में हन्यात्मक उच्चारण सं आकाश म्थित बायु के माध्यम में कम्पायमान तरगों से जी आकृति रचित होती है, उसका जो जान स्वात्मजान के हागा होगा, वही उस यन्त्र हारा भी प्राप्त होता है।

यन्त्र मे लौकिक-कार्य सम्पादन को शक्ति अन्तर्निहित रहती है। उस शिकत से ही तामप्रनादि मे चमरकारिता को प्रकट किया जा सकता है। वही आरम-शिकत के प्रभाव का चौतन भी करती है। वस्तुत मन्त्र, यन्त्र का विषय त्यागी, तपन्त्री साधुजनों का ही है। इनकी साधना का मुख्य उद्देश्य स्वारमस्वरूप की प्राप्ति ही है, तयापि धम प्रभावना हेतु इनका चमरकारिक प्रयोग यथावसर स्वयमेव भी होता है। अन जो लोग धर्माचरण मे प्रवृक्त रहकर मन्त्र-पन्त्रों को साधना करते हैं, उन्हें वाछित फलों की नि सणव उपस्विध होती है।

मन्त्र-यन्त्र साधना प्राय सभी धम-सम्प्रदायो मे प्रचलित है। जैन तया बौढ धर्मों को यदि हिन्दू घर्म वा सहोदर मान विधा त्राय तो भी इस्लाम और यहाँ तक कि ईमाई धर्म में भी मन्त्र-तन्त्र साधव पाये जाते हैं। साधन विधियां पृथक्-पृथक् होने पर भी उन सबवा सक्ष्य एक जैसा हो रहता है।

जैन धर्म में भी तन्त्र-मन्त्र एव यन्त्रो का बाहुत्य है। 'विद्यानुवाद' ग्रन्य तन्त्र-मन्त्रो का भण्डार माना जाता है, परन्तु बह अब दुष्प्राप्य है। इधर 'तप् विद्यानुवाद' नामक एन ग्रन्थ पिछले दिनो प्रकाशित हुआ है, परन्तु उसमें मनपित मन्त्र-सन्त्रादि की शुद्धता अमदिग्ध नही है। अस्तु, साधनो को निश्चित सफलता प्राप्त हो, इस दुष्टि से, उधर-उधर से मन्त्र-तन्त्रादि का मनलन न करके, जिन स्तोत्रों में सम्बन्धित मन्त्र-यन्त्रों की प्रामाणिकता निर्विदाद हैं, केवल उन्हीं को उस सप्रह स स्थान दिया गया है।

आशा है, मन्त्र-जिज्ञासु इसमे लाभान्त्रित होगे।

प्रस्तुत ग्रन्थ हेतु सामग्री-मक्तन में हमे जिन विद्वानों तथा ग्रन्था से सहायता प्राप्त हुई, उन सभी के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ है। श्री यतीन्द्रकुमार जैन बाम्भी, के हम अत्यधिक आभारी हैं, क्योंकि इस पुस्तर के सम्पादन में मर्वोधिक सहयोग उन्हीं में प्राप्त हुआ है।

अहोरपाड़ा, आगरा-२ } १ जून, १६६४ ईं०

--राजेश वीक्षित

विषय-सूची

वस्य संख्या

٥.	साधन से पूर्व आवश्यक निर्देश आदि	\$x-\$£
٤.		१७-४६
•	साधन-विधि	• • •
	(क) आवश्यक ज्ञातव्य	
	(१) श्री ऋपभनाय स्वामी	
	राजा वशीकरण मन्त्र-यन्त्र	१=
	(२) श्री अजितनाथ स्वामी	•
	सर्प बजीकरण मन्त्र-यन्त्र	20
	(३) श्री मभवनाथ स्वामी	•
	कार्य-साधक मन्त्र-यन्त्र	٦?
	(४) श्री अभिनन्दननाथ स्वामी	
	मर्वजन स्वाधीन मन्त्र-यन्त्र	२२
	(५) श्री सुमतिनाथ स्वामी	
	पुरुष विशोकरण मन्त्र-यन्त्र	२४
	(६) श्री पद्मप्रभ स्वामी	
	सक्ष्मीवर्द्धक मन्त्र-यन्त्र	२४
	(७) श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी	
	पृष्टिचक-भयनाशक मन्त्र-यन्त्र	२६
	(=) श्री चन्द्रप्रभ स्वामी	
	स्त्री-पुरुष वजीकरण मन्त्र-यन्त्र	. ২্ব
	(६) श्री पु ^{रे} पप्रन्तनाथ स्वामी	
	अचित्रय फनदायक मन्त्र-यन्त्र	२६
	(१०) श्री शोनलनाथ स्वामी	
	सर्व विशाचवृत्ति भयनाशक मन्त्र-यन्त्र	30
	(११) श्री श्रेयासनाय स्वामी	
	चतुष्पद-रक्षण मन्त्र-यन्त्र	₹१

(१२) श्रीवासुपूज्य स्वामी	
सर्वकार्य सिद्धि मन्त्र-यन्त्र	३२
(१३) श्री विमलनाथ स्वामी	
तुरिट-पृरिटदायक मन्त्र-यन्त्र	\$8
(१४) थ्रो अनन्तनाथ स्वामी	
मर्वमीटयदायक मन्त्र-यन्त्र	34
(१५) श्री प्रमेनाथ न्वामी	
सर्व वणीकरण मन्त्र-यन्त्र	३६
(१६) थी गान्तिनाथ स्वामी	٠.
मर्व शान्तिकरण मन्त्र-यन्त्र	
(१७) श्रीकृत्थनाय स्वामी	
मत्कूणादि-उगद्रवनाशक मन्त्र यन्त्र	36
(१६) थी अरहनाथ स्वामी	, -
द्यत-विजयप्रद मन्त्र-यन्त्र	٧o
(१६) श्री मिल्लनाथ स्वामी	
चिन्तित व ।यसिद्विष्ठद मन्त्र-मन्त्र	89
(२०) यी मृति मुद्रवनाय स्वामी	•
वशीवें रण मन्त्र-यन्त्र	४२
(२१) श्री निमनाय स्वामी	•
मर्व वशीकरण मन्त्र-यन्त्र	84
(२२) शी नेमिनाथ स्थामी	
युद्ध-विजयप्रद मन्त्र-यन्त्र	64
(२३) श्री पार्श्वनाथ स्वामी	
अारोग्यदायक मन्त्र-यन्त्र	38
(२४) थी महाबीर स्वामी	
युद्ध-विजयप्रद मन्य-यन्त्र	84
(स्र) यन्त्र प्राण-प्रतिष्ठा मन्ध	38
(ग) नीर्थकर-विम्ब (मूर्ति) के नीचे स्थापना करने का सन्ब	38
(२५) नागार्जन यन्त्र-विज्ञान	Ķο
(२६) नवयह यन्त्र-चिन्तामणि	ሂሂ
श्रीवरुवाण मन्दिर स्तोत्र	
मन्त्र-यन्त्र साधन-विधि	४७~१२७
(क) आवश्यक-ज्ञातव्य	
(१) विवाद-विजय एव अभीएमन मार्थ सिद्धिन।पनः	
मन्त्र-यन्त्र	25

(३) गर्भरात एव असमय-निधन निवारक मन्त्र-यन्त्र

(४) वशीकरण कारक एव प्रब्छन्न-अन प्रदर्शक मन्त्र-

(५) वशीकरण कारक एव सन्तान-सम्पत्ति प्रदायक

દ્દ

६३

ξĘ

मन्त्र-यन्त्र

यस्त्र

	454-454	६३
(६)	चौर-सर्पादि भय-निवारक एव आकर्षण कारक	
	मन्त्र-यन्त्र	६६
(৩)	सर्प-दश एव कृषितोषदेश-विनाशक मन्त्र यन्त्र	६ष
(=)	उपद्रव-नाशक एव सर्प-वृश्चिक विध-नाशक	
	मन्त्र-यन्त्र	90
(3)	जल-भय-नाशक एव तस्कर-भय-विनाशक मन्त्र	
	यन्त्र	७२
20)	अग्नि-भयनाशक मन्त्र, जल-भय-विनाशक यन्त्र	७४
28)	मनोभिलापा पूरक मन्त्र एव अग्नि-भय-नाशक	
	यन्त्र	৬४
(çş)	त्रूर व्यन्तरादि नाशक मन्त्र एव जल-सुधारक	
	यन्त्र	<u> </u> ૭૭
(₹₹)	प्रश्नोत्तरदायकः एव शत्रु-निवारक मन्त्र-यन्त्र	૭૬
	ज्वर-नाशव-मन्त्र एव चीर-भयहारी यन्त्र	5٤
(१५)	कर्म-दोष नाशक मन्त्र एव भय-नाशक यन्त्र	4 3
(१६)	विष-दोष नाशक मन्त्र एव विरोध नाशक यन्त्र	=1
(১৯)	शुभाशुभ ज्ञान प्रदायक मन्त्र एव सर्प-विष	
	नाशक यन्त्र	4
(१८)	जल-जीव मुक्ति कारक मन्त्र एव नेत्र-पीडा-	
	नाशक यन्त्र	55
	वशीकरण मन्त्र एव उच्चाटन कारक यन्त्र	≒ ξ
	हिस्र-पशु भय नाशक एव पुष्प-पोपक यन्त्र-मन्त्र	१३
(२१)	सम्मान-प्रदायक एव फल-पोपक मन्त्र-यन्त्र	६३
(२२)	स्त्री-आ़कर्षण एव राज-सम्मान दायक मन्त्र-	
	यन्त्र	83
	शत्रु-सैन्य निवारक एव राज-प्रदाता मन्त्र-यन्त्र	£Χ
(5R)	सर्प-वृश्चिकादि विष-नाशक एवं हर्ष-बर्द्धक	
	मन्त्र-यन्त्र	819

(२४) पर-विद्या-प्रयोग नाशक एव सम्मानप्रद मन्त्र यन्त्र	33
(२६) दृष्टि-दोव नाशक एवं शक्षु-पराभव काः	
मन्त्र-यन्त्र	800
२७) पराधीनता-नाशक एव यश-विस्तारक मन्त्र-यन्त्र २८) दाहक-ज्वर-नाशक एवं लोक-प्रसन्नतादायक	१०२
मन्त्र-मन्त्र	१०३
(२६) जुमाजुभ ज्ञान-प्रदाता एव जल-स्तम्भक मन्त्र- यन्त्र	204
(३०) शत्रु उपद्रव-नाशक एवं शुभागुभ ज्ञान प्रदाता	•
मन्त्र-यन्त्र	१०६
(३९) निद्राकारक एव मांधातिक-विद्या-भय-नागक	
मन्त्र-यन्त्र	ţo5
(३२) भूनप्रेतादि भग-नाशक एवं दुर्मिक्ष निवारक	
मेन्त्र-पत्त्र	305
(३३) अन्न-धन प्रदायक एव भूतादि-पीड़ा-नाशक	•
भन्त्र-यस्त्र	१११
(३४) सकट-निवारक एव अपस्मारगिद-दोप-नागक	•••
मन्त्र-यन्त्र	११२
(३५) वशोकरण कारक एवं सपं-कोलक मन्त्र-यन्त्र	११४
(३६) भूत-प्रहादि-निवारक एवं सम्मान-प्रदायक मन्त्र	••
यन्त्र	११५
(३७) अभीष्सित-वार्य-साधक एव नहरू आदि रोग-	• • •
नाशक मन्त्र-घन्त्र	११७
(३८) आकर्षण-कारक एव ज्वरादि नाशक मन्त्र-यन्त्र	११८
(३६) विषमञ्बरादि नाशक मन्त्र-यन्त्र	220
(४०) अस्त्र-शस्त्रादि स्तम्भक मन्त्र-यन्त्र	१२१
(४१) स्त्री-रोग नाशक मन्त्र-पन्त्र	१२३
(४२) भय-नाञ्चक एव बन्धन-मोक्ष कारक मनत्र-यन्त्र	१२४
(४३) रोग-शत्रु-नाशक एवं व्यापार-वर्द्धक मन्त्र-यन्त्र	१२६
श्री भवतामर स्तोत्र मन्त्र-साधन विधि १२६-	
(क) आवश्यक-ज्ञातन्य, मन्त्र-यन्त्र	१२५
(१) सर्व विध्ननाशक मन्त्र-यन्त्र	१२६
(२) मस्तक पीड़ा-नाजक मन्त्र-यन्त्र	१३०
(३) सर्व सिद्धिदायक मन्त्र-यन्त्र	838

१३१

(१२)

` ` '	
(४) जल-जन्तु-भयमो चक म-त्र-य-त्र	१३३
(५) नेय-रागहारक मन्त्र-यन्त्र	838
(६) विद्यान्प्रसारक मन्त्र-यन्त्र	१३४
(७) क्षद्रोपद्रव-निवारक मन्त्र-यन्त्र	१३४
(a) सर्वारिष्ट योग निवारक मन्त्र यन्त्र	१३६
(E) अभीष्मित फलदायक मन्त्र-यन्त्र	१३७
(१०) कुक्कुर-विप-नाशक मन्त्र-यन्त्र	१३⊏
(११) आकर्षण-कारक एव वाछापूरक मन्त्र-यन्त्र	388
(१२) हम्ति-मद विदारक, मन्द्र-यन्त्र एव वाछितन्त्य-	
दायक मन्त्र-यन्त्र	१४१
(१३) सम्पत्ति-दायक एव शरीर-रक्षक मन्त्र-यन्त्र	१४२
(१४) आधि-व्याधि नाशक मन्त्र यन्त्र	१४३
(१५) सम्मान-सीभाग्य सम्बद्धंक मन्त्र-यन्त्र	१४४
(१६) सर्व विजय दायक गन्त्र-मन्त्र	१४४
(१७) सर्व रोग निरोधक मन्त्र यन्त्र	१४६
(१८) शत्रु मैन्य र पाभक मन्त्र-यन्त्र	3,80
(१६) उन्चाटनादि गधक मन्य-यन्त्र	१४६
(२०) सन्तान-मम्पत्ति साभारय प्रदायक मन्त्र-यन्त्र	१५०
(२१) सर्वसुख मीभाग्य साधक मन्त्र-यन्त्र	१५१
(२२) भूत-पिशाच वापा निरोधक मन्त्र-यन्त्र	१४२
(२३) प्रत-बाधा नाशर मन्त्र-यन्त्र	१४३
(२४) शिरोरोग नाशक मन्त्र-यन्त्र	१४४
(२५) दृष्टि-रोप निवारक मन्त्र-यन्त्र	१४४
(२६) आधा सीमी पीडा-विनाशक मन्त्र-यन्त्र	१५६
(२७) शत्रु-नाणक मन्त्र-यन्त्र	१५७
(२८) सर्व मनोरथपूरक मन्त्र-यन्त्र	१५८
(२६) नेत्र पीडा-निवारक मन्त्र-यन्त्र	१५६
(३०) शत्र्-म्तम्भन गारक मन्त्र-यन्त्र	१६०
(३१) राजसम्मान प्रदायक मन्त्र-यन्त्र	१६१
(३२) सग्रहणी निधारक मन्त्र-यन्त्र	१६२
(३३) सर्वज्वर महारक मन्त्र-यन्त्र	१६३
(३४) गर्भ-सरक्षक मन्त्र-यन्त्र	१६४
(३४) ईति-भीति निवारक मन्त्र-यन्त्र	१६५
(३६) लक्ष्मी-प्रदायक मन्त्र-यन्त्र	१६६
(३७) दुष्टना-प्रतिरोधक मन्त्र यन्त्र	१६७

(ξş)

। (३८) हास्तमद-भजक तथा सम्भात्त-वहक मन्त्र-वन्त्र	१६८
(३६) मिह-गिन निवारक मन्त्र-यन्त्र	३३१
(४०) सर्वोग्नि-भागक मन्त्र-यन्त्र	१७०
(४१) भुजङ्ग-भय नाशक मन्त्र-यन्त्र	१७१
(४२) युद्ध-भय-विटाशक मन्त्र-वन्त्र	१७२
(४३) सर्वे शान्तिदाना मन्त्र-यन्त्र	१७३
(४४) सर्वापत्ति निनारनः मन्त्र-पन्त्र	238
(४५) जलोदरादि रोग-नाशक एवं निगत्ति-निवारक	
मन्त्र यस्त्र	গ্ডথ
(४६) बन्धन-मुक्ति दायक मन्त्र-यन्त्र	१७६
(४७) अस्त्र-मरेत्रादि निरोधक मन्त्र-यन्त्र	१७७
(४८) मर्वमिद्धिदायक मन्त्र-यन्त्र	१७=
४. ऋषि-मण्डल यन्त्र-साधन	308
४. स्वयम् स्तोत्र	820
गौतम गणघर यन्त्र	

किसी भी मन्त्र-यन्त्र की साधना से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान में रखना आवश्यक है---

(१) मन्त्र सदैव गुरु-मुख से हो ग्रहण करना चाहिए। गुरु-मुख द्वारा ग्रहण कियं ग्रंथ मन्त्र ही फलदायक होते हैं।

(२) मन्त्र का जप अग-गृद्धि, सकलीकरण एवं विधि-विधानपूर्वक करना उचित है। आत्मरक्षा के लिए नकलीकरण की आवश्यकता होती है।

(३) प्रत्येक तीथंकर की मूर्ति एक जैसी ही होती है, उनके चिल्लों के द्वारा ही जनकी अलग-अलग पहिचान की जाती है। किस तीर्थकर का कौन-सा चिह्न है, इसका उल्लेख आगे किया गया है, अतः जब भी जिस तीर्थकर के मन्त्र का साबन करें, उनकी विशिष्ट चिह्न युक्त मूर्ति का ही पूजन में प्रयोग करना चाहिए।

यद्यपि मन्त्र-माधना में तीर्थकर की भृति रखना आवश्यक नही है. तथापि उमे रखने मे आत्म-रक्षा एवं मन्त्र-साधना मे विशेष महायता मिलनी है।

(४) किसी मामन्त्र अथवा यन्त्र की साधना करने नमय उस पर पुणे श्रद्धा रखना आवश्यक है. अन्यया वांछित फल प्राप्त नहीं होगा।

(४) मनत्र-माधना के समय शरीर का स्वस्थ एवं गवित्र रहना आवश्यक है। चित्त शान्त हो तथा मन में किसी प्रकार की ग्लानि न रहे।

(६) मन्त्र-माधना के समय चित्त एकाग्र रहना चाहिए। वह किसी और नो चलायमान न हो। मन्त्र का जप गुष्त मा से करना चाहिए तथा किसी पर यह प्रकट नहीं करना चाहिए वि में अमुक कार्य के लिए प्रमुक मन्त्र की साधना कर रहा है।

(७) शद्ध, हवादार, पवित्र तथा एकान्स-स्थान में ही मन्त्र-साधना करनी चाहिए। गन्त्र-माधना तो समाप्ति तक स्थान-परिवर्तन नही करना चाहिए।

(द) जिस मन्त्र की जेकी माजन विधि वर्णित है, उसी के अनुरूप सभी कम बरने चाहिए। अन्यया प्रवृत्ति करने से विघन-बाधाएँ उपस्थित

हो सकती है तथा सिद्धि में भी सन्देह हो मकता है।

(१) मन्त्र-माधना में प्रारम्भ से जन्त तब दीपक, धप-दान, आसन, माला, वस्त्र आदि में कोई परिवर्तन नहीं करना चाहिए।

(१०) साधना काल म, चौबीम घण्टे में येवल एक बार ही शुद्ध सारिवक भोजन बरना चाहिए। प्रण अह्मचर्य का पालन करना चाहिए तथा पृथ्वी अथवा नकडी वे पट्टे (तेन्त आदि) पर शयन करना चाहिए।

(११) अपने पहिनन के बोनी, दुपट्टा, बनियान आदि बस्त्रों को प्रतिदिन धोकर मुखा देना चाहिए।

(१०) शृद्ध घुन का दीपक सम्पूर्ण यादना-काल मे निरन्तर जलते रहना चाहिए।

(१३) प्रत्येव मन्त्र की साधना किसी शूभ मिती एव वार मे आरम्भ

करनी चाहिए ।

(१४) साधना-आरम्भ करने से पूर्व अपना सस्तव पर चन्दन ककूम का तिलक लगाना जावश्यक है।

(१४) मन्त्र-साजभा स पुब चोटी म गाठ लगा लेना आवण्यक है।

(१६) आगन बार-बार नहीं बदलना चाहिए। एक ही आसन से वैठकर मन्त्र को साधना करनी चाहिए।

(१७) प्रतिदिन शुद्ध जल में स्नान करने के बाद ही मन्त्र-साधना मे प्रवृत्त होना चाहिए।

(१६) जप नी समाप्ति ने बाद हवन वश्ना चाहिए, तदुपरान्त थावक-वाविषामा मा गोजन पराना चाहिए।

(४६) द्रप नया हत्रन-सामग्री बाजार से न खरीद यर अपने हाथ से स्वम ही बनानी चाहिए। बाजार की सामगी में प्राय सडी-घुनी वस्तुओं का प्रयोग निया जाता है, जितम छोटे-छोटे कीडे-मकोडे अथवा जीवाणु भरे रहने है। ऐसी बाजाम धूप अथवा हवन मामग्री के प्रयोग से जीव-हिमा होती है, फलत गुभ के स्थान पर अशुभ-फल प्राप्त होता है।

क निर्देण हातथा जिस रग र पुष्पा का विधान हा, उन सबका यथीवन् पालन करना चाहिए।

(२१) जप के आरम्भ तथा अन्त म भगवान् तीर्थकर का ध्यान करना चाहिए तथा अन्त में स्तीत्र आदि का पाठ भी करना चाहिए।

(२२) भनतामर स्तोत्र के मन्त्रों की साधना के समय भगवान् आदिताय तथा करवाण मन्दिर स्तात्र ने मन्द्रा की साधना के समय भगवान् पार्ण्वताय की मूर्तिन नाने ने पर स्थापित करना चाहिए। बहुर्विणाति तीयारा व मन्त्रों की साधना के समय जलग-अलग तीर्थकरों की मुर्तिक तो स्थापना करना उत्तित है।

(२६) जिन मनाभिलाषा पूरके साधना वे साथ ऋदि तथा मन्त्र दोनो ना उन्लेख है वहाँ उन दोना ना साथ-साथ सनान सख्या में जप करना आवण्यक होता है।

(১८) एक बार में एवं हो मन्त्र वी साधना वरना उचित है। इसी प्रकार एक समय मंजेबल एक ही मनोभिलागा की प्रतिका उद्देण्य सम्मुख रहना चाहिए।

सन्युच ५२मा नगरूप । (२५) एव ही मनोभिलापा की पूर्ति के हेतु अनव मन्त्रो का उल्लेख किया गया है, उनमें से जिस मन्त्र पर पूर्ण श्रद्धा हो, उसी की साधना

क्या गया है, उससे साजन नत्त्र पर पूर्ण श्रद्धा है।, उस करनी चाहिए।

टिप्पणी –यदि वोर्डबात समझ मेन आग्ने अववा स्पष्टोकरण की आवश्यवता हो तो उसवे लिए इस पुस्तर व लखक को जवाबी-पत्र लिखकर जानकारी प्राप्त वी जासकती है।

🎙 🛘 चतुर्विशति तोर्थकर अनाहत मन्त्र-यन्त्र

एक कल्प-काल में २४ तीर्थंकर होते हैं। उनके कल्पित-स्वस्त्य की जो मूर्तियो तैयार की जाज़ी है, वे प्राय समान आकृति को होती है, परन्तु उनके बोध-चिह्न कलग-प्रलग होते हैं तथा उन चिह्नों के द्वारा हो उनकी पृथक्-पृथक् पहिचान की जाती हैं।

att did it a tit to the China	
उनके बोध-चिह्न अलग-त्रलग होते है तथा उ	न चिह्ना के द्वारा हा उनका
पृथक्-पृथक् पहिचान का जाता है।	
नोर्थकरों के नाम तथा उनके चिह्न क	मश. इस प्रकार है—
तीर्थंकर का नाम	बोध-चिह्न
१. श्री ऋषभनाय	वैल
२. श्री अजितनाथ	हाथी
३. श्रीसभवनाथ	घोडा
४ श्री अभिनन्दननाय	बन्दर
५ श्री सुमतिनाथ	चकवा
६ श्रीपद्मप्रम	कमल
७. श्री सुपाश्वंनाय	साथिया
द श्रीचन्द्र प्र भ	चन्द्रमा
ह. श्री पुष्पदन्तनाथ	मगर
१०. ध्री श्रीतलनाथ	कर प वृक्ष
११. श्री श्रेयासनाथ	गेडा
१२. श्रीवासपुरुष	भैसा
१३ श्रा दिपलनाय	शूकर मेही
१४. श्री अनन्तनाथ	मेही
१५ श्री धर्मनाय	व ञद ण्ड
१६ श्री शान्तिनाय	हरिण
१७ श्रीकृत्युनाथ	वकरा
१६. श्री अरहनाथ	मछली
१६ श्रीमल्लिनाथ	बलग
२० श्रो मुनि सुवतनाथ	कशुःसा '
२१. श्री निमनाथ	नोलव मल

२२ श्री नेमिनाथ २३. श्री पाष्ट्रवैनाथ গল सर्प

२४ श्री महावीर सिंह उक्त तीर्थंकरों में से जिनके भी मन्त्र-यन्त्र का साधन करना हो, उनको मूर्ति की बैठक पर तदनुरूप बोध-चिह्न अवश्य होना चाहिए, तभी मूर्ति सार्थक होगी। किस मन्त्र की साधना मे किस तीर्थकर की मूर्ति को स्थापना आवश्यक है, यह प्रत्येक मन्त्र के शोर्षक पर उल्लिखित है।

मन्त्र-साधना के समय एक लक्कड़ी की चौकी पर स्वचा रेशमी वस्त्र बिछाकर, उसके ऊपर यन्त्र रखना चाहिए। प्रत्येक यन्त्र का स्वरूप मन्त्र के साथ ही दिया गया है। यन्त्र को स्वर्ण, चौदी अथवा तबि के पत्र पर खुदवा लेना चाहिए । यन्त्र को स्थापित करने के बाद उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करनी चाहिए। प्राण-प्रतिष्ठा की विधि इस प्रकरण के अन्त मे दी गई है। प्रत्येक मन्त्र की प्राण-प्रतिष्ठा उसी विधि से करनी चाहिए।

प्राण-प्रतिष्ठित यन्त्र के ऊपर मन्त्र से सम्बन्धित तीर्थकर की मूर्ति स्थापित कर उसकी पुष्प-धूप-दोप आदि से अर्चना करें, तदुपरान्त निश्चित सख्यामे मन्त्र का जप आरम्भ करे। प्रत्येक मन्त्र-जप के बाद एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते जाना चाहिए। पुष्प गुलाब, वेला, चमेलो आदि के सुगीन्धत तथा पवित्र होने चाहिए।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार उसका प्रयोग करना चाहिए। प्रयोग-विधि आदि का प्रत्येक मन्त्र के साथ उल्लेख किया गया है।

१. श्री ऋषभनाथ तीर्थकर

अनाहत राजा वशीकरण मन्त्र-यन्त्र

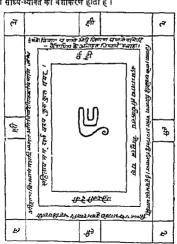
निम्नलिखित मन्त्र श्री ऋषभनाथ तीर्थकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से राजदरवार में राजा अथवा राज्याधिकारियो का वशीकरण होता है ।

मन्त्र-"ॐ णमो जिणाणं च, णमो ओहि जिणाणं च, णमो परमोहि जिणाणं। णमो सब्बोहि जिणाणं। ॐ णमो अणंतोहि जिणाणं। ॐ वय-भस्स भगवदो वयभ स्वामि, धत्त वियराणि अरिहंताणं विज्ञाणं महा विज्ञाणं अगमिप्पदेविदकम्मियाणि जम्मिकराविस के अनाहत विद्यार्थ स्वाहा ।"

साधन-विधि-सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या १) यन्त्र को किसो स्वर्ण अथवा चाँदी के पत्र पर खदवा लें।

फिर एन तकडी की बौको पर रेशमी बस्त्र विद्याकर उसके उत्तर यन्त्र को रखे तथा प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुषरान्त यन्त्र के उत्तर श्री ऋषभनाथ तीर्षकर की मूर्ति स्वाधित कर, पद्मान्त अभिषंक से यनन-पुका कर, १००८ पुष्पो द्वारा पूर्वोक्त श्री ऋषभनाय अनाहत मन्त्र का १००६ बी सरया में जप करें। प्रस्वेक मन्त्र जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते जायें। इस प्रकार तीन दिनो तक, निन्य प्रात काल १००६ की सख्या में पुष्प सहित मन्त्र जप करते रहें। इस प्रत्रिया से मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। प्रस्थेक यन्त्र वी प्राण-प्रतिष्ठा का मन्त्र जाये तिखा गया है, बहरें दिख ली।

प्रयोग-विधि—मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय, राजदरवार आदि में जाने से पूर्व १००० की सच्या में मन्त्र का जप कर से तो साध्य-व्यक्ति का वशीकरण होता है।



२ श्री अजितनाथ तीर्थकर

अनाहत सर्ववशीकरण मन्त्र-यन्त्र

निम्तिलिखित मन्त्र श्री अजितनाय तीर्थंदर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से राजदरबार में अधिकारीगण तथा अन्य सब लोगो पा वणीकरण होता है।

मात्र—"ॐ णमो भगवदो अजितस्स सिज्झि धम्मे भगवदो विज्ञाणं महाविज्ञाण । ॐ णमो जिणाण, ॐ णनो परमोहि जिणाणं, ॐ णमो सद्योहि जिणाण भगवदो अरहतो अजितस्स सिज्झिधम्मे भगवदो विज्ञार महाविज्झार अजिते अपराजिते पाणिपादे महावले अनाहत विद्यार्थ स्वाहा ।"

साधन-विधि—सर्व प्रथम आगे प्रदर्शित चिन् (सट्या २) वे यन्त्र वो निसी स्वर्ण, चौदी अथवा तांवे वे पत्र पर खुदवाले। फिर एक



लकड़ी की चीकी पर रेशमी बहन विछाकर उसके उत्तर यनम को रखें तथा प्राण-प्रतिष्ठा करें। ततुपरान्त यनम के उत्तर श्री अजितनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत अभिषेक मे यनम्पूजा कर, १००६ पुष्पी द्वारा पूर्वोंकर श्री अजितनाथ अनाहत मन्त्र का १००६ की संख्या मे जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते जायं। इस प्रकार किसी भी शुम दिन में प्रातः कास कैवेस एक ही दिन १००६ की संख्या में जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। (यन्त्र की प्राण-प्रतिष्ठा विधि आगे दी गई है।)

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ वार जप करके राजदरवार आदि में प्रवेश करने से साध्य-व्यक्ति का वशोकरण होता है।

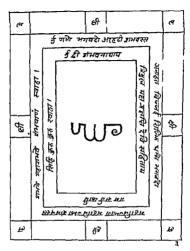
३. श्री संभवनाय तीर्यंकर अनाहत कार्य-साधक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री संभवनाथ तीर्यंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से वांछित कार्य की सिद्धि होती है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहरो शंभवस्स अनाहृत विन्जंई सिन्झि धम्मे भगवदो महाविज्झाण महाविज्झा शंभवस्स शंभवे महा शंभवे शंभ वाणं स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रयम आगे प्रदिश्वित चित्र (संख्या ३) के यन्त्र को किसी स्वण, बांदी अयवा तांवे के पत्र पर खुदवालें। फिर एक लकड़ो की चौको पर रेशमी वस्त्र विधालकर, उसके कपर यन्त्र को एखं तथा प्राण-प्रतिष्ठा करें (प्राण-प्रतिष्ठा की विधि आगे दी गई है), तहुपपान्त यन्त्र के क्यर शी संगवनाय तीर्येकर की मूर्ति स्थापित कर पट्चामृत अभियेक से यन्त्र-पूजा कर, १००० पूर्णों द्वारा पूर्वोंबत श्री संभवनाथ अताहत मन्त्र का १००० की सख्या में जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप खते जायें। इस मन्त्र का जप पूर्णिया जयवा अगावास्था के दिन हो करना चाहिए। उन्तर विधि से केवल एक दिन १००० को सख्या में जप करते से ही यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि--आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार पुष्पों सहित जप करने से इन्छित-कार्य की सिद्धि होती है।



४. श्री अभिनन्दननाय तीर्यंकर

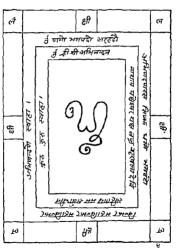
४. अ। आभनन्दननाय तायकर ' अनाहत सर्वजन स्वाधीन मन्त्र-यन्त्र

निम्सलिखित मन्त्र श्री अभिनन्दननाय तीर्यकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सर्वजन स्वाधीन रहते हैं।

मन्त्र-"ॐ णमी भगवंदी अरहदी अभिणदणस्स सिज्झ धम्मे

भगवतो विरक्षर महाविद्धार महाविद्धार अभिणन्त्रणे स्वाहा ।" साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदक्षित चित्र (सस्या ४) वे यन्त्र का किसी स्वर्ण, चीकी अयवा तांबे वे पत्र पर खुदकां । फिर एकं जकतों की चीकी पर रेशमी वस्त्र विछाकर उस पर यन्त्र को रेखे तथा प्राण-प्रतिष्ठा करें, तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री अभिनन्दनताय तीर्यक्रर की मूर्ति स्वाकित कर, पञ्चामृत अभिवेक ने यन्त्र-पूजा कर, १०६ पुणो द्वारा पूर्वोक्त श्री अभिनन्दननाय अनाहत मन्त्र का १०६ की सख्या मे जप कर। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते जायं। मन्त्र का जप किसी भी शुभ दिन में प्रात्यकाल करना चाहिए। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि--आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ वार जप करके पानी को अभिमन्त्रित करें। उस अभिमनित्रत जल द्वारा मुख-प्रकालन करने से सर्वजन स्वाधीन रहते हैं।

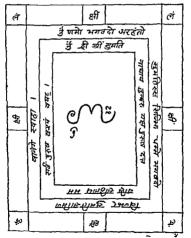


प्र, श्री समितनाय तीर्यंकर

अनाहत पुरुष-वशीकरण मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र थी सुमतिनाय तीर्थंकर का अनाहत मन्त्र है।

साधन-विधि-सर्वप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (सध्या ५) के यन्त्र को किसो स्वर्ण, चौदी अथवा ताँवे के पत्र पर छुदवालें। किर एक सकडी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र की रखकर प्राण-



प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर की मृति

स्वापित कर, पत्न्वामृत अभिषेक से यन्त्र-पूजा कर १०८ पुणी हार। भूवींकः यो सुमितनाय तीर्थकर जनाहतं मन्त्र का १०८ की संख्या में जप करें। प्रत्येक मन्त्र-अप के माय एक-एक पुण्य मृति के समीप रखते जायां। मन्त्र का जप किसी भी शुभ दिन में प्रात काल त्रिकरण शुद्धिपूर्वक करना चाहिए। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो वायेगा।

प्रयोग-विधि-शायस्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार विकरण मुद्धिपूर्वक जप करने से साध्य-व्यक्ति वशीभूत हो जाता है तथा इच्छित कार्य की सिद्धि होती है।

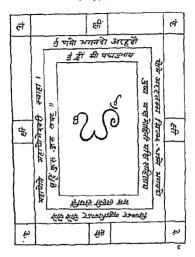
६. श्री पद्मप्रभ तीर्यंकर अनाहत लक्ष्मी-वर्द्ध क मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री पद्मप्रभ तीर्घकर का अनाहत मन्त्र है । इसके प्रयोग से धन-सम्पत्ति की वृद्धि होती है ।

मन्त्र—"ॐ णयो मनवदो अरहदो पोमे अरहतस्स सिन्झ-धम्ने भगवदो विकार महाविकार पोमें पोमे महापोमे महापोमेरवरो स्वाहा।"

सायन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदिशित चित्र (संख्या ६) के यन्त्र को किसी भी धातु के पत्र पर खुदबाले। फिर एक लकड़ी को चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। तखुनरान्त यन्त्र के ऊतर श्री पर्यप्रभ तीर्षकर को मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषंक से यन्त्र-पूजा कर, १०८ पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त श्री पद्मप्रभ तीर्षकर के अताहत यन्त्र का तीर्नों संध्या काल मे १०८ बार (प्रत्येक संध्या काल मे १०० बार) जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते जाँग। मन्त्र का जप किसी भी शुभ दिन में किया जा सकता है। इस बिधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि--आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ वार तीनों संध्या-काल में जप करते रहने से धन-सम्पत्ति की वृद्धि होती है।



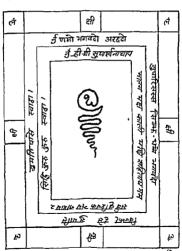
७. श्री सुपार्श्वनाय तीर्यंकर अनाहत वृश्चिक भय नाशक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र थी सुपार्श्वनाय तीर्यकर का जनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से वृश्चिक (विच्छू) का भय दूर होता है।

मन्त्र--- "ॐ णमी भगवदो अरहरी सुपारिसस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्ञर होते सुपासि सुमतिपासे स्वाहा ।"

साधन-विधि-सर्वेप्रथम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या ७) के यन्त्र की किसी भी धातु के वत्र पर खुदवालें। फिर एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र बिछाकर उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्टा वरे। तहुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री सुपार्श्वनाथ तीर्यकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत अभिषंक से यन्त्र की पूजा कर, १०० पूष्पो द्वारा पूर्वोचन श्री सुपार्श्वनाथ तीर्यकर के अनाहत मन्त्र का किसी भी सुभ दिन म प्रात काल १०८ वार कप करे। प्रत्येक मन्त्र-जब के साथ एक-एक पृष्प मूर्ति के समीप रखते जाँग। इस विधि में मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय मन्त्र का १०८ वार जप करने से वृश्चिक (विच्छू) भय दूर हो जाता है तया वृश्चिक-दश का विष उत्तर जाता है।



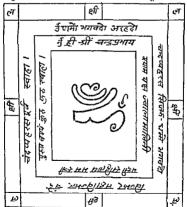
श्री चन्द्रप्रभ तीर्थकर

अनाहत स्त्री-पृष्ध वशीकरण मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री चन्द्रप्रभ तीर्थेकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से अभिलयित स्त्री-पुरुष वश में हो जाते हैं।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो चन्दप्पहस्स सिन्झ-धम्मे भगवदो विष्टार महाविज्हार चदे चदप्पहस्सपूर्व स्वाहा ।"

साधन-विधि—सर्वप्रयम आगे प्रदर्जित चित्र (सख्या ८) के यन्त्र को स्वर्ण, चौदी अयका ताँवे के पत्र पर खुरवाले । फिर एक लक्डो की चौको पर रेशमी वस्त्र विछाकर, उस पर यन्त्र को रख कर प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त गन्त्र के ऊपर श्री चन्द्रप्रभ तीर्यकर को मूर्ति स्वापित कर,



पञ्चामृत अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर, श्वेतवर्ण के १०८ पुष्पी द्वारा पूर्वोक्त श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का, किसी भी शुभ दिन मे प्राप्तःकाल १० इ. बार जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक स्वेत पुष्प मूर्ति के समीप रखते चते जायें। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाएगा ।

प्रयोग-विधि-शावश्यकता के समय उक्त मन्त्र द्वारा १०८ वार अभिमन्त्रित-जल से मुख प्रक्षालन कर जिस साध्य स्त्री-पुरुष के समक्ष पहुँचा जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगा ।

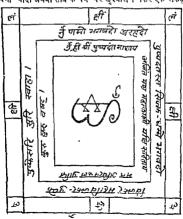
श्री पुष्पदंतनाथ तीर्थकर

अनाहत अचिन्त्यफलदायक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री पुष्पदंतनाथ तीर्थंकर का अनाहत मन्य है। इसके प्रयोग से अचिन्त्यफल की प्राप्ति होती है।

मन्त्र--- "ॐ णमी भगवदी अरहदी पुष्पदंत्तस्स सिन्झ-धम्मे भगवदी

विज्ञार महाविज्ञार पुष्के पुष्केसरि सुरि स्वाहा।"
साधन-विधि-सर्वेप्रथम आग प्रदर्शित चित्र (मंख्या ६) के यन्य को स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँवे के पत्र पर खुदवाले । फिर एक लकड़ी की



चौको पर रेशामी वस्त्र बिछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्ठ। करे। तदुपरान्त यन्त्र के अपर शो पुष्पदतनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र को पूजा कर, १०८ पुष्पो द्वारा पूर्वोक्त श्री पुष्पदतनाथ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का, किसी शुभ दिन में प्रातःकाल १०८ बार जप करे। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जायें। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय उक्त मन्त्र द्वारा १००० बार अभिमन्त्रित-जल से मुख-प्रक्षालन करने पर अचिन्त्य फल की प्राप्ति होती है।

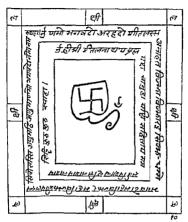
श्री शीतलनाथ तीर्थकर अनाहत सर्विपशाववृत्ति भयनाशक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री शीतलनाथ तीर्थकर का जनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सब प्रकार की पिशाचतृत्ति का भय दूर होता है।

मन्त्र—"ॐ षसो भगवदो अरहदो ग्रीतलस्स अनाहत विज्ञा विज्ञारङ्क सिज्झ-धम्मे भगवदो महाविज्ञार महाविज्ञ शोयलस्स सियो सिसा अणुपाह अणुमाणमो भगवदो नमो नमः स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रद्रांशत चित्र (संख्या १०) के यन्त्र को स्वणं, चांदी अथवा तांवे के पत्र पर खुदवालें। फिर एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी बस्त्र विछाकर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। तहुयरात्त यन्त्र के ऊपर श्री शीतलनाथ तीर्यंकर की मूर्ति स्थापित कर, पत्न्यामृत-अभिषेक से यन्त्र को पूजा कर, १०८ पुष्पी द्वारा पूर्वोक्त श्री शोतलनाथ तीर्यंकर के अनाहत-मन्त्र का, किसी शुभ दिन मे प्रात काल १०० वार जप करें। प्ररोक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जायें। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय उक्त मन्त्र से १०० बार अभिमन्त्रित जल द्वारा मुख प्रकालन करने से सब प्रकार की पिशाच-वृत्ति का भय नष्ट होता है।



श्री श्रेयांसनाथ तीर्थकर अनाहत चतुष्पद-रक्षण मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री श्रेयासनाथ तीर्थकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रमोग से सब प्रकार के चतुष्पदो (चौपायो) की रक्षा होती है।

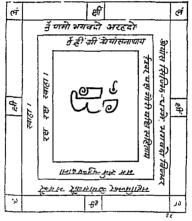
मन्त्र—"ॐ णमी भगवदी अरहदी श्रेयास सिन्ति-धन्मे भगवदी विज्तर महाविज्तर श्रेयास कर भयंकर स्वाहा ।"

सायत-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदक्षित चित्र (सख्या ११) के यन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा तांवे के पत्र पर खुदवातें। फिर किसी शुभे दिन में प्रात कात एक तकडों की चौकी पर रेशमी बस्त्र विछान रे उस पर यन्त्र को स्वर्ण प्रकार की प्रवासनाथ को स्वरूप की अपरासनाथ सीर्थकर की मूर्ति स्थापित कर, पत्र्यापृत-अभिषेक से यन्त्र की पूजा नर, १०८ पुष्पो द्वारा पूर्वोचत श्री श्रेयासनाथ तीर्थकर की सुर्ति स्थापित कर, पत्र्यापृत-अभिषेक से यन्त्र की पूजा नर, १०८ पुष्पो द्वारा पूर्वोचत श्री श्रेयासनाथ तीथकर के अनाहत मन्त्र पर

१०८ वार जप करे। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्जि के समीप रखते चले जाये। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि-आवश्यकता के समय उक्त मन्त्र का १०८ बार जप

करने से चतुष्पदो (चौपाये जानवरो) की रक्षा होती है।



१२. श्री वासुपूज्यनाथ तीर्थंकर अनाहत सर्वकार्य सिद्धि मन्त्र-यन्त्र

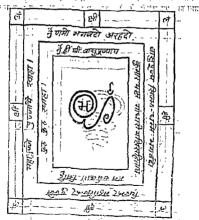
निम्नलिखित मन्त्र थो वासुपूज्यनाथ तीर्थकरका अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सब कार्य सिद्ध होते है।

मन्त्र—" ॐ णमी भगवदो अरहदो वासुपूज्य सिज्स धम्मे भगवदो विज्ञार महाविज्ञार पुज्जे महापुज्जे पुज्जायै स्वाहा ।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदक्षित चित्र (सख्या १२) के यन्त्र को स्वर्ण, चांदी अथवा तांवे के पत्र पर खुदवाले । फिर किसी शुभ दिन मे

प्रातःकाल एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी बस्त्र विद्यावर, उस पर यन्त्र को रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें।:तद्वरान्त पन्त्र के अन्य थ्रो वासुगुज्यनाथ तीर्थकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर, १०= पुष्पों द्वारा पूर्वोक्त थी वासुपुज्यनाथ तीर्थकर के अनाहत मन्त्र का १०६ बार जर करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पूर्ण मृति के समीप रखते चले जीय । इस विधि से मन्त्रे सिद्ध हो जायेगा । प्रितास स्थित करें कर कर है कि स

प्रयोग-विधि--ऑवर्यकेता के समित्र इस मेर्स्स का हेर्य में ही सब कार्य सिद्ध होते हैं।



१३. श्री विमलनाथ तीर्थंकर अनाहत तुष्टि-पुष्टि दायक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र थी विमलनाथ तीर्यकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग मे मब प्रकार की पुष्टि-तुष्टि प्राप्त होता है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो विमलस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्ञार महाविज्ञार अमले विमले कमले निम्मले स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आग प्रदर्शित चि⊤(मटमा १३) के मन्त्र को स्वर्ण, चौर्टा अथवा तौबे के पत्र पर ग्युदबाले । फिर, किसी शुभ दिन में प्रातकाल एक लकडी वी चौकी पर रेजमी बन्त्र विछाकर, उस पर सन्त्र



नी रखबर प्राण प्रतिष्ठा वर । तदुपरान्त बन्त्र के ऊपर श्री विमलनाथ तीर्थकर की मृति स्थापित वर, पञ्चामृत-अभिवेव से यन्त्र की पूजा कर, १० मुण्यों द्वारा पूर्वोक्त श्री विमलनाय तीर्यकर के अनाहत मन्द्रकी. १० स्वार अप करें। प्रत्येक मन्द्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जांग। इस विधि से मन्द्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि--आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार जप करने से तुष्टि और पुष्टि प्राप्त होती है।

१४. श्री अनन्तनाथ तीर्थकर अनाहत सर्व सौहयदायक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र था अनन्तनाथ तीर्यकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सब प्रकार के इन्द्रियजनित मुख प्राप्त होते हैं तथा परम्परा से मोक्ष भी मिनती है।

मन्त्र—''ॐ णमो मगवदो अरहदो अणंत सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झार महाविज्झर अणंते अणंतणाणे अणंत केवल णणे अणंत केवल दंसणे अणु पुज्जवासणे अणंतागम कैवलियै स्वाहा 1"

सायन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रदिश्ति चित्र (संख्या १४) के मन्य को स्वर्ण, याँदी अथवा ताँवे के पत्र पर खुदवाले। फिर, किसी शुम दिन में प्रातःकाल एक नकड़ी की चौकी पर रेखमी धस्त्र विछाकर, उस पर यन्त्र को एकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री अनन्त-नाय तार्चनः की मूर्ति स्वापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र को पूजा कर घरेतवर्ण के १०६ दुग्यो द्वारा पूषांक्त श्री अनन्तनाय तीर्थकर के अनाहत मन्त्र का १०६ दुग्यो द्वारा पुष्कांकत श्री अनन्तनाय तीर्थकर के अनाहत मन्त्र का १०६ दार अप करें। प्रत्येक मन्द्र-चप के साथ एक-एक पुण्य मूर्ति के समीप रखते चले जाँव। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि--आवश्यकता के समय इस मन्त्र का जब करने से सब प्रकार के इन्द्रियजनित सुख प्राप्त होते हैं तथा प्रतिदिन जब करते रहने से मोक्ष भी मिलता है।



अयस कबे हे पर पर्युपर्याते । फिर. ि

ाप्र.च्श्रीव्यर्मनाय**ंतीर्थकर**ा

अनाहत सर्ववंशीकरण मन्त्र-यन्त्र १ म हर्गाः ११-१६१६-२१ - एक हर्गाः व होस

ानिस्निवित मन्त्र श्री, धर्मनाथ तीर्थकरान्त्रत अनाहत मन्त्र हैः। इसके प्रयोग से सब लोगो₁का,वशीक्ष्रण होत्। है । । ००० । ८००००।

भन्त्र-रिश्क निमानक्षेत्रवेदी अरहदो विस्मरस सिस्त-धिमी शावेदो विकार महाविज्ञार , धम्मे सुध्मेन धम्माई झा-सुद्देन्भवे-धम्मे अंगमे मं-मेबु अपिदि देनमे स्वाहा विकास है किर रूपर एक् एक्टीका राज्य

साधन-विधि—मर्दप्रथम आगे प्रदक्षित चित्र (संर्ट्यो र्र्थ) के यन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अथवा तांवे के पत्र पर खुदवालें । फिर, किसी क्रुभ दिन मे प्रात काल एक लक्ष्वों की चौकी पूर रेणुंगी बहुत विछाकर, उस पर पन्न को रखकर प्राण प्रतिष्ठा कार ! तहुपरान्त पुन्न के ऊपर थी धमनाथ तीर्थकर की मूर्ति रथापित कर, पञ्चामृत अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर १० पुन पुणा द्वारा पूर्वोच्व भी धमनाय तीर्थकर के अनाहत यन्त्र का १० प्रवास जप कर। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक एक पुण्य मूर्ति के समीप रखते चले जाँग। इस विधि से मन्त्र सिंद हो जीर्थिगा।

प्रयोग-विधि - आवश्यकर्ता वे समय इस मृत्ये द्वारा १०० वार अभिमन्त्रित ताम्बूत (पान) जिस व्यक्ति की खिला दिया जायेगा, वह विषोग्नत हो जायेगा।



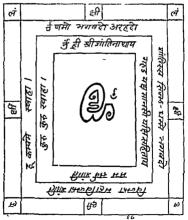
१६. श्री शान्तिनाथ तीर्थकर अनाहत सर्वशान्तिकरण मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री शान्तिनाथ तीर्थकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सब उपद्रव शान्त होते है।

मन्त्र--- "ॐ णमो भगवदो अरहदो शान्तिस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो

विज्ञा महाविज्ञा शान्तिहकम्पमे स्वाहा ।"

साधन-विधि-सर्वप्रथम आगे प्रदिशत चित्र (सध्या १६) के यन्त्र को स्वर्ण, चीदी अथवा ताबे के पत्र पर खुदवाले । फिर, किसी ग्रुम दिन में प्रात काल एक लकड़ी की चौकी पर रेशमी वस्त्र विछाकर, उस पर यन्त्र



को रखकर प्राण-त्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री शान्तिनाथ तीर्पकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर, १०८ पुष्पो द्वारा पूर्वोक्त श्री शान्तिनाथ तीर्थकर के अनाहत मन्त्र का १०८ बार जप करें। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प सूर्ति के समीप रखते चले जाँव। इस विधि मे मन्त्र सिद्ध हो जावेगा।

प्रयोग-विधि-आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार जप

करने से सब प्रकार के उपद्रव णान्त होते हैं।

१७. श्री कुन्युनाय तीर्थकर

अनाहत मत्कृणादि उपद्रवनाशक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री कुन्युनाथ तीर्यकर का बनाहन मन्त्र है। इसके प्रयोग में सब प्रकार के वृश्चिक, मिलका, मस्कुण (मच्छर) आदि के उपद्रव नष्ट हो जाने हैं।

मन्त्र-"ॐ गमी भगवदो अरहदो कुन्युस्स सिज्झ-धम्म भगवदो

विज्ञार महाविज्ञार कुन्यु कुन्यु के कृत्युशे स्वाहा ।"

साधन-विधि-सर्वप्रथम आगे प्रदिश्वत चित्र (संख्या १७) के यन्त्र

	1-1-14 (1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-	(0)
लं	¢θ	लं
g.f.	के तथा मार्थ कर	eθ
W	fl3	'n

की स्वर्ध, चौदी अवदा तांवे के पत्र पर पुरसन। फिर मिसी हुम दिन में प्रात काल एक तन ही नी चौची तर रेशमी वस्त्र विछाकर, उस पर यन्त्र को रख हर प्राण-प्रतिच्छा करे। तदुरतान यन्त्र के उत्तर भी दुन्युनाथ तीर्यकर वी मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामुल-अभिषेक संगहत प्रत्य की पूजा कर, १०८ पुष्पी हारा पूर्वान्त भी कुन्युनाथ तीर्थकर के सनाहत मन्त्र का १०८ बार जप करे। प्रत्येक मन्त्र जप ने साथ एक एक पुष्प भूति के समीप ग्खते चल जीय। इस निधि सं मृत्र सिद्ध ही जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यक्ता क समय इस मन्त्र का १०६ बार जप परने से विच्छू, मुगुमब्बी, मच्छर, खटग्रल, डांस आदि जीवो के उपद्रव नष्ट हो जाते हैं।

१८. श्री अरहनाय तीर्थकर

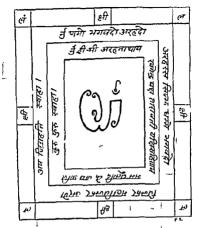
ानाहत चल-विजयप्रद मन्त्र-यन्त्र

निम्निलिखत मन्त्र श्री अरहनाय तीर्थकर की अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग में बूल-फोडा (जुए) में जीत होती है।

मन्त्र-- "ॐ णमो-भगवदो अरहदो अरहस्स तिज्ञ-धम्मे भगवदो विज्ञार महाविज्ञार अरणे अप जिग्रहति स्वाहा।"

साधन-विधि—सर्वप्रथम आगे प्रवृत्तित चित्र (सक्ता १ १०) के बन्त्र को स्वणं, चादी अथवा तावे के पत्र पर खुदवालें । फिर किसी शुभ दिन में प्रात काल एक सकती की चीनी पर रेक्षमी बस्त्र बिछाकर, अस पर बन्त को स्वणर प्राण-प्रतिष्ठा वर । तदुपराना सन्त्र के ऊपर थी अरहनाथ सीपंकर की मूला रिया हा कर, १००० पुणा हारा पूर्वोक्तन थी अरहनाथ सीपंकर के जनाहत मन्त्र का १००० बार जप करें। प्रयोक मन्त्र कर के साथ एक एव पूप्प पूर्ति के समीर रखते चने जीय । इन विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—जावश्यवता वे समय इस मन्त्र का १०५ बार जप पत्न से यूत कीडा (जुए) आदि मे जीत होती है।



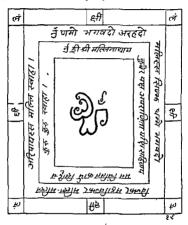
९६. श्री मल्लिनाय तीर्यंकर । अनाहत चिन्तित कार्यसिद्विष्टद मन्त्र-यन्त्र

निम्नतिधिन मन्य यो मितनगय तीर्यंगर का जनाहत मन्य है। इसने ध्योग ते चिनित वार्य तो सिद्धि होती है।

म न-- ' अ पामो मगवदो अरहदो मिलस्स सिन्स धम्मे भगवदो विरुगर महाविज्ञार महिन महिल अरिपायस्स महिल स्वाहा।"

सायत विधि—सर्वप्रभन आगे प्रदिश्ति चित्र (सन्तर्ग १६) ने यन्त्र मो स्वर्ण, चौदो अयवा तथि ने पत्र चर युद्धान । पिर, निसी शुम दिन मे प्राप्तरात्र एनं सन्दर्श नो चौको पर रेगमी वस्त्र बिटानर, उस पर यन्त्र मो रखनर प्राण प्रतिष्ठा नरें। तहुषराना यन्त्र ने कार हो मन्तिनाम तीयसर नो मृति स्थापित कर, पञ्चामृत अभिषेत संयन्त्र मी पूजा कर, १०८ पुष्पो द्वारा पूर्वोक्त श्री मस्तिनाथ तोर्थकर के अनाहत मन्त्र का १०८ बार जप करे। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जाँग। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १० म्र बार जप करने से चिन्तित कार्यकी सिद्धि होती है।

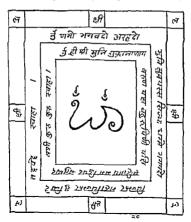


२०. श्री मुनिसुत्रतनाय तीर्यंकर अनाहत वशीकरण मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री मुनिसुब्रतनाथ तीर्यंकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से द्विपद तथा चतुष्पद वशीभूत होते हैं।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो पुनिमुखयस्त सिग्झ-धम्मे भगवदो विग्रहर महाविग्हर सुभ्यिदेतहयहे स्वाहा।" साधन-विधि—सर्वप्रयम आगे प्रदक्षित चित्र (सख्या २०) के यन्त्र को स्वणं, चौदी अथवा तांवे के पत्र पर खुदवाले । फिर किसी शुभ दिन में प्रात काल एक सकती को चौकी पर रेशमी बन्न बिछाकर, उस पर यन्त्र को एकतर प्राण-प्रतिक्छा करें । तदुवरान्त यन्त्र वे ऊपर श्री मुनिसुत्रतनाय तीर्यकर को मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषक से यन्त्र की पूजा कर, पञ्च प्रति के साम एक एक स्वात प्रति के साम एक प्रति के साम एक प्रति के सम्त्र-जप के साम एक-एक पुष्प मूर्ति के समीप रखते चले जाय । इस विधि से मन्त्र निद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का स्मरण करने मात्र से ही द्विपद (मनुष्य) तथा चतुष्पद (पद्मु) बंशीभृत हो जाते हैं।



२१ श्री निमनाय तीर्यंकर

अनाहत मर्बवशीकरण मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र था नामनाथ तायकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से सब लोग वशीभूत हो जात हैं।

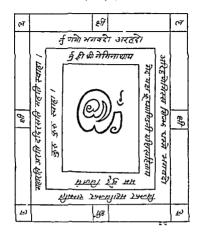
मन्त्र-- "ॐ णमी भगवदी अरत्दो णिमस्त सिन्झ धम्मे भगवदी विज्ञार गहाविज्ञार णीम पाम स्वाहा ।"

साधन विधि—संबन्नश्रम आग प्रदर्शित चित्र (सच्या २१) ने यन्त्र को स्वण चौदी अथवा तीवे ने २२ पर छदयार्ते । फिर, किसी शुभ दिन म प्रात काल एक सक्टा की चौकी पर रणमी यस्त्र विश्वाचर, उस पर यस्त्र



को रखकर, प्राण-प्रतिष्ठा करे।-तदुवरान्त-यन्त्र के-ऊपर-श्री-नृमिनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र की पूर्णा कर, १०= पूष्पो द्वारा पूर्वाक्त थीं निमनाथ तीर्थंकर के अनाहत मन्त्र का १०= बार जप करे। प्रत्येक मन्त्र-जप के साथ एक-एक पुष्प-मृति के समीप रखते चले जाय॥ इस विधि ने मन्त्र मिद्ध हो जायेगा। प्रयोग-विधि इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित पूष्प अथवी ताम्बल जिस व्यक्ति को है दिया जायेगा अह सदैव वश् मे बना रहेगा है २२. श्री नेमिनाय तीर्थकर अनाहत् युद्ध विजयप्रदे मन्त्र-यन्त्र रे निम्मलिखित मेर्न थी नेमिनाथ तीर्थकर का अनाहत इसके प्रयोग से युद्ध में विजय प्राप्त होगी है। मन्त्र- "क णमो भगवदी अरहदो अरहू णेमिस सिरझ-धम्मे

भगवदो विज्ञार, महाविज्ञार सम्मति महारति अरति ददिरसित महित स्वाहा ।"।



२३. श्री पार्श्वनाय तीर्यंकर

अनाहत आरोग्यता दायक मन्त्र-यन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र श्री पाश्वेनाथ तीर्थकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से आरोग्य लाभ होता है।

मन्त्र—"ॐ णमो भगवदो अरहदो उरगकुल जासु पासु सिज्झ-धन्मे भगवदो विज्ञार बुग्गे महाबुग्गे से पासै संमास सिनिगितोदि स्वाहा ।"

साधन-विधि—सर्वप्रयम आगे प्रदर्शित चित्र (संख्या २३) के यन्त्र को स्वर्ण, चौदी अयवा तिबे के पत्र पर जुदवासें। किर, किसी शुन दिन ने प्रातःकाल एक लक्कडी की चौकी पर रैजामी वस्त्र विछाकर, उस पर नन्त्र को एककर, प्राण-प्रतिष्ठा करें। तहुपरान्त यन्त्र के ऊपर श्री पार्यन्ता नाष तीर्षकर की मूर्ति स्थापित कर, पञ्चामृत-अभिषेक से यन्त्र की पूजा कर, १०८ पुष्पो द्वारा पूर्वोक्त श्रीपाक्ष्तेनाध तीर्घकर के अनाहत मन्त्र का १०८ बार जप करें । प्रत्येक मन्त्र के जप के साथ एक-एक पूप्प मूर्ति के समीप रखते चले जाँय । इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा ।

प्रयोग-विधि---आवश्यकता वे समय इस मन्त्र द्वारा पूष्प अयव। ताम्बूल अभिमन्त्रित कर, किसी रोगी व्यक्ति को देने से उसे आरोग्यता प्राप्त होती है।



२४. श्री महावीर तीर्थंकर अनाहत युद्ध विजयप्रद यन्त्र-मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र थी महावीर तीर्यकर का अनाहत मन्त्र है। इसके प्रयोग से युद्ध में विजय प्राप्त होती है।

भ्रत्य — "ॐ णमो भगववो अरहरो सहित महावोर बद्दवमाण बुद्धस्स अणाहत विज्ञाद सिज्स धम्मै भगवदो महाविज्ञ महाविज्ञ बीर महावीर त्रिरिसणमविज्ञोर जयतां अपराजिते स्वाहा ।" साधन-विधि—सर्वप्रथम आग प्रदाणत चित्र (सत्या २४) के प्रन्त्र को स्वर्ण, चाँदी अववा तिये के १२ पर खुदबातें। फिर, किसी गुण दिन में प्रात काल एक सवाड़ी की चौकी पर रेगमी वस्त्र विछांकर, उस पर प्रमान की रखकर, प्राण-प्रतिच्छा करें। तहुवरास्त पत्र के कार, श्री-महावीर तीर्यकर की मृति स्थापित कर, पटचामृत-अभिषेव से यन्त्र की पूजा कर, एट- पुष्पो द्वारा पूर्वोक्त श्री महाचीर तीर्यकर के अनाहत गमन का रुट- बार जप करें। प्रदेशक मनत्र के जप के साथ एर-एक पुष्प मृति के समीप रखते चले जांग। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—आवश्यकता के सभय इस मन्त्रें को जपने से युद्ध भूमि में युद्ध करने को आया हुआ शत्रु साधक के अधीन हो जाता है तथा शत्रु-मेना पर बिजय प्राप्त होती है।



यन्त्र प्राण-प्रतिष्ठा मन्त्र

पीछे जिन चौबीस यन्त्रों का वर्णन किया गया है, उनकी प्राण-प्रतिष्ठा का मन्द्र निम्नानुसार है—

सन्त्र—"ॐ कीं हों असि जाउसा थ र ल रा स व स ह अमुख्य प्राण इह प्राण अमुख्य जीवा इहस्थिता अमुख्य यन्त्र, सन्त्र, तन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि काय बाड् मन् चक्षु श्रोत्र प्राण प्राणं देवदत्तस्य इहैवायन्तु अहं अत्र सुखं चिरंतिरुठंतु स्वाहा ।"

आवश्यक टिप्पणी--(१) उनत मन्त्र मे जहाँ-जहां 'अमुष्य' शब्द का प्रयोग हुआ है, यहाँ-वहां जिन तीर्थकर का यन्त्र हो, उनके नाम का उच्चारण करना चाहिए और जहां 'दिवदत्तस्य' शब्द आया है, वहां साधक को आवश्यकतानुमार अपने अथवा साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

(२) यह प्राण-प्रतिष्ठा मन्त्र पूर्वोक्त २४ तीर्यकरो के यन्त्रो की प्राण-प्रतिष्ठा के सिए तो है ही, आगे वींगत नापार्जुन यन्त्र की प्राण-प्रतिष्ठा भी इसी भन्त्र के द्वारा को जाती है।

तीर्थंकर बिम्ब (मूर्ति) के नीचे स्थापना करने का मन्त्र

>४ तीर्थकरो की मूर्ति को स्थापित करते समय निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करना चंग्हिए—

"ॐ णमो भगवदो अस्ट्टर्णिमस्त अस्ट्ट्रेण बंधेग बंधवामि रक्क सोगं भूगां लैयरानं डाइगीन चौराग साइगीगं महोरवागं जेवनेवि हुट्ठा संभवित तेति सन्वीन भगो मुह् गईविट्ठि वधण वंधानि धणु धणु महाधणु महाधणु ज. जः जः ठः ठ. ठः वयद् घे घे हूं फट् स्वाहा।"

नागार्जुन चन्त्र-विद्यान

नागार्जुन यन्त्र के बार स्वरूप आगे दिव गये हैं। इनमें से जिस स्वरूप को भी चाहे, उसे सोना, चांदी जयवा क्षत्रि के पत्र पर खुदवानें। फिर किसी शुप्त दिन पात कान एक लककों को बौकी पर रेशमी वस्त्र विद्याकर, उसके उपर पन्त्र को रक्खे तथा पूर्वोक्त विधि से यन्त्र की प्राप्त प्रतिद्या है। तदुपरान्त पत्र के उपर पार्य्वनाम प्रभु को मूर्ति स्थापित करके पहले पचामृत से अभिषंक करें, फिर अष्ट देव्यो से तीचे लिखे अनुसार प्रभु को सूर्ति स्थापित

सर्वप्रथम निम्मलिखित मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए—

"अ जीक्तानां जुटु जीक्तन नामाः जीक्त स्मादको ।"

यो नामार्जुन यंत्रं यजते कि कुर्वेते हि तस्य बचनामाः ।"

इमके उपरान्त निम्मलिखित मन्त्र का उच्चारण करे—

मन्त्र—"अ हां हीं हुं हीं हुः झं यं हि यः हः व क्षी प देवदत्तस्य

सर्वोपद्रव शान्ति कुरु कुरु स्वाहा पारिए प्रभवे निवंपासि स्वाहा ।"

टिप्पणी—उक्त मन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' भव्द आया है, वहाँ साधक को अपने नाम का उच्चारण करना चाहिए।

इसके उपरान्त कमशः निम्नतिखित मन्त्रो का उज्जारण करते हुए पूजा द्रव्य समर्पित करने चाहिए।

गन्ध का मन्त्र

"चन्द्रप्रभ शोभागुणयुक्त्ये । चंदन के चन्द्रन रविभिन्ने । यो नागार्जुन यंत्रं पजते कि कुर्वते हि तस्य बचनागाः।"

ॐ हां हीं हूं हीं हः। गंधं मुन्पंयानि।

यह कहते हुए 'गर्र' समर्थित करे।

अक्षत का सन्त्र

"अक्षत पुंजी जिनवर पद पंकजा मुक्ति पुंजीरिय विरंजी यजते। यो नागार्जुन यत्र यजते कि कुवेते हि तस्य वचनायाः।" (戈()

ॐ हा हों हूं हाँ हः। अक्षतान् समर्पयामि।

यह कहते हुए 'अक्षत (चावल) समर्पित करे।

पुष्प का मन्त्र

"पुष्पै कित कुल किल सद्यः। भव्यै चंपक जातिकैः। यो नागार्जुन यंत्रं यजते कि कुवेते हि तस्य वचनागाः।"

> ब्द्र हों हों हूं हों हः। पुष्प समर्पवामि ।

यह कहते हुए 'पुष्प' समर्पित करे ।

चर का मन्त्र

"हब्ये हर्ष करें रसनाना। नानाविध प्रिय मोदकादीना। यो नागार्जुन यंत्रं यजते कि कुर्वते हि तस्य बचनागाः।"

> ॐ हां हीं ह्रं हीं हः॥ चन्नमर्पयामि।

यह कहते हुए चरु (अनेक प्रकार के मिप्टाक्ष) सर्मापत करे।

दीप का मन्त्र

"दोपेदिप्रकरैबेरेबुढ़ें । दीह कर्मीय माकवि खंडे । यो नागार्जुन यंत्रं यजते कि कुबेते हि तस्य वचनागाः।"

> ॐ हां हों ह्रूं ही हः। दीपं प्रदर्शयामि।

यह **र**ूने हुए 'दीनक' प्रदर्शित करें ।

ध्रुप का मन्त्र

"धोर्यधेरिजकंदलैश्च ब्राण ब्रीणनकं परमार्थे । यो नागार्जुन यंत्र यजते कि कुवेते हि तस्य यचनागाः ।

> ॐ हां हीं हुं हों हाः। धूपं आझावामि ।

यह कहते हुए 'धूप' दे।

फल का मन्त्र

"चोचक मोचक चौतक पुर्ग । रामलकार्द्यगाँध फलेश्च । यो नागार्जुन षंत्र पजते कि कर्वते हि तस्य वचनागा ।"

> ॐ हा ही हूं ही हा। फल समर्पयानि ।

यह बहत हुए 'फल' सम्मित कर।

अर्ध्यं का मन्त्र

"अम्बुरचन्दन शालिज पुष्पेहृंद्येः दीपक छूप फलाखे । यो नागार्जुन यत्रं यजते कि कुर्वते हि तस्य यचनागाः ।"

ॐ हा हों ह्यूं हीं ह

गह कहते हुए 'अर्घ्यं' समर्पित करें।

जन्त बि.र. से अप्ट इंब्स समर्थित करने निम्नलिखित मन्त्र का जन्नारण करे। इस मन्त्र ने अन्तिम भक्क में जहा चित्रता शब्द आया है। नहीं साध्य-व्यक्ति वे नाम हा जन्नारण करना चाहिए

"दुट्टच्याला करामृतये पतिरनिश्च त न ने कि करोति । योद्या यत्रमेनं प्रवर गुणगुत युजयेन पतिद्धिः ॥ गाकिच्याद्य प्रयोक्षा प्रहृकृत सकलानि क्षणान् मक्षपन्ति । श्री मत्त्र्वनागमेन प्रकट मति प्रोचतमेव विद च ॥ ॐ हा हीं ह्यू ही हा अति आउसाय स्वाहा प ज्वीक्षीं निलस अमुकस्म देयदसस्य श्रीक्वाटन वृद कृद क्षेम स्वाहा ।"

उसने पत्रशान पार्श्वनाथ स्त्रोत आदि पानर पान्दनाथ पूजा की जगमाला पदनी चाहिए। तदुपरान्त विसर्जन नरा धरणन्द्र पद्मावती की पीडवागिचार विशिष्टों रोगने ने गह कन्त्र मिल्होता है।

		(}					
	.₩3	HZ	,µ	.	48	#2	رىمىز	37.6	
	47:	াচ	स्या		61	3.5	Ęġ.		
	n R	ķ	38,	I	80	.13	4a		€
	3	h	30		20	Ġ	ĘĘ.		सख्या २)
	\$	311	b	1	स्थ	144	£3		(नागाजुन यन्त्र,
	88	B	88	,	76	तिक	43	,	गमजु
	ઢ	33	2		₽ \$	lė	\$		ٿ
	#	3	34		4	Ę,	- E F:		
	क्षी:	ęf	et.	7	ęЯ	eft	علز		
`	a	:	.€	4	æ	TEE.	Æ	Ř	
-	+-	-+	-	├					

	φĐ	the state	25	88	Œ	9	3	36	तेक	48	(नागार्जु
	4	Ė	90	60	72	5 6	Ý	\$⊄	lici	科	E
	φî	hio	34	#	¥)	;	\$	P.	£F.	
	U _i	e97	eft.	क्षी:	ДĻ	g e	P	ęЯ	ęЯ	ij	
					_						
	ŀξw	TE	ſÆ	ھ	:	Ģ	-	Œ	Æ	Æ	ર્જે
i	1	h	4	16		Þ		#	B	₩.	
	P)	4	لفإذ	0		ıļr.		0	¥	æ	# ⊗
	b	٦	25	a	- 1	ν-		131	Ħ	44	त्र, संख
	Чvy	Þ	IE	4		4 P	T	8	IJ	Le	(नागार्जुन यन्त्र, संख्या १)
ĺ	hr	hэ	k	20		ιŊ		¢	Ą	Ø	(नागा
	341	lo)	#	Þ		ķ	1	p	JE.	ŀ'n	

15 M

.43

P

to to

ю

2A E 20:

eid	也	肿	سطا	P.S	Ë	369
ж	30	88	सा	2.0	36	#
H	20	RR	3	22	28	4
G	¥	सि	317	ਹ	सा	7£
эт	32	28	सि	20	38	₹er!
#	२८	28	आ	80	ξ	ar.
3T	J .	में	艾	मीं	मं	जर
						70

(नागार्जुन यन्त्र, संख्या ३)

₩.	刭	鲑	ΉĐ	a ,	<u>.</u>	Đ
લ	30	१६	.3.	٤٦	3£	iR
۵	80	88	.E	22	នន	办
ti.	انخ			13 .		
ч,	32	햳	Ē)`	20	રષ્ટ	4
4	2£	22	ĒΊ	80	٤	₩
<i>\theta</i>	371	अ	eri	37.	अं	Æ
						スモ

(नागार्जन यन्त्र, सख्या ४) रू: ०:--

नवग्रह यन्त्र चिन्तामणि

आगे दो प्रकार के नवग्रह यन्त्र दिये जा रहे हैं। इनमें से किसी यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर सुनान्धत द्रव्यों से विद्यकर, उसे भगवान पार्थनाथ की मूर्ति के सामने रखकर पूजन तथा आराधना करें। तदुपरान्त यन्त्र को कच्छ अथवा मुजा में धारण करें तो शुद्रग्रह दुष्ट अ्यन्तरादिक बीतते हैं और उनका दोष दूर हो जाता है।

₹	b	ε	3	ų	ę	€	R	7
3	¥	٤	£	8	τ	₹	6	Ę
£	8,	٦	۲	6	Ę	ηγ.	¥	٤
Ę	ર	9	٤	3	¥	۲	£	8
8	3	¥	7	£	g	ξ	2	G
72	£	В	Ę	२	G	٤	3	¥
0	E	2	я	٤	3	у	τ	£
٧	٤	3	R	٦.	£	6	Ę	₹
¥	7	£	6	Ę	2	ų	ę	3
	_				-			

25

					VERNIT C	and mare	-
र्ज	æ	己	க	ā.	巧	坏	尋
f#	1 के	Per	f _{er}	क्रि	Feir	file.	Æ.
स	₹₹	₽	₹₹	स	झ	4 7	₹₹
ā	ã	ã	ãĵ	ā	ब	ল	ब
a	ã	a	ã	đ	व	व	व
य	य	य	य	य	а	य	य
7	₹	₹	₹	Z	₹	₹	₹

(नवग्रह अन्त्र, सच्या २)

20

२ श्री कल्याण मन्दिर स्तोत्र मन्त्र-यन्त्र साधन

आवश्यक-जातव्य

'कत्याण मिन्दर स्तोत्र' यथार्थ मे मानव-कल्याण का मिन्दर ही है। जंन धर्म के दोनो सम्प्रदायो—दिगम्बर तथा वेताम्बर—मे इस स्तोत्र को समान रूप मे प्रतिष्ठा प्राप्त है। इस स्तोत्र का रचना-कास न्यारहवी शताब्दी का माना जाता है। दिगम्बर-सम्प्रदाय इसे आचार्य कुमुदचन्द्र की रचना तथा वेताम्बर-सम्प्रदाय श्री सिद्धसेन दिवाकर की कुति मानता है।

यह स्तोत्र क्ल्यन्त चमस्कारी तथा विभिन्न कामनाओं की पूर्ति फरने वाला है। केवल स्तोत्र मात्र का नित्य पाठ गरते रहने से सभी पाप क्षय होते हैं तथा सुख-कान्ति एव ऐक्वयाँदि की वृद्धि होती है। विभिन्न क्षममाओं की पूर्ति हेतु इस स्तोत्र के विभिन्न क्लोकों को विधिन्न ऋदि तथा मन्त्रों के साथ प्रयोग में लाया जाता है।

इस स्तोत की मन्त्र-साधना के अतिरिक्त यून्त्र-साधन को विधि मे योडी भिन्नता है। यन्त्र-साधना के ऋढि-मन्त्र भी पृथक्-पृथक् हैं। जत जो महानुभाव केवल मन्त्र-साधन करना चाहे, वे स्तोत्र के ग्लोको के नीचे उल्लिखित ऋढि-मन्त्र का उच्चारण करते हुए विधिपूर्वक मन्त्र-जप करें। मन्त्र-जप की समाप्ति पर 'विधि' के नीचे उल्लिखित 'उपसहार-वाक्य' का उच्चारण करना चाहिए।

जो महानुभाव इस स्तोत्र से सम्बन्धित यन्त्र-साधना करना चाहे,

उन्हे उचित है कि वे स्तोत्र वे इच्छित स्लोक को किसी मोटे तथा स्वच्छ कागज पर वडे-बडे अक्षरों में लिखकर मामने रखतें। फिर स्वर्ण, चौदी अधवा तीवे के पत्र पर खुदे हुए यन्त्र को अपने समीप रखकर, 'साधन-विधि' में उल्लिखित नियमानुसार यन्त्र-साधन करे।

कल्याण-मन्दिर स्तोत्र की मन्त्र अथवा यन्त्र साधना करते समय भगवान् श्रीपार्थनाथ स्वामी की मूर्ति को स्तोत्र-स्तोक के साथ अपने सम्मुख बीको पर स्वापित कर लेने ये साधक की सब प्रकार से रक्षा होती है। यद्यपि मन्त्र-यन्त्र साधन के समय मूर्ति को सम्मुख रखना आव-म्यक नही माना गया है, तथापि सर्वत्रथम मूर्ति को स्वापना कर. उसको पूजा-अर्ची करने के बाद ही यदि मन्त्र अथवा यन्त्र साधन किया जाय तो वह आत्मरक्षक एवं विशिष्ट फलदायक सिंद्ध होगा, इसमे सार्देष्ट नहीं।

अगले पूछों में कल्पाण मन्दिर स्तोत्र के मन्त्र एव सन्त्र-साधन की सचित्र विधियों त्रमंग दो गयी है। मन्त्र तथा बन्त्र-साधन के समय केवल ऋदि तथा मन्त्र को जपने की ही आवश्यकता होती है। प्रारम्भ में यदि सम्पूर्ण स्तोत्र का एक बार पाठ कर सिया जाय तो उत्तम रहेगा।

स्मरणीय है कि इस स्तोत्र के अनेक मन्त्र तथा यन्त्रो की साधना अलग-अलग कार्यों की सिद्धि के लिए की जाती है।

विवाद-विजय एवं अभीष्सित कार्य सिद्धिदायक सन्द्र-विकास

स्तोत्र-स्तोक--कस्याण मान्दर मुदारमबद्यभेवि भीतामयप्रवमिनित्तमङ्ग्रिपयम् । संसार-सागर निमज्ज दशेष कान्तु पोतायमानमित्रस्य किनेद्यस्य ॥१॥ यस्य स्वयं मुज्युक्तंरिमाम्बुराश्च स्तोत्रं मुख्यस्तृतमित्नीयामुंच्यानुम् । तीर्यस्यस्य कमठ स्मययुगकेतो स्तस्याहृतेय किन्न संस्तवनं करिच्ये ॥२॥

ऋदि—ॐ हों अहंगमो इहकज्जिसिदियराणं जिलाणं ॐ हों अहं-गमो वस्त्रंकराणं ओहिजिलाणं। मन्त्र - ॐ तमो भगवओ रिसहरस तस्स परिमिमित्तेण चरणपण्णति इन्देण गणामद यमेण उप्पाडिया जीहा कंठोठ्ठमुहतालुवा सोलिया जो मं मतद जो मं हतद उठ्ठिदठ्ठीए चर्जासिखताए अपुकस्य मणं हिपयं कोहं जीहा खोलिया सेलिखियाए स स स स ठः ठः ठः स्वाहा ।

टिप्पणी—उक्त मन्त्र में जहां 'अमुकस्य' शब्द आया है, यहां साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

विधि—उक्त मन्त्र का श्रद्धापूर्वक १०८ बार जप करने के बाद प्रतिवादी से बाद-विवाद करने में विजय प्राप्त होती है अर्थात् वाद-विवाद में प्रतिवादी पराजित होता है।

> अं हों कमठस्य य घूमकेतूपमाय श्री जिनाय नमः । यन्त्र-विद्यात



ऋद्धि—ॐ ही अहँणमी पासं पासं पासं फणं। ॐ हीं अहँ णमी दय्वंदराए।

भन्त्र—ॐ नमो भगवते अभीष्मितकार्यं सिद्धं कुरु कुरु स्वाहा । गुण—इस ऋद्धि मन्त्रं के प्रभाव से मनोभिलापित कार्यं सम्पन्न

होते हैं।

साधन-विधि — पर्वत के ऊपर पूर्व को ओर मुँह करके, साल रण के आसन पर लाल रग के रेजमी वस्त्र पिहन कर वैठे। हाथ म लाल रेजम की माला होनी चाहिए। ६० दिनो तक निरम १००८ वार श्रद्धापूर्वक ऋद्वि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम अग्नि में कपूर, कस्तूरी, चन्दन तथा जिलारस मिश्रिन धूप डाले। इस विधि से जब मन्त्र मिद्ध हो जाय तरवश्चात् उसे आवश्यकता के समय प्रयोग में साना चाहिए।

मन्त्र-जप करते समय स्वर्ण, चांदी अथवा ताम्र पत्र पर खुद हुए यन्त्र को अपने समीप हो रखना चाहिए।

~. o :-

वशीकरण कारक, जलयात्रा-भय निवारक

मन्त्र-विद्यान

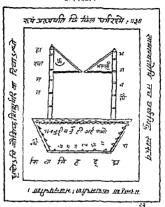
स्तोध-रलोक—सामन्यतोऽपि तव वर्षायितुं स्वरूप मस्माहशाः कथमधीश मयन्त्वधीगाः । धृद्योऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दियान्यो रूपं प्ररूपयति कि किल धर्मरस्मैः ॥३॥

ऋदि—ॐ हीं अहँणमो समुद्दभवसामणबुद्धीणं परमोहि जिजाणं। मन्त्र—ॐ हरक्तीं बगलामुखी देवी नित्य विसन्ने मदद्रवे मदनातुरे वषद् स्वाहा।

विधि--इस मन्त्र को पुष्य नक्षत्र के योग से जपना प्रारम्भ करके २१ दिन तक १२००० की सक्या में जपने से तीनो लोक वशोभूत होते हैं।

ॐ हों त्रैलोवयाधीशाय नमः।

क्रा-विधान



(स्तोत्र श्लोक सख्या ३)

ऋदि-ॐ हीं अर्हणमो समुद्द भव समन बुद्धीणं ।

मन्त्र-ॐ भगवत्ये पदाद्वहितदासिन्यं नमः स्वाहा ।

गुण---इस ऋदि-भन्त्र के प्रभाव से पानी का भय नही रहता तथा नदी-ममुद्र आदि में डगमगाता हुआ जलवान डूबने नही पाता।

साधन-विधि-किसी एकान्त स्थान में पश्चिम की और मुँह करके खेत बस्त सारण कर क्षेत्र आसन पर बेंट, लाल मूँगा की माला लेकर रथ दिना तक नित्य १००० बार ऋदि-मन्त्र का जय वर्षे तथा निर्धूम अस्ति में गुमुक्त करने तथा निर्धूम अस्ति में गुमुक्त करने हथा करें। यन्त्र को अपने समीप रखें। यन्त्र को अपने समीप रखें।

ज्यत विधि से जब मन्त्र सिंह हो जाय, तब आवश्यातानुसार जसका प्रयोग करना चाहिए।

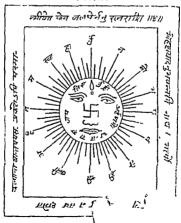
-- 0.-

गर्भपात एवं असमय निधन निवारक स्तोत्र क्लोज-मोहसवादनुमवद्यपि नाव मस्यों तूनं गुणानणयितुं न तव समेत । कल्पानवात्त्रवास्त्रवस्त्र स्वटोपि स्वस्त्र । स्वोवेत केत्र जसानेत्व राज्याणिः ।

स्मीयेत केन जलग्रेनंनु रत्नराशिः ॥४॥ व्यक्ति-अ हों अहंगा। अकातिमञ्जूबारणानं तस्वीहि जिलाण । मन्त्र-ॐ तमी मणवित ॐ हो भी वर्ती अहं नम स्वाहा । विधि-क्षम मन्त्र को ह वर्षा तक, प्रतिवय नगातार ४० रविवार

ावीध---इस मन्त्र का १ वर्षांतक, प्रीतवय लगातार ४० रोववार के दिन, प्रत्येक रीववार का २००० की सख्याम जयने में गर्भपान एव अकाल मण्यानहीं होता।

र्वे हों सर्ववीड़ानिवारकाय श्रीजिनाय नमः। यन्त्र-विद्यान



(स्तोत बतो र मध्या ४)

ऋदि--ॐ हीं अहं णमो धम्मराए जयतिए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते ह्यों श्रों वर्ली अर्ह नमः स्वाहा ।

गुण-इस मन्त्र के प्रभाव से असमय में गर्भरात तथा अकालमृत्यु का भय नहीं रहता तथा मन्त्रान चिरजीवी होती है।

साधन-विधि—िकसी एकान्त-स्थान मे पूर्वामिमुख हो, पीले रग फं आसन पर, पीले रंग के वस्त्र पहिन कर बैठे। कमलगट्टा की माला लेकर स्थिर चित्त हो. रिववार के दिन प्रात-काल १००० वार ऋदि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम अग्नि मे गुग्गुल, चन्दन, कपूर तथा घृत मिश्रित धूप का क्षेत्रण करे। यन्त्र को अपने समीप रक्षें।

उक्त बिधि में १ वर्षों तक, प्रति रविवार का व्रत रवखें तथा प्रतिवर्ष लगातार ४० रविवार के दिनों में उक्त ऋद्धि-मन्त्र का जप कर । एकाशन, भूमिशयन तथा ब्रह्मवर्ष का पालन करें ।

इस प्रकार जब मन्त्र-सिद्ध हो ज।य तब आवश्यक्तानुस।र प्रयोग मेलार्थे।

-: ∘ .--

चनलब-धन-घरशंक

स्तोत्र श्लोकः—अभ्युद्धतोऽस्मि तव नाय जडारायोऽपि कर्जुं स्तवं लत्तदसंस्यगुणाकरस्य बालोऽपि कि न निजवाहु पुगं वितत्य विस्तीर्णतां कययति स्वधियाम्बुरारीः ॥४॥

ऋदि—ॐ हों अहं णमो गोधणबुड्डिकराणं अणंतोहि निणाणं। मन्त्र—ॐ हों श्रीं वर्तो ब्लूं अहं नमः।

विधि—इस मन्त्र को नित्य श्रद्धापूर्वक १० ⊏ बार जपते रहने से खोये हुए पशुतया गुप्त धन का लाभ होता है।

ॐ हों सुखविधायकाय श्री पार्श्वनाथायनमः।

यन्त्र-विधान



(म्तोत्र श्लोक मध्या ५)

ऋद्धि-ॐ ह्रीं णमो धणबुड्ढि कराए।

मन्त्र—ॐ पश्चिने नमः।

गुण—इस मन्त्र के प्रभाव से चोरी गया हुआ धन, जमीन मे गढा

धन एव खोया हुआ धन प्राप्त होता है।

साधन-विधि—व्येत वस्त्र धारण कर. किसी एकान्त स्थान मे, भ्वेत-आसन पर, पद्मासन की स्थिति मे पूर्वीभिमुख बैठे तथा स्कटिक मणि की माला लेकर, ४६ दिनो तक नित्य १००० की सन्या मे ऋढि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धम-असि मे गुमगुल, कृदरु, कपूर, बन्त तथा इलायची मिश्रत धूप का क्षेपण करे। यन्त्र को अपने ममीप रक्खे।

उन्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्य प्रनानुसार प्रयोग

मे लायं।

बग्नीकरणकारक एवं सन्तान-सम्पत्ति प्रसाधक स्तोत्र श्लोक—ये योगिनामपिन यान्ति गुणास्तवेश वबतुं कथ भवति तेषु समावकाशः। जाता तदेव संसमीक्षित कारितेय कर्णाल्य या निक्षणिरा नन्नु पक्षिणोऽपि ॥६॥

ऋदि—ॐ हों बहुँपमी पुनहत्यिकराणं कीठठवृद्धीणं । सन्त्र--ॐनमी भगवति अम्बिक अम्बालिके यक्षीदेवि यूँ यौँ ब्लं हस्वलीं क्लं हर्तों रः रः रः रां रां हथ्दिमत्यक्षम् सम अमुकस्य वश्य कृठकुरु स्वाहा ।

हल हुसा र: र: र: र: रा राहाब्दप्रत्यक्षम् मस अमुकस्य वश्य कुरु कुरु स्वाहा । टिप्पणी—अक्त मन्त्र मे जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ साध्य-

व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

विधि—इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए २१ बार स्तुअन (दाँतौन) को अभिमन्त्रित कर, उसी से दाँतो को स्वच्छ करे, तत्पश्चान् २१ बार इसी मन्त्र का पुनः श्रद्धापूर्वक जप करने से अभिस्तिपत-स्वत्रित वशीभूत होता है। ॐ हों अव्यक्तगुणाव श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान



ऋदि—ॐ हीं अहं गमी पुतहरिय कराए। मन्त्र—ॐ नभी भगवते हीं श्रीं वो बीं को श्रीं श्रीं हीं नमः। गण—इसके प्रभाव से धन नथा बन्तान की प्राप्ति होती है।

पुण-स्वक प्रवाद व व निर्मात क्यान में हरे रह के आसन पर, साधन-विधि-किसी एकान्त स्थान में हरे रह के आसन पर, दिला की ओर मुंह करके बैठे। पश्चों ज (कमलगट्टा) का माला हाथ में लेकर ४० दिनो तक, नित्त १००० की सध्या में श्रद्धापूर्वक ऋदि-मन्त्र का जप कने तथा निर्धम अभिन में मिरी, गुग्गुल, लौत तथा चन्द्रन मिश्रित धूप का क्षेत्रण करें। बन्द्र को अपने समीप रक्खे।

उक्त विधि से मन्त्र जब सिद्ध हो जाय, तब आवृश्यकतानुसार उसे प्रयोग में नाये।

चोर-मर्पाट भय निवारक एवं आकर्षण कारक

स्तोत्र क्लोक- आस्तामधिन्त्य महिमा जिन संस्तवस्ते नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति तोब्रातपोपहतपान्थजनान् निदाघे प्रोणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥७॥

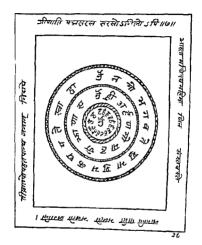
ऋद्धि—ॐ ह्रीं अहंगमो अभिठ्ठसाधयाणं बीजबुद्धोणं ।

मन्त्र—ॐ नमी भगवजी अरिठ्डणेमिस्त संग्रेण बंधामिस्वलसाणं भूयाण लेयराणं चोराणं वाडाणं साईणोण महोरगाणं अण्णे जेवि दुठ्ठा संभवन्ति तींस सस्वीति मणं पुह गहं दिह्ठी बधानि धणु धणु महाधणु जः जः जः ठः ठः हुं छट् स्वाहा।

विधि—सधन वन-मार्ग में चलते समय कोई भय उत्पन्न होने पर, इस मन्त्र द्वारा कुछ ककड़ो को अभिमन्त्रित कर, चारो दिशाओं में फॅक देने से चोर, सिंह, सर्प आदि का भय दूर हो जाता है!

ॐ ह्रीं भवाटबीनिवारकाय श्रीजिनाय समः।

यन्त्र विद्यान



(स्तो : म्लोक सझ्या ७)

श्रुद्धि—ॐ हों अहं धना माहणे झाणाए।

मन्त्र—ॐ नमी भगवते शभागम क्रविके क्वाउन .

,

सायन-विधि-किसी एकान्त स्थान में रात्रि के समय गेरुआ रंग के आसन पर, नैऋत्य कोण को ओर मुँह करके बैठें तथा लाल मूँगे की माला पर, एकाग्रचित्त से २० दिनो तक, नित्य १००० दार ऋदि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धुम-अग्नि में गुग्गुल, सीवान, चन्दन एवं प्रियंगुलता मिश्रित धूप का क्षेपण करें। यन्त्र को अपने समीप रखे।

उन्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यक्तानुसार उसे प्रयोग में लाये!

-: 0 :--

सर्प-दंश एवं कृपितोपरंश विनाशक

स्तोष श्लोक-स्हर्दातीन त्यिय विभो शिथिलो भवन्ति जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मवन्धाः । सद्यो भूजङ्गममया इव मध्यमाग मध्यागते वनशिखण्डिन चरतस्य ॥॥॥

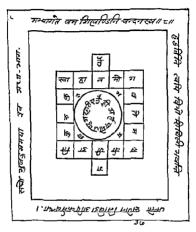
ऋदि-ॐ हीं अहं णमी उण्हगदहारीणं पादाणुसारीण ।

मन्त्र--ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथतीर्थङ्कराय हंसः महाहंसः पद्यहसः शिवहंसः कोपहंसः उरगेशहसः पक्षि महाविषभक्षि हुँ फट् स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र को तिस्य १०६ बार जपकर मिद्ध करले। बाद में मर्प-दिशात आदमी पर इस मन्त्र का झाटा देने से उनका विष उतर जाता है।

ॐ हीं कर्माहिबंधमोचनाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र- विद्यान



(स्तोत्र क्लोक संख्या ८)

ऋदि—ॐ हीं वहं धमो उण्हां गवहाराए ।

मन्त्र-- नमो भगवते मम सर्वाङ्गपोडा गान्ति कुरु कुर स्वाहा ।

गुण—इसके प्रभाव से १८ प्रकार के उपदश, पित्त ज्वर तथा सब प्रकार को उष्णता मान्त होती है।

साधन-विधि--- किसी एकान्त स्थान मे कुश के आसन पर ईशान कोण की ओर मुँह करके बैठें तथा चौदी को माला लेकर स्थिर वित्त हो, १४ दिनो तक नित्य १००० की संख्या मे ऋदि-मन्त्र का अप करें तथा निर्मूम अग्नि मे गुग्गुल, कुन्दुरू एव खेतचन्दन मिश्रित धूप का निक्षेप करें । यन्त्र को अपने समीप रक्खें ।

जक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार े प्रयोग मे लाये।

उपद्रय-नाशक एवं सर्प-त्रश्चिक विध-नाशक

स्तोत्र क्लोकः—मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र रौद्रैरूपद्रवग्नतस्त्विय वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे चौरिचागु पशवः प्रपलायमानैः ॥श॥

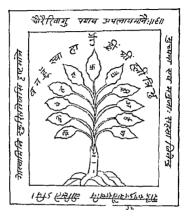
ऋद्धि-ॐ हीं अहेंणमो विसहरविसविणासवाणं संभिष्णसोदाराणं।

मन्त्र--ॐ इंबसेणा महाविज्जा देवलोगाओ आगमा दिव्ठिबंघणं करिस्सामि मडाणं भूआण अहिणं दाड़ीणं सिगोणं चोराणं चारियाणं जोहाणं वन्याणं सिहाणं भूयाणं गंधव्वाणं महोरगाणं अण्णेवि दुदुसत्ताणं विद्विबंघणं मुह्यंधणं करेमि ॐ इंवर्नारेंदे स्वाहा ।

विधि—दीपावली के दिन निराहार रहकर इस मन्त्र का १०८ बार जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। बाद मे, मार्ग मे चलते समय आव-श्यकता पडने पर इस मन्त्र का २१ बार उच्चारण करने से सब प्रकार के भय तथा उपद्रव दूर हो जाते हैं।

ॐ हीं सर्वोपद्रवहरणाय श्रीजिनाय नमः ।

यन्त्र-विद्यान



(स्तोत्र श्लोक मख्या ६)

ऋद्धि—ॐ हीं अहं णमो को पहंसः ≀

मन्त्र-ॐ ह्रॉ श्री ह्यलीं त्रिमुवन ह्रूं स्वाहा।

ग्रुण—इसके प्रभाव से सर्प गोह, बृश्चिक, छिपकली आदि विय-जीवों के विष का प्रभाव नष्ट हो जाता है। इस ऋढि-मन्त्र को पढते हुए १०६ बार झाडा देगा चाहिए।

सायन-विधि---किसी एकान्त स्थान में कासी ऊन के आसन पर पंचासन सना, आग्नेय कोण की ओर मुँह करके बैठ तथा रहाक की माला सं, १४ दिनो तक नित्य १००० की सख्या में ऋदि-मन्त्र का जग करें तथा निर्धूम अग्नि से गुग्गुल, अरहर एव कुन्दर्हमिश्रित धूपका निक्षेप करें। यन्द्रको अपने समीप ही रख।

जनत विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

-. · ·

जल-भयनाशक एवं तस्कर-भयविनाशक

स्तोत्र क्लोक—स्व तारको जिन कथ मिवनां त एव त्वामुद्धहिन्त हृदयेन यदुत्तरन्तः। यद्वाहितस्तरित यज्जलमेव नून मन्तर्गतस्य मस्तः स किलानुभावः॥१०॥

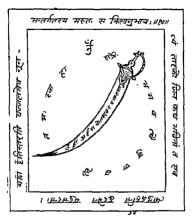
ऋद्धि-ळ हीं अहंगमो तक्खरमयपणासयाणं उजुमदीण।

मन्त्र-ॐ हों चकेश्वरी चक्छारिणो जलजल-निहिपार उतारिण जल यमय दुट्टान् दैत्यान् दारय दारय असिबोपसम कुरु कुरु ॐ ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि — मुरुवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो, तब इस मन्त्र को १०८ बार शुद्ध हृदय से जथ कर सिद्ध करें। तदुपरान्त आवश्यकता के समय २१ बार इस मन्त्र का जप करने से, हर प्रकार का पानी का भय नष्ट होता है।

ॐ ह्रीं भवोदधितारकाय श्रीजिनाय नमः ।

ग्रस्थ-विधान



(स्तोन श्लोक संख्या १०)

ऋदि—ॐ हों अहं णमो तक्ख रयणासणाए। मन्त्र-ॐ ह्रीं भगवत्यं गुणवत्यं नमः स्वाहा ।

युष-इसके प्रभाव से चोर-स्पादि का भय नप्ट होता है।

साधन-विधि-किसी एकान्त स्थान में पीले रंग के आसन पर वायव्य कोण की और मुँह करके बैठें तथा सोने की माला लेकर १८ दिनों तक नित्य १००० की संध्या मे ऋदि-मन्त्र का जप करें तथा गुग्गुस एवं चन्दन मिश्रित धप का निर्धुम अग्नि में निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब सावश्यकतानुसार

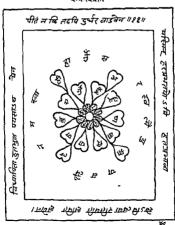
(৬৮)

अग्निभय एवं जल भयविनामक स्तोत्र श्लोक—यस्मिन् हरप्रभूतयोगि हतप्रमावाः सोऽपि स्वया रतिपतिः अपितः सणेन । विष्यपिता हतमुजः पयसाऽप येन पीतं न कि तदपि दुर्धरबादयेन॥११॥

ऋदि—ॐ हों जहाँणनी वारियालाणुद्धीणे विजनसदीणे । मन्त्र—ॐ तमो भगवति अग्निस्ताम्मिति पञ्चदिख्योत्तराणि श्रेयस्त्ररि ज्वल व्यक्त प्रज्वल प्रज्वल सर्वकामार्य साधानि ॐ अनलपिङ्गलोध्वकीशनि

महाधिव्याधिपतये स्वाहा। विधि—हरू मन्त्र को केजर अथवा हरताल से भोजपन पर सिख-कर, उसे वटती हुई अपिन में डाल देने ने अपिन का उपद्रव शान्त होता है। ॐ हों हत्सुम्मपिवारकाय श्री जिनायनमः। श्री फसबदियास्व

यस्त्र-विधात



भाष स्वामिते नमः ।

ऋदि—ॐ हीं अहं णमो वारिपालण गुद्धीए । भन्त्र—ॐ सरस्वत्यं गुणवत्यं नमः स्वाहा ।

गुण—इस यन्त्र को पास रखने वाला पानी मे नही हूबता। यह अथाह जल से रक्षा करने वाला तथा कुदैवादि के भय को नष्ट करने वाला है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे सफेद आसन पर ईशानकोण को ओर मुंह करके वैठें तथा श्वेत चन्दन की माला लेकर १६ दिनो तक नित्य १००० की सब्धा में ऋद्वि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धम-अिन में चन्दन, नागरमीथा, कपूरकचरी तथा धृत मिश्रित धूप का निर्काप करें। यन्त्र को अपने समीप सक्वें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

—: o :—

मनोमिलावा पूरक एवं अग्नि-भयनाशक

•

स्तोत्र श्लोक—स्वामिप्रनत्पगरिमाणमपि प्रपन्ना स्त्यां जन्तवः कथमहो हृदये दघानाः । जन्मोदधि सपु तरस्वतिलापयेन चिन्त्योनहन्त महतां यदि वा प्रमावः ॥१२॥

ऋद्धि—ॐ हीं अहंणमो अणलभयवज्जयाणं वस पुरवीण ।

मन्त्र--ॐ हां हों ह्रू दें हों हः बसिआउसा वांछितं मे कुरु कुर स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र का श्रद्धापूर्व रु १२४००० की सख्या मे जप करने से समस्त मनोवांछित कार्यों की सिद्धि होती है।

ॐ हीं सर्वमनोवांछित कार्य साधकाय श्री जिनाय नमः ।

यन्त्र-विधान



(स्तोत्र श्लोक संख्या १२)

ऋडि-ॐ हीं अर्हणमो अगाल भव वन्नणाए।

मन्त्र--ॐ नमो भगवत्यै चण्डिकायै नमः स्वाहा ।

गुण--इसके प्रभाव से अग्नि-भय दूर होता है। एक पुल्लू पानो को उनत मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, जलती हुई अग्नि पर आल देने से वह मान्त हो जाती है। इस मन्त्र का आराधक अग्नि के ऊपर चल सकता है तपा उससे जलता नहीं है। साधन-विधि —िकसी एकान्त-स्थान में सफेद आसन पर नंकृत्य-कोण की ओर मुँह करके बैठें तथा स्फटिकमणि की माला लेकर ७ दिनों तक नित्य १०= बार ऋदि-मन्त्र का जप करें तथा निर्दाम अग्नि में गिरी, कपूर, गुमुला एवं घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्षें।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग में लागें।

-: 0:-

क्रूर व्यन्तराविनाशक एवं जल-सुधारक

स्तोत्र क्लोक—क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथम निरस्तो इबस्तास्तदा यद कषं किल कमेंचौराः । व्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके नोलदुमाणि विपनानि न कि हिमानी ॥१३॥

ऋदि-ॐ हीं अहँगमो रिक्स भयवज्जयाणं चोद्स पुव्वीणं।

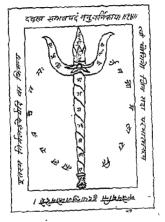
मन्त्र—ॐ हीं असि आउसा सर्वेडुप्टान् स्तंभय स्तंभय अंधय अंधय ऽमुक्तय ऽमुक्तय मोहय मोहय कुरु कुरु हीं दुप्टान् ठः ठः ठः स्वाहा ।

टिप्पणी—उक्त मन्त्र मे जहाँ 'ऽमुक्य' 'ऽमुक्य' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

विधि—पूर्व दिवा की ओर मुँह करके, किसी एकान्त स्थान में बैठकर = अथवा २१ दिन तक नित्य मुद्ठी बौधकर इस मन्त्र का ११०० की संख्या में जप करने से सब प्रकार के दुष्ट-कूर ब्यन्तरों के कष्टो से मूक्ति प्राप्त होती है।

अ हो कर्मचौर विष्वसकाय श्रीजिनाय नमः।

वन्त्र-विद्यान



(स्तोत्र श्लोक सच्या १३)

ऋदि~ॐ हों अहँणमो इक्षवरुजणाए । मन्त्र-ॐ तमो भगवत्यं चामुण्डायं नमः स्वाहा ।

गुण--निरद ७ दिनो तक कारी भर पाकी को उक्त भन्त्र से १०६ भार अभिभन्तित कर उसे खारे पानी पाते कुएँ अधवा भावड़ी (अलागय) में डालने से उसका पानी अनुत-तुल्य हो जाता है।

साधन-विधि-किसी एकाला-स्वान ने लाल रंग के आसन पर पश्चिम दिशा की ओर मुंह करके बैठें तथा जामपत्र की माला लेकर २७ दिनों तक, नित्य १००० की सख्या में ऋदि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धम अग्नि में गुम्मुल, चन्दन तथा घृत मिश्चित धूप का निक्षप करें। यन्त्र की अपने समीप, रक्कों।

उक्त विधि मे जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

-: • :--

प्रश्नोत्तरदायक एवं शत्र-निवारक

स्तोत्र श्लोक—स्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप मन्वेषयमित हृदयाम्बुज कोय देशे पूतस्य निर्मलस्वेर्योद वा किमन्य दक्षस्य सम्मय पद ननुकाणिकायाः ॥१४॥

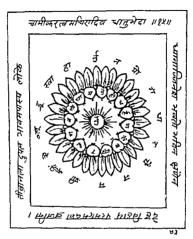
ऋदि—ॐ हीं अर्रुणमो मंसण मयसवणाणं अट्ठंगमहाणिमित्त-कुसलाण।

मन्त्र—ॐ नमो मेर महामेर ॐ नमो गौरी महागौरी ॐ नमो काली महाकाली ॐ नमो इंदे महाइदे ॐ नमो जये महाजये ॐ नमो विजये महाविजये ॐ नमो पण्णसमिणि महापण्णसमिणि अवतर अवतर देवि अवतर अवतर स्वाहा।

विधि अद्धापूर्वक २००० की सध्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर एक दर्पण को इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, स्वच्छ श्वेत वस्त्र पर त्वर्ख तथा उसके सामने किसी कुमारी कन्या को श्वेत वस्त्र पहिना कर बैठायें और उसे दर्पण में देखने को कहे। तत्पश्चात् उस कन्या से जो भी प्रश्न पूछा जायगा, उसका वह उत्तर देगी।

ॐ हीं हृदंयान्बुजान्वेषिताय श्री जिनाय नमः।

यन्त्र-विद्यान



(स्तोत्र श्लोक सख्या १४)

ऋद्धि—ॐ हीं अहँणमो झ सण भय झव णाए।

मन्त्र—ॐ नमो महाराति कालरात्रि त्रये नमः स्वाहा ।

गुण-इसके प्रभाव से शत्रु का नाग्र हो जाता है अथवा वह शत्रुता त्याग कर निर्मल विचारो वाला बन जाता है।

साधन-विधि-किसी एकान्त-स्थान मे काले रग के आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके बैठे तथा रीठे की माला लेकर, मूल नक्षत्र से हस्तनक्षत्र पर्यन्त, २५ दिनो तक, नित्य १००० की सध्या मे ऋदि- मन्त्र का जप करते हुए निर्धूम-अग्नि मे गुग्गुल, लाल मिर्च, गिरी तथा नमक मिश्रित धप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खे।

उक्त विधि से जब मन्त्र मिद्ध हो जाय, नब आयश्यकतानुसार प्रयोग में लाये।

ज्वर-नाशक एवं चौर-भय हारी

स्तोत्र श्लोक-ध्यानाष्णिनेश मवतो मविन. क्षणेत वेहं विहाय परमात्मदशा स्रजन्ति । तीद्मानतादुपत भावमपास्य लोके चामीकरत्वमचिरादिव धातुमेदाः ॥१५॥

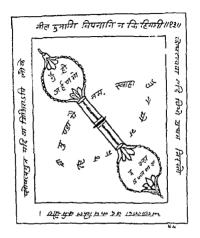
ऋद्धि-ॐ हीं अहं णमो अवलरधणप्याणं विज्ञवगपताण ।

मन्त्र—ॐ हीं नमो लीए सन्वसाहूर्ण ॐ नमो उवक्सायाण ॐ हीं नमो आयरियाणं ॐ हीं नमो सिद्धाण ॐ नमो अरिहताणं एकाहिक, हुपहिक, बार्जुबिक, महाज्वर, कोधज्वर, शोकज्वर, कामज्वर, कित तस्य, महाबीरान २० वय हों हीं कट् स्वाहा।

विधि—इस अनादिनिधन नहीमन्त्र का मन में स्मरण करते हुए एक नवीन घ्वेत वस्त्र के छोर में गाँठ वाँधें तथा उसे गुग्गुस लूव घूत दी धूनी दें। तत्पश्चात् उस वस्त्र को ज्यर-पीडित रोगो को उढा दें। यस्त्र की अभिमन्त्रित गाँठ रोगो के सिर के नीचे दवा देनी चाहिए। इस त्रिया से सब प्रवार के ज्वर दूर होते हैं तथा रोगी सुखपूर्वक सोता है।

अ ह्रीं जन्ममरणरोगहराय श्रीजिनाय नम. ।

यन्त्र-विधान



(स्तोत्र श्लोक मख्या १५)

ऋदि—ॐ ही अहँ षमो तत्रवरघण-यिषयाए । सन्त्र—ॐ नमो गधारयै नम श्रीं वसी ऍ ब्लू ह्रूं स्वाहा । गुण—इसने प्रभाव ने चोरी गयी वस्तु पुन मिल जाती है।

साधन-विधि--िन्सी एकान्त स्थान में हरे राग के आसन पर, उत्तर दिया की ओर मुँह करने बैठ तथा लाल सूत की भाला लेकर, १४ दिनो तक नित्य १००० की सरेया में कढ़ि मस्त्र को खप कर तथा निर्धृम अभिन में कुन्दरू एव गुर्ग्ल निधित धूप का निक्षत कर । यन्त्र को अपने समीप रक्ख।

उन्त विधि में जन मन्त्र मिद्ध हो। जाय तन आवश्यकतानुसार प्रयोग में लाये।

-- 0 .-

कर्म-दोष एवं भय-नाजक

स्तोत्र श्लोक-अन्तः सर्दव जिन यस्य विभाव्यसे स्वं भव्यः कय तदिप नाग्नवसे शरीरम् । एतत् स्वरूपमय मध्यविर्वातनोहि यङ्ग विग्रह प्रशामयन्ति महानुभावाः ॥१६॥

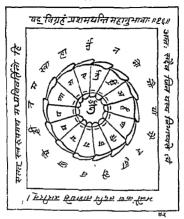
ऋद्धि-अ हीं अहं णमो गहणवणभयपणासयाण विज्जाहराण ।

मन्य—ॐ नमो अरिहंताण वादी रक्ष रक्ष, ॐ हीं नमो सिद्धाण काँट रक्ष रक्ष, ॐ हीं नमो आवरियाण नाभि रक्ष रक्ष, ॐ हीं नमो उवज्ञा-याफ इदय रक्ष रक्ष, ॐ हीं नमो लोए सब्ब साहूण ब्रह्माण्ड रक्ष रक्ष, ॐ हीं एरो पंच "पुण्कारो शिखा रक्ष रक्ष, ॐ ही सब्बयावण्यासणो आसन रक्ष रक्ष, ॐ हीं मगलाण च तःवींस पढम होड मगल आस्परक्षा पररक्षा हिलि हिलि मातियिन स्वाहा।

विधि—इस महामन्त्र वा प्रतिदिन श्रद्धापूर्वनः यथेच्छ भरया मे जप करने ने कर्माणादि कर्मो का दोष दूर हाता है।

ॐ हीं विग्रहनिवारक्ताय श्रीजिनाय नमः।

यत्त्र-विधान



(स्तोत्र प्रलोक सच्या १६)

ऋदि-के ही अहं णमी वगभयपणासए।

मन्त्र-अ नमो गौर्याय इन्द्राय वच्चाय हो नमः स्वाहा ।

गुण-इसके प्रभाव से पर्वत तथा निजेन वन में भय नष्ट होता है तथा कोई उपसर्ग नहीं होता।

साधन-विधि-किसी एकान्त-स्थान में, सफेद आसन पर, वायव्य दिशा की और मुँह करके बैठें तथा स्फटिक मणि को माला लेकर, ७ दिनो तक नित्य १००० बार ऋदि-मन्त्र का जय कर तथा निर्धम अग्नि में गुगुरु, खोबा, जन्दन तथा धृत मिश्रित ध्रुप का निक्षय करे। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उन्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे

विष-दोष एवं विरोधनाशक

स्तोत्र श्लोक-आत्मा मनीपिनिरयं त्ववंभेवबुद्ध पार् ध्यातोजिनेन्द्र भवतीह भवरंप्रभावः ।

ध्याताजितन्द्र भवताह भवत्रभावः। पानोयमध्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं

कि नाम नो वियविकारमयाकरोति ॥१७॥

ऋदि-ॐ हों अहे णमो कुठुबुड्डिणासयाणं चारणाणं ।

मन्त्र--ॐ यः यः सः सः हः हः दः यः यः उरुत्तिय रुहु रहान्त ॐ हीं पार्श्वनायाय यह यह दृष्टनागविषं क्षिप ॐ स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र द्वारा ७ वार अभिमन्त्रित जल को जिस स्थान पर सप ने काटा हो; वहां छिड़क देने तया वही अभिमन्त्रित जल सप-दंश के रोगी को पिला देने से सप-विष दूर होता है। यह प्रक्रिया अन्य विषेते जन्तुओं के विष को भी दूर करती है।

ॐ ह्रीं अत्मस्यरूपध्येवाय श्रीजिनाय नमः । यस्त्र-विधान

,	वनीयमप्य षृतिभित्वनु चिन्य मानं					
днів	- 3 fl:	क्ली	৹ল্	₹	_इंग	क्षिं नाम
प्यातो विमेन्द्र मनतीह मनतमानः	EF)	3,5	है ज	*	ιθż	746
	গাঁৱ	をお	(4K)	#)	4	प्रियंग
	ঞ	4 3 te 8			Ħ	व विकारमपाकरेगति ॥१७॥
	ਘੁ	A	.Æ	F	ŧ	1311 EU
भारत मनीयिनिस्यं त्वरभेद्यु हुर्गा						
						RΕ

ऋद्धि—ॐ हीं अहं णमी कुट्ठ बुड्डि णासए।

मन्त्र—ॐ नमो यृति देव्यं हीं श्रीं वलीं ब्लूं एँ द्वां द्वीं तमः स्वाहा । पुण—इस यन्त्र को पान रखने से विजय प्राप्त होती है तया बैर-विरोध ज्ञान्त होता है ।

साधन-विधि-- किनी एकान्त स्थान में सफेद राग के आसन पर, नैफ्ट्य कोण की ओर मुँह करी बैठे एवं स्कटिक मणि की माला लेकर १४ दिनो सेक निष्य २००० वार फिट्टि-मेन्य का अप करें सपा निर्देश-अगिन में पन्दन, कपूर, इलायची तथा पृतमिश्रिस धूप का निर्देश करें। यन्त्र को अपने समीप रस्खें।

3 वत विधि से नन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लागे।

-: o :--

शुमाशुभ ज्ञानप्रदायक एवं सर्प-विय नाशक स्तोत्र-श्लोक—स्वामेव बीततमसं परवादिनोऽपि दूर्न विभी हरिष्ट्राविधिया प्रवण्ञाः । कि काचकामित्रीस सितोऽपिकाङ्की नो गृह्यते विविधवणं विवधीयेण ॥१२॥ ऋदि—ॐ हों अहं णमी फणि सित सोसयाणं परहसमणाणं ।

मन्त्र—ॐ हीं नमो अरिहंताणं, ॐ हों नमो सिद्धाणं, ॐ हीं नमो आयरियाणं, ॐ हीं नमो उबज्जायाणं, ॐ हों नमो लोए सब्बसाहूणं, ॐ नमो सुअदेवाए, भगवईए सध्यमुअमए, बारसंग्यवयण जणणीए सरसइए, सब्बवाइणि, गुवण्णवणे, ॐ अवतर अवतर देवि मम सरीरं, पविस पूर्यं, तस्म पविस, सब्बज्ञाणमयहरीए, अरिहंतसिरोए स्वाहा।

बिधि—इन मन्त्र द्वारा चाक की मिट्टी को अभिमन्त्रित कर, उससे सितक लगमें । तत्त्रश्चात रात्रि के समय सब लोगों के सो जाने पर हाथ में जल मंभरी द्वारों नेकर. किसी एकान्त न्यान में खडें होकर लोगों की बात सुने। जो यात समझ में आंधे, उसी को सत्य समझें। इस विधि से मन में सोचे हुए, कार्य का गुभागुभ फल इतत होता है।

🌣 हीं परवादिदेवस्वरूपध्येयाय नमः।

यन्त्र-विधान



(स्तोत्र प्रलोक सच्या १८)

ऋदि—ॐ हों अहं णमो पासे सिद्धा सुणंति ।

मन्त्र-ॐ नमी सुमतिदेव्यै विषनिर्णाशिन्यं नमः स्वाहा ।

गुण-विषधर सर्पे द्वारा दिशत व्यक्ति के मुख, सिर तथा सलाट पर उन्त मन्य में अभिमनित्रत जल के छोटे चुल्तू में भर-भर कर तब तक मान्ते रहे, जब तक कि वह निविय न हो जाय। इस मन्त्र के प्रभाव से सर्प-विष उतर जाता है।

साधन-विधि—िकसी एकान्त स्थान में काले रंग के आसन पर, आम्मेय कोण को ओर मुँह करके बैठे तथा चन्दन की माना लेवन ७ दिनो तक नित्य १०८ वार ऋढि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धम-अग्नि में गुग्गुल और कुन्दरू मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने ममीप न्यखें

उक्त विधि न मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग में

लायें।

जलजीय मुक्तिकारक एवं नेत्र-पीड़ा नाशक

स्तोत्र स्लोक:--धर्मोपदेश समये सविधानुसाव। दास्तां जनो सवित ते सहरूपशोक: । अम्प्रुद्गते दिनपतौ समहीरहोऽपि कि या वियोद्यमुषयाति न जीवलोकः ॥१६॥

अम्पुद्वता विश्वति समहारहाशय कि या वियोधनुष्याति न जीवलोकः सार्थः। ऋदि—ॐ ही अर्हे जमो अविजादणासयाषे आगातामीणं। सम्य—णं हताब्दाएलोघोत, जं यात्रमावज्योत, जं आरीय आमोत, णढातिसोत जंताहरिभमोत, हचुढुच, इचुङुच, चुचुचुच स्वाहा।

विधि—इस महामन्त्र का श्रद्धापूर्वक जप करने से मिछियारो के जाल में फैसे हुए मस्त्यादि जलजीव बन्धनमुक्त हो जाते हैं।

ॐ ही अशोकप्रातिहार्योपशोमिताय श्रीजिनाग्र नमः । यन्त्र-विद्यान



श्चित्व—ॐ हों अहें णमो अविखाद णासए। मन्त्र—ॐ नमो भगवते हों श्रीं वर्ली को कीं ननः स्वाहा। गुण—इसके प्रभाव से नेत्र-पीडा दूर होती हैं। औख दुखने आई हों तो इसे रसीत द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर गले में बॉधने से लाभ

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्वान में हरे रंग के आसन पर नेम्हंत्य कोण की ओर मुँह करके बैठें तथा चन्दन की माला लेकर ७ दिनो तक नित्य १०८ बार ऋदि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अमिन में चन्दन, अगरु एव पृत मिश्रित धूप का निर्क्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से मन्त्र मिद्ध हा जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे ज़ायें।

होता है।

वशीकरण एवं उच्चाटन कारक

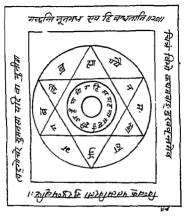
स्तोत्र श्लोक-विमं विभो कवमवाइमुलवृन्तमेव विव्वक्ष्वतत्यविरला मुरपुष्ववृद्धिः । त्वद्गोधरे मुननता यवि वा मुनीग्र गच्छोन्त नूनमधायवि स्वन्यमानि ॥२०॥

ऋडि-ॐ हीं अई पमो गहितगहणासवाणं आसीविसाणं । मन्त्र-ॐ हीं नमो भगवओ ॐ पासनाहस्स धमय सखाओ ई ई, ॐ जिजाजाए मा इह, अहि हबहु, ॐ सौ सीं हीं खुं सौं स: स्वाहा ।

विधि—इस मन्य द्वारा स्वेतपुष्प को १० व्वार अभिमन्त्रित कर, राजप्रमुख (राज्यधिकारी) को सुँघा देने से वह साधक के वशीभूत होकर उसका अपराध क्षमा कर देता है।

ॐ ही पुष्पवृध्दिप्रातिहार्योपशोभिताय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान



(स्तोत्र क्लोक सख्या २०)

ऋदि—ॐ हीं अहं णमो गहिल गह णासए। मन्त्र—ॐ भगवत्यं इह्याण्यं नमः स्वाहा।

गुण-इसके प्रभाव से इच्छित-व्यक्ति का उच्चाटन होता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान मे भगवा (गेरुए) राग के आसन पर, ईशान कोण की ओर मुँह करके बैठें तथा रुद्राक्ष की माला लेकर ४६ दिनो तक नित्य १००० की सच्चा मे ऋद्वि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अमिन मे गुगुल एव राहर मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रुख।

चकत विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

हिल्ल-पशु भयनाशक एवं पुष्प-पोषक

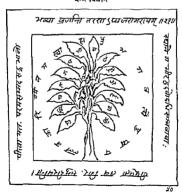
स्तोत्र ग्रह्मोड़-स्वाने गमीर हृदयोदधि सम्मयायाः पीयूयतां तव विरः समुदीरयन्ति । पीरवा वतः परमसम्मदसङ्गमाजी

मध्या यजित तरसा अ्यजरामरत्वम् ॥२१॥ ऋक्ति—ॐ हो हो अह णमो पुष्कियतस्वत्तयराणं विद्विविसाणं । मन्त्र—ॐ अरिहंतसिङ्धः आयरिय उवज्झायसय्वसाहणं सव्वष्म्मतित्य-

यराणं ॐ नमी भगवर्षए सुअवेबयाए शान्तिवेबयाए सब्बयवयण विवयाणं वसएहं विसापालाणं चउरहं लोगपालाणं, ॐ हों अरिहंतजेवाणं नमः ।

विधि—इस गन्त्र का श्रद्धापूर्वक १०६ वार जप करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं, विजय प्राप्त होती है तथा हिसक पशु, सप, चौर आदि का भय दूर होता है।

र्के हों अजरामरदिव्यध्यनिप्रातिहार्योपशोभिताय श्रीजिनाय नमः । पन्त्र-विद्यान



ऋद्धि—ॐ ह्राँ वहं बमो पुल्किय तर वसाए। मन्त्र—ॐ भगवस्य पुरववल्लबकारिण्यं नमः स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से मुरझाये वन-उपवन के वृक्ष पुन पुष्पिस-पल्लवित हो उठते हैं।

साधन-विधि-किसी एकान्त स्थान में कुष के आसन पर, वायव्य कोण की ओर मुँह करके बैठें तथा १४ दिनो तक नित्य १००० की सख्या में ऋदि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम अग्नि में गुग्गुज, छार-छत्रोला तथा पृत मिश्रित पूप का निशेष करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लागें।

सम्मान-प्रदायक एवं फल-पोषक

स्तोत्र-स्तोतः—स्वामिन् बुदूरमवनस्य समुख्यतन्तो मन्ये वदन्ति गुवयः सुरचामरीयाः । ये अस्मैर्नातं विवयते मुनिपुङ्गवाय ते तृत्रमुर्ज्वयतयः खसु शुद्धभावाः ॥२२॥ ऋदि—ॐ हीं सह ममो तव पत्तपणासयाणं उपत्तवाणे ।

मन्त्र—ॐ हृत्युमले विणुमुहुमते ॐ मितय ॐ सतुहुमाणु सीसयुणता-त्रेगमा, आयापायालगंत ॐ अतिजरेस सर्व्यंतरे स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र को ७ बार जपते हुए मुँह के सामने अपनी दोनो हुयेतियों को लाकर उन्हें भती-मांति मसल, तत्पकात् इन्छित भद्र पुरुष से मिलने जीय तो साम होता है एव राजा से सम्मान प्राप्त होता है।

ॐ हीं चामर प्रातिहार्योपशोमिताय श्रीजिनाय नमः।

स्त्री-आकर्षण एवं राजसम्मानदायक

स्तोत्र-श्लोक-स्यामं गमीरगिरमुज्ज्यल हेमरत्न सिहासनस्यमिह भव्यश्चिखिण्डनस्याम् । आलोकयन्ति रभसेन नदस्तपुर्च्य श्चामीकराद्विशिरसीव नवास्बु वाहम् ॥२३॥

ऋदि—ॐ हीं अहै जमो बंधण हरणाणं विततवाणं । मन्त्र—ॐ नमो भगवति चण्डि कात्यायनि सुभग दुर्भग युवतिजनाना सम्बन्धाः सम्बन्धाः हो र र स्मृ संबीधर अमुकस्य स्था हो हो ।

माक्यंय आक्यंय हीं र र थ्यू संवीपट् अमुकस्य हुँदयं घेँ घे । टिप्पणी---उनत मन्त्र मे जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ साध्य-

व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए। विधि—इस मन्त्र को सात दिन तक, नित्य १०८ बार जपते रहने

से इन्छित-स्त्री का आकर्षण होता है। ॐ हीं सिहासनप्रातिहार्थोपशोभिताय श्रीजिनाय नमः। यन्त्र-विधान



गुण—इसके प्रमाव मे राज दरबार मे विजय-सम्मान तथा सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में लाल रग के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठे तथा लाल रेगम को माला लेकर, २७ दिनो तक नित्य १००० को सख्या में ऋढि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम शीन में चन्दन, बस्तूरी एवं जिलारस मिश्रित धूप का निक्षेप करे। यन्त्र को अपने समीप रक्ये।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लागे।

~. o :--

शत्रु-सैन्य निवारक एवं राज्यप्रदाता

स्तोत्र-स्तोकः—उद्गग्रस्तातयशितिद्यृतिमण्डतेन सुप्तच्छराज्यः विरसोकतस्यमुद । सामित्रयतोऽपि यदि या तव घीतराग नीरागृतो वजति को न सचेतनोऽपि ॥२४॥

श्रुद्धि-ॐ हों अहं णमो रञ्जदावमाण तत्ततवाणं ।

मन्त्र--ॐ हीं भैरदरप धारिणि बण्डसूजिनि प्रतिपक्ष सैन्यं सूर्णय सूर्णय पूर्मिय पूर्मिय भेदय भेदय प्रस प्रस पच पच खादय खादय मारय मारय हुं फट्स्वाहा ।

बिधि—दून मन्द्र का श्रद्धापूर्वक १०८ बार जप करके चारो ओर रेखा खींच देनें में मात्रु की नेना मेदान छोडकर मान जाती है तथा साधक का माहस बदना है और उसे विजय साभ होना है।

33 हीं भामण्डलप्रतिहार्वं प्रमास्यते श्रीतिनाम नमः।

स्त्री-आकर्षण एवं राजसम्मानदायक

स्तोत्र-श्लोक—स्यामं गमोरगिरपुञ्चल हेमरत्न सिहासनस्यमिह भव्यशिखण्डिनस्याम् । आलोकयन्ति रभसेन नदन्तपुर्च्यं स्वामीकराद्विशिरसीय नयाम्बु वाहम् ।।२३॥

ऋढि—ॐ हीं अहं णमो बंधण हरणाणं दित्ततवाणं । मन्त्र—ॐ नमो मगवति चण्डि कात्यायनि सुभग दुर्भग पुवतिजनाना माकर्पय आकर्षय सीं र र थ्ये संबीयट अमकस्य हृदयं छे छे ।

माकर्षय आकर्षय हीं र र थ्यू संबीयर् अमुकस्य हर्ष्य घेँ घे । टिप्पणी—उन्त मन्त्र म जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ माध्य-

व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए। विधि—इस मन्त्र को सात दिन तक्, नित्य १० ⊏ बार जपत रहने से इच्छिन-स्त्री का आकर्षण होता है।

क्ष्म हो सिहासनप्रातिहार्थीयशोभिताय श्रीजिनाय नमः। यस्य-विधान



गुण—इसके प्रमाय में राज दरबार में विजय-सम्मान तथा सर्वत्र प्रतिच्छा प्राप्त होती है।

साधन-विधि—िकसी एकान्त-स्थान में बाल रंग के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठें तथा लान रेशम को माता लेकर, २० दिनों तक निस्य १००० की मंद्रया में ऋदि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम अन्ति में चन्दन, सस्तुरों एवं शिलारस मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्षें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लागे।

-: 0 :--

शत्रु-सैन्य निवारक एवं राज्यप्रदाता

स्तोन-म्तोक—उद्गच्छतातपशितिगृतिमण्डलेन सुप्तच्छ्याच्या विरस्नोकतर्त्वमूब । साप्तिप्यलोऽवि मदि या तव योतराग नीरागतां प्रजति को न सचेतनोऽवि ॥२४॥

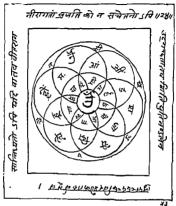
श्राद्ध-ॐ हीं अहें णमो रज्जदावयानं तत्ततवाणं ।

मन्त्र-ॐ हो भरवरण धारिण वण्टमूलिनि प्रतिपक्ष सैन्यं चूर्णय पूर्णय पूर्मिय पूर्मिय भेदय भेदय धस प्रस पच पच सावय सादय मारय मारय हुं फट् स्वाहा।

विधि--इम मन्त्र का श्रद्धापूर्वक १०८ बार जम करके चारो ओर रेखा धीच देनें में बादु की मेना मैदान छोड़कर माम जाती है तथा साधक का माहत बदना है और उसे विजय माम होना है।

🕉 हों मामण्डलप्रतिहायं प्रमास्यते श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान



(स्तोत्र श्लोक सख्या २४)

ऋदि-ॐ हों अहं णमी आगास गा मियाए।

मन्य-ॐ हों म्रां म्रों पोडशमुजाये पियन्ये प्रौं ह्रं हों नगः स्वाहा।

गुण-इसके प्रभाव से हाथ से निकता हुआ राज्य (अथवा शासना-

धिकार) पुनः प्राप्त होता है।

साधन-विधि—िकसी एकान्त-स्थान मे लाल रग के आसर्न पर पूर्वीभिमुख बैठ, लाल रग की माला तेकर २७ दिनो नक नित्य १००० बार ऋदि-मन्त्र का जय करे तथा निर्धम-अग्नि में कपूर, कस्तूरी, शिला-रस तथा प्रेत चन्दन मिश्रित धूव का निर्धम करें। मन्त्र-साधन के अन्तिम दिन हवन करने के याद आदका को २५ वचारी कन्याओं को मोहनमीग तथा हुलुवा का मोजन करायें। मन्त्र-साधना करते समय यन्त्र को मुजा में बीध रखना थाहिए।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे साथे।

सप-वृश्चिकावि विभागिक एवं हुव-वर्द्ध क स्तोत्र ग्लोक-भी भी प्रमादमवधूयभगस्वक्षेत मागरयनिवृ तिषुरी प्रति सार्थवाहम् । एतप्रिवेदयित देव जगरप्रयाय मध्ये वन्द्रभितनाः सुरदुन्दुविसते ॥२४॥ ऋदि-द्ध अहं गभी हिडलमत्वगाणं महातवाणं । सात्र-४ नमी भगवति वृद्धगरुडाय सर्वविषविमाशिनि छिन्द छिन्द भिन्द भिन्व पृष्ट् पृष्ट् एहि एहि भगवति विद्यं हुर हु हु स्ट स्वाहा । विधि-इस मन्द्र भाग्यतः वृद्धगरुडाय सर्वविषविमाशिनि छिन्द छिन्द जोर-वीधि-इस मन्द्र भाग्यतः विद्यं हुए, विषय देव व्यक्ति के समीप जोर-वीर से डोल बनाने पर सर्व-वृधिकत आदि का विषय उनर जाता है ।

मन्ये नदन्तिभन्तः सुदुन्दुभिन्ते ॥२४॥

हिस्सा विद्यान

ऋद्धि—ॐ हीं अर्ह णमो हिडण मलाणयाए । मन्य—ॐ नमो धरणेन्द्रपद्मावस्य नमः रवाहा ।

गुण- इसके प्रभाव से रोग, शोक तथा पीडा का नाण होता है, हर्ष की वृद्धि होती है तथा सब प्रकार के रोग शान्त होते हैं।

साधन-विधि-किसी एकान्त-स्थान में सपे राग के आसन पर वैठ, पश्चिम दिशा की ओर मुँह करके २१ दिनो तक नित्य १००० की सध्या में ऋदि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम-अग्नि में बपूर, चन्दन, इलायची तथा करतुरी मिधित धुप का निक्षेप करें।

मन्त्र-जय के समय यन्त्र को अब्दगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर गरे। में बाँधे रखना चाहिए तथा होली एवं दीपावली वी रात्रि में मन्त्र को जगाना चाहिए अर्थात् पुन जप करना चाहिए।

चक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आगश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

—: o :—

परविद्या प्रयोग नाशक एवं सम्मानप्रद

स्तोत्र स्लोकः—उद्योतितेषु भवता भुवतेषु नाथ तारान्वितो विद्युर्ग विह्ताधिकारः । मुक्ताकलापकलितोल्लसितातपत्र ध्याजात्त्रिधा द्युततुर्ग्रुवमभ्युपेतः शरद्दा।

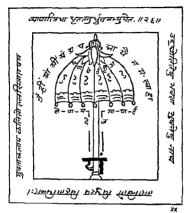
ऋद्वि-- ॐ हीं अर्ह णमो जवपदाईणं घोरतवाणं ।

मन्य—ॐ हों थीं प्रत्यिङ्गरे महाविद्ये येन येन केनीचत मम इत पापं कारित्तम् अनुमतं चा तत् पापं तस्येव गच्छतु ॐ हों श्रीं प्रत्यिङ्गरे महाविद्ये स्वाहा '

विधि—प्रातःकाल किसी एकान्त स्थान में पूर्विभिमुख तथा सन्ध्या समय पश्चिमाभिमुख बैठकर दीनी हाथ जोड़कर, बज्जिल-मुद्रा पूर्वक इस मन्त्र का १०= बार जप करने से इसरों की विद्या का किया हुआ प्रयोग नष्ट ही जाता है।

ॐ हीं छत्रत्रयप्रातिहायंदिराजिताय.श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान



(स्तोत्र श्लोक सच्या २६)

ऋद्धि—ॐ हों अहं णमो जयंदेयपासेक्ताये।

मन्त्र—ॐ हों श्रां श्रीं श्रुं श्रः पदायें नमः स्वाहा ।

गुण—इसके "भाव से साधक की सम्मति एव उसके शब्दो को सर्वोत्तम माना जाता है अर्थात् साधक की राय की सर्वत्र कद्र की जाती है।

साधन-विधि—किनी एकान्त स्थान ने लाल रग के आसन पर, दक्षिण दिशा की बोर मृंह करके बैठें तथा लाल मूंगे को माला लेकर २७ दिनो तक नित्य १०६ बार ऋदि-मन्त्र का जप कर, निर्धूम-अग्नि मे अगर, हाकदेर तथा छार-छत्रीला मिश्रित घूप का निक्षेप करे। सन्त्र को अपने समीप रखें। ् उन्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब उसे आवश्यवनानुसार प्रयोग में लाये।

ट्टिट-दोष नाशक एवं शत्र-पराभवकारक

स्तोत्र क्लोक—स्येन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन कान्ति प्रताप यशसामिव सञ्चयेन । माणिक्य हेम रजतप्रविनिर्मितेन सालत्रयेण भगवश्रमितो विभागि ॥२०॥

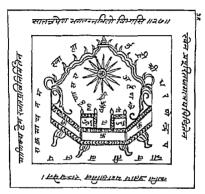
ऋदि—ॐ ह्रीं अहं गमो खलदुटुगासयाण घोरपरककमाण।

मन्त्र—ॐ हों नमो अरिहताण, ॐ हों नमो सिदाणं, ॐ हों नमो आइरियाण, ॐ हों नमो उवज्झायाण, ॐ नमो लोए सध्व साहूण, ॐ हों नमो नाषाय, ॐ हों नमो दसणाय, ॐ हों नमो चारित्ताय, ॐ हो नमो तवाय, ॐ हों नमो प्रैलोक्य वशकराय हों स्वाहा।

विधि—इस महामन्त्र का श्रद्धापूर्वक उच्चारण वरते हुए जल को अभिमन्त्रित कर, उसे रोगी को पिलादे तथा उसी के छीटे भी दें तो रोगी की पीडा एव दृष्टि-दोप (नजर लगना) दूर होते हैं। (विशेषकर शिशुओं के लिए यह मन्त्र परम हितकर है)।

ॐ हीं वप्रत्रविदाजिताय श्रीजिनाय नम.।

यस्य-विधान



(स्तोत्र श्लोक सख्या २७)

ऋबि—ॐ हों अहं णमो खल दुटुणासए।

ऋ।a—ॐ हा अह भभा खल दुदृणासए। मन्त्र—ॐ हीं श्रीं धरणेन्द्र पद्मावती बल पराऋमाय नमः स्वाहा ।

पुण-इसके प्रभाव से शत्रु पराजित होता है सपा शत्रुता त्याग कर शान्त हो जाता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे काली कन के आसन पर पूर्विभिमुख बैठें तथा काले सुत की माला लेकर २१ दिनो तक नित्य १००० ऋदि-मन्त्र का जप कर तथा निर्धूम-अन्ति मे गुगुल, गिरी, सेंधा निर्ध्य एय वृत मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें। अन्ति सन सन्ति में सीप रक्खें। अन्ति सन सन्ति में सीप रक्खें। अन्ति सन सन्ति में अजयन पर लिखकर, उसे पद्यामृत में मिला कर नदी में प्रवाहित करवें।

उक्त विधि से जब भन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें।

पराधीनतानाशक एवं पश-विस्तारक

स्तोत्र म्लोक—विश्यस्यजो जिन नमस्त्रिद्शाधियाना मुस्कुव्य रस्तरिवतानिप मौतिवन्धान्। पादौ श्रयन्ति भवतौ यदि वा परत्र त्वससङ्ग्रेने गुमनसो न रमन्त एव ॥२९॥

ऋदि—ॐ हीं अहें गमी उबदववज्जणाणं घोर गुणाणं। मनत्र—ॐ हीं अरिहन्त सिद्ध आयरिय उवज्ज्ञाय साह चुलु चुलु

ह्सु हुलु कुलु कुलु मुलु दुच्छियं मे कुर कुर स्वाहा ।

विधि—इस मनत्र को अद्धापूर्वक एक लाख की सख्या में जर लेने ने साधक को सर्वत्र विजय प्राप्त होती है। प्रताप ने वृद्धि होती है। परा-धीनता नष्ट होती है एव सभी मनोरख पूर्ण होते हैं।

ॐ हों पुष्पमासानियेवितचरणाम्बुज अहंते नमः । यन्त्र-विद्यान



ऋहि—ॐ हों अहं णमो दव वन्तणाए।

मन्त्र—ॐ हों श्री हीं कौं वपट्स्वाहा।

गुण--इसके प्रभाव से द्वितीया के चन्द्र की भौति निरन्तर यश-कीति का विस्तार होता रहता है तथा सर्वत्र विजय प्राप्त होती है।

साधन-विधि-िक्सी एकान्त-स्थान मे पीले रग के आसन पर, दक्षिण दिशा की ओर मृँत करके बैठे तथा पीले मूत की माला लेकर २१ दिनों तक नित्य १००० की संद्धा मे ऋदि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धूम-अपन में चन्दन, लीग, कपूर, इलायची एव पृत मिश्रित धूप का निर्धेप करे। यन्त्र को अपने ममीप रगर्खे।

उक्त विधि में जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग में लाये।

-: 0 :--

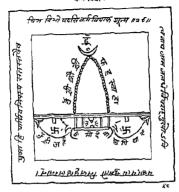
दाहक-ज्वर नाशक एवं लोक-प्रसन्नतादायक

स्तोत्र रणोक—स्यं नाय जन्मजलधैविषराङ्घुछोऽपि यत्तारयस्यमुमतो निजप्रध्यनानान् । युग्त हि पाषिच निषस्य सतस्तवैय चित्रं विभो यदति कर्मविषक सून्यः ॥२६॥

ं ऋडि—ॐ हों अहं णमो देवाणुष्यियाणं घोरगुण बंभवारीणं। मन्त्र—ॐ तेजोई सोम सुधा हंस स्वाहा। ॐ अह हों क्वीं स्वाहा। विधि—इम मन्त्र को भोजपत्र पर चन्दन से लिखकर, उसे मोमबत्ती पर लपेटे। फिर मिट्टी के कोरे घड़े मे पानी भण्कर, उसमें मन्त्रयुक्त मोम-बत्ती को डालद तो दाहक-ज्वर दूर हो जाता है।

ॐ हीं मंसार सागर तारकाय श्रीजिनाय नमः।

वस्य-विभाग



(स्तोत्र प्रशोक सम्या २८)

ऋद्धि -ॐ ही अहं षमो वेवाणूपि याए।

मन्त्र—ॐ हीं कों हों हु फट्स्बाहा।

पूण—इसने प्रभाव से सब सोग प्रसन्न होते हैं। जिस व्यक्ति वो प्रसन्न करना हो, उसे उन्त मन्त्र से अभिमन्त्रित सुपारी, इसायची अयवा लोग विलानी चाहिए।

साधन-विधि-किसी एकान्त स्थान में साल रंग के आसन पर, पूर्वाभिमुख बैठ तथा ताल मूंगा की माला लेकर २१ दिनो तक नित्य १००० की सख्या में ऋदि-मन्त्र का जप करे तथा निर्मुस-अमिन में कस्तूरी, शिला-रस, अगर एव श्लेत चन्दन निर्मित धूप का निर्मेष करें। यन्त्र की अपने समीप रहें।

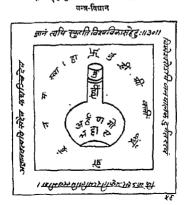
उनत विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार उमे प्रयोग मे लायें।

शुभाशभ ज्ञान-प्रदाता एवं जल-स्तम्भक

स्तोत्र श्लोक-श्विरवेरवरोऽपि जनपालक दुर्गतस्वं कि वाऽक्षरश्रकृतिरप्यलिपिस्स्वमीश । अज्ञानवस्वपि सर्दय कघष्टिबदेव ज्ञानं स्वपि स्कुरति विश्वविकासहेतुः ॥३०॥

ऋदि—ॐ हों अहैं गमी अपुष्यबलपवाईण आमोसहिपताणं । सन्त्र—ॐ हों अहं नमी जिजाण सीपुत्तमाणं सोपनाहाणं लोगहियाणं भोगपर्दवाणं सीगपञ्जो अगराणं मम शुभागुम दर्शय दर्शय ॐ हों कर्ण-पिशाजिनी मुण्डे स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र को ज्ञयन करते समय श्रद्धापूर्वक १०६ वार जपने से कार्य का सम्भावित शुभाशुभ फल स्वय्न में ज्ञात है। जाता है। अ हीं अङ्गुतगुणविराजितरूपाय श्रीजिनाय नमः ।



ऋद्धि—ॐ हीं अर्ह णमो भद्दाए।

मन्त्र—ॐ हों थीं क्लों ब्लूं प्रौं ह्यूं नमः स्वाहा ।

गुण—इस यन्त्र के प्रभाव से कच्चे घड द्वारा कुएँ से पानी भर कर निकालाजासकताहै।

साधन-विधि—िकसी एकान्त स्थान मे कान रग के आसन पर पूर्वामिमुख बैठें तथा घ्टाश की माना लेकर ६० दिनो तक, नित्य ७०० की सत्या मे ऋदि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि मे दशाङ्ग अथवा गुग्गुल, लोबान एव घृत मिश्रित ध्रूप का निर्धंप करे। यन्त्र को अपने समीप रक्षें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लाग्नें।

-: o :--

शत्रु-उपद्रवनाशक एवं शुभाशुभ ज्ञान प्रदाता

न्तोत्र क्लोक-प्राग्मारसम्भृतनभासि रजासि रोपा दुरवापितानि कमटेन ग्रटेन यानि । छत्यापि तैस्तव न नाथ हता हताशो प्रस्तस्त्यमीनिरयमेव पर दुरास्मा ॥३१॥

ऋदि—ॐ हीं बहुँ णमी इद्विषणित्तरावयाण रथेलो सहिपताणं। मन्त्र,—ॐ हीं पाश्वेयक्ष दिव्य रताय महाघ वर्ण एहि एहि आं क्रों हीं नमं:।

विधि—इस मन्त्र ना श्रदापूर्व रूज्य करने से दुष्ट शत्रु पराजित होता है तथा उपद्रव शान्त होते हैं।

🕉 हों रजोवृष्टपक्षोभ्याय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान



(स्तोत्र प्रनोक संख्या ३१)

ऋदि-ॐ हीं अहें गमो बी आवण पताए।

मन्त्र-अ नमी भगवति चक्रधारिणि भ्रामय श्रामय मम शुमाशुमं वर्णय दर्शय स्थाहा ।

गण-इसके प्रभाव से शुभाशुभ प्रश्न का फल ज्ञात होता है।

साधन-विधि-किसी एकान स्थान मे श्वेत रग के आंसन पर पूर्वाभिमुख बैठें तथा मकेंद्र भून को माला लेकर १४ दिनो तक निर्य १००० को मध्या मे ऋडि-मन्त्र का जय करे तथा निर्धूम-अनिन मे चन्दन, छार-छवीला तथा अगर मिथित धूप का निर्धेष करें ११वें दिन पूत, अगर तथा पीली सरतो से हवन करने के बाद मिय्टान्न वितरण करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो आय, तव आवश्यकतानुसार प्रयोग में साथे।

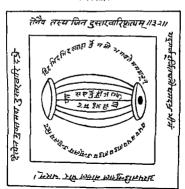
निद्राकारक एव सांधातिक विद्या-भयनाशक

स्तोत क्लोक—यद्गर्गंदूर्जितधनीधमदस्त्रमीम श्ररयत्ताङन्मुसल मासलघोर धारम् । वैत्येनमुक्तमय दुस्तरवारि दक्षे तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥

तनव तस्य ाजन दुस्तरवा।रकृत्यम् ॥३२॥ ऋढि—ॐ हों अहं णमो अट्टमवणासयाण जल्लोसहिपताण । मन्त्र—ॐ भ्रम भ्रम केशि भ्रम केशि भ्रम माते भ्रम

विभ्रम विभ्रम पुरुष्ट मोहय मोहय म्वाहा। विधि—इस मन्त्रको जपते हुए, पृथ्वी पर न गिरे हुए, सरसो के दानो को अभिमन्त्रित कर, जिस घरको चौखट पर डाल दिया जाता है उस पर के लोग गहरी निद्रा मे मग्न हो जाते है।

ॐ हीं कमठबैत्यमुक्तवारिधाराक्षोभ्याय श्रीजिनाय नमः । यन्त्र-विधान



ऋदि—ॐ हीं अहं णमो अटुमद णासए।

सन्त्र—ॐ नमो भगवते मन शत्रून् बंघय द्याय ताडय ताडय उन्मूलय उन्मूलय छिद छिद मिद भिद स्वाहा ।

गुण-इसके प्रभाव से शयु की माधातिक शस्त्रादि विद्या का प्रभाव नष्ट होता है और वह निवंत होकर अपनी दुष्टता को छोड देता है।

साधन-विधि—िकसी एकान्त स्थान में काने राग के आसन पर, नैक्ट्रांचकोण की ओर मूँह करके बैठे तथा पद्मधी असमापृद्धा की माला जेकर, २७ दिनो तक नित्व १००० की महम्म के ऋदि-मन्त्र का जप करे तथा निर्धून अनिन में गुगुन, तगर, नागरमोया तथा घृत मिश्रित धूप का निर्द्धाप करे। यन्त्र को अपने समीप ही ग्रंख।

उन्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुमार प्रयोग में लागे।

--: o :--

भूतप्रेवादि भय-नागक एवं दुर्भिक्ष निवारक

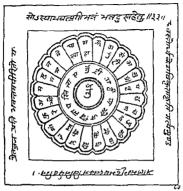
स्तोत्र श्लोक—ध्वस्तोध्यंकैशविकृताकृति मत्येमुण्ड-प्रात्मवमुद्दमयववत्रत्र यिनियंदिग्नः। प्रेतप्रजः प्रति भयन्तमपीरितो यः सोऽस्यामयत्प्रतिभव भवदुःख हेतुः॥३३॥

ऋद्धि-ॐ हों अहं वमी असणिपातादिवारयाणं सव्वोसहिपत्ताणं।

मन्त्र—35 हीं भीं बतों यों यों ये यः बसो बतों कसिकुण्ड पासनाह ॐ चुर चुर मुर कुर फुर फर फर किसि किसि कस कस धम धम ध्यानामिना भस्मी कुर कुर पुरय पुरय प्रणतानी हित कुरु कुर हु कटू स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक जए करने से राजभय, भूत-पिद्याच भय, डाकिनी-चाकिनी भय एव हस्ती, सिंह, मर्प, वृश्चिक आदि का भय नष्ट होता है।

ॐ हीं कमठदेख प्रेवित भूतिविशाचाद्यक्षोध्याय श्रीजिनाय नमः ।



(स्तोत्र क्लोक सख्या ३३)

व्यक्ति—के हीं अहं णमो जविताए खिताए।

मन्त्र-ॐ हों भी वृवभावितीपंद्भुरेभ्यो नमः स्वाहा । अववा

ऋ अस असु पसु पपु शीओ वावि अधशाकु अममुनने पाम ।

गुण-इसके प्रभाव से अतिशृध्यि, अनावृध्यि, उल्कापात एव टिड्डी दल आदि उत्पातों से सम्भावित दुर्मिक दूर होकर, प्रजा भी रक्षा होती है

तया सुभिक्ष होता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान मे गेरुए रग के आसन पर, वायम्य कोण को ओर मुँह करके बैठे तथा न्द्राक्ष की माना लेकर ७ दिनों तक, नित्य १००० बार ऋदि-मन्त्र का जब करे तथा निर्धम-अध्न मे क्पूर, फरन, निर्म, इसायची एवं मृत मिश्रिन धूप का निर्धम करें। यन्त्र को अपने समीप रक्षें।

उन्त विधि से मन्त्र जब सिद्ध हो जाय, तब उने आवश्यकतानुसार

प्रयोग मे लायें।

धन-अन्न प्रदायक एवं भृतादि पीड़ा नाशक

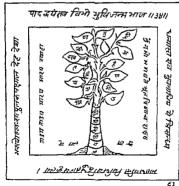
स्तोत्र श्लोक-धन्यास्त एव भवनाधिप ये त्रिसन्ध्य माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य कृत्याः। भवत्योत्ल सत्युलक्यक्ष्मल देह देशाः पादह्वय तव विभी भवि जन्म भाज: ॥३४॥

ऋद्धि--ॐ हीं अहं णनो भूताबाहावहारयाणं विद्वोसहिपत्ताणं । मन्त्र-अ नगी अरिहंताण, अ नमी भगवइ महाविज्जाए सत्तद्वाए

मोर हुलु हुलु चुलु चलु मयूरवाहिनीए स्वाहा ।

विधि—पीव कृष्णा देशमी (गुजराती-मगसिर कृष्णादशमी) के दिन निराहार रहकर इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक १००८ बार जप करे। तदुपरान्त आवश्यकतानुसार परदेण-यात्रा, व्यवनाय अथवा लेन-देन के समय इस मन्त्र का सात बार स्मरण (जप) करने से लक्ष्मी तथा अग्न का लाभ होता है। ॐ हीं त्रिकालपूजनीयाय श्रीजिनाय नमः।

.. यस्त्र-विभास



ऋद्धि-ॐ हों अहं पमो उति अस्सायतक्खणणं ।

मन्त्र—ॐ हों नमो भगवते भूतिपशार्चराक्षस वेतालान् ताडय ताडय मारय मारय स्वाहा ।

गुण-इससे भूत, पिशाच, राक्षस, डाकिनी, शाकिनी आदि नी

पीडा तथा शत्र-भय आदि नष्ट होते **है**।

साधन-विधि—िकसी एकान्त-स्थान मे काल रग के आसन पर वायव्य कोण की ओर मुँह करके बैठे तथा विच्छूकौटा के फलो की माला लेकर २१ दिनो तक नित्य २१ बार ऋदि-मन्त्र का जप करते हुए इसी मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित सरसो के दानो को प्रानी मे डाले तथा निर्मूप-अधिन मे गुगुल, सरसो, लालमिर्च एव घृत मिश्चित धूप का निक्षेप कर। यन्त्र को अपने समीप रखें।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकतानुसार प्रयोग

संकट-निवारक एवं अपस्मारादि दोष नाशक

मे लाये।

स्तोत्र घ्लोक—अस्मिन्नपारभववारि निधौ मुनीश मन्ये न मे श्रवणगोवरतां गतोऽसि । आर्काणते तु तब गोत्र पवित्र मनत्रे कि वा विपद्विष्ठारी सचिष्ठ समेति ॥३५॥ ऋदि—ॐ हीं अहं णगो मिगोरो अवारदाणं मणवतीणं ।

मन्य — अन्तर्भे अरिहताणं उन्हर्यू नमः, अन्तर्भो सिद्धाण इन्हर्यू नमः, अन्तर्भो आयरियाणं स्म्हर्यू नमः, अन्तर्भो उवज्ञायाण ह्म्हर्यू नमः अन्तर्भे स्वत्रसायाणं ह्म्हर्यू नमः अनुकत्य सकटमीक्ष कुरु कुरु स्वाहा।

े टिप्पणी—उक्त मन्त्र मे जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ साध्य-

व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

विधि—इस मन्त्र को एक मुन्दर चीनों के ऊपर लिखकर, उसके ऊपर श्री पार्यनाय स्वामी की प्रतिमा को स्थापित करें, तदुपरान्त चमेती के पुणी को चीकी पर चढाते हुए इस मन्त्र का १०० वार जप नरे। प्रत्येक मन्त्र-जप काय एक पुण्प चीको पर प्रतिमा ने समीप चढाते जीय। मन्त्र जप खडे होकर करना चाहिए। इस मन्त्र से सब सकट दूर होते हैं तथा सर्वेत्र विजय प्राप्त होती है।

ॐ द्वीं ओपन्निवारकाय श्रीजिनाय नमः।

वन्त्र-विधान



(स्तोत्र श्लोक सख्या ३५)

ऋद्धि—ॐ हीं अर्ह णमो मिन्जलिञ्जणासए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते मृग्युन्मदायस्मारादि रोग शांति कुरु कुरू स्वाहा।

गुण—इसके प्रभाव से मृगी, उन्माद, अपन्मार तथा पागलपन आदि असाध्य रोग शान्त होते हैं।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में केले के पत्ते के आसन पर, नैक्ट्रेंस कोण की ओर मुँह करके बैठे तथा चन्दन की माला लेकर २१दिनो तक नित्य ७०० की सख्या में ऋडि-मन्त का जप कर तथा निर्धूम-अग्नि में सोबान एवं भून मिश्रित धूप का निर्क्षेप कर । यन्त्र रा अपने नमीप रक्खे ।

उक्त विधि से जब मन्त्र मिद्ध हो जाय, तव आवश्यकतानुसार प्रयोग में लागे।

यशोकरण-कारक एवं सर्प-कीलक

स्तोत्र श्लोक-जन्मान्तरेऽपि तब पादयुग न देव मन्ये मया महित मीहित दान दक्षम् । तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवाना जातो निकेतनमह मधिताशयानाम् ॥३६॥

ऋद्धि-ॐ हीं अहं णमो वालवसीय रणकुसलाण वचणवलीण। मन्त्र--ॐ नमो भगवते चन्द्र प्रभाय चन्द्रेन्द्रसहिताय नयनमनोहराय ॐ चुलु चुलु गुलु गुलु नीलस्त्रमरि नीलभ्रमरि मनोहर सर्वजन वश्य कुरु कुरु

स्वाहा ।

विधि-दीपावली के दिन पीले रग की गाय के दूध से निर्मित शुद्ध घृत का दीपक जलाकर, उससे नवीन मिट्टी के बर्तन में काजल पारें। आवश्यकता के समय उक्त काजल को अपनी औख में लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के सम्मुख पहुँचा जाएगा, वह वशीभूत हो जाएगा। ॐ हों सर्वपराभवहरणाय श्रीजिनाय नमः।

यत्त्र-विधान



ऋहि—ॐ हीं अर्हेणमो प्रांहंफट्विचकाए।

मन्त्र—ॐ ह्री अध्टमहानाग कुल विष शान्तिकारिण्यैः नमः ।

गुण—इस मन्त्र से अभिमन्त्रित ककड़ियों को सर्प के ऊपर फेंकने से वह कीसित हो जाता है। इसे पडकर गाले सर्प को पकड़ने से वह काटसा नहीं है तथा उसके विप का प्रभाव भी नहीं होता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में हरे रग के आसन पर, ईशान कोण की ओर मुंह करके वैठें तथा सन (पाट) की माला लेकर ७ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋदि-मन्त्र का जप करें तथा निर्मुस-अग्नि में गुम्मुल एव कुन्दरू मिश्रित धूप का निक्षेप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खे।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लाये।

-: o :--

भूतप्रहादि निवारक एवं सम्मान-प्रदायक

स्तोत्र श्लोक---नूनं न मोहितिमिरावृत लोचनेन पूर्वं विमो सक्तृदिष प्रवित्तीकितोऽति । मर्माविधो विद्युरयन्ति हिमामनर्पाः प्रोद्यस्प्रवन्धगतवः कथमन्यपैते ॥३७॥

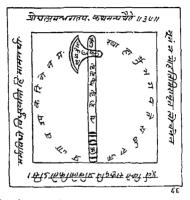
%्त्रि—ॐ हों अहं णमो सब्बराज पवाबसीयरण कुसलाण काय-बसीणं।

मन्त्र—ॐ अमृते अमृतोड्मये अमृतवर्षिण अमृतं श्रावय श्रावय सं संवतीं वसीं ह्रंह्रं स्लंब्ल्ंहां हांद्रों हीं हीं द्रावय द्वावय हीं स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित जल का आवमन करने से भूत, प्रह तथा शाकिनी आदि के उपद्रव बान्त होने है ।

ॐ ह्रीं सर्वमसर्वा नथमयनाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विधान



(स्तोत्र ग्लोक सख्या ३७)

ऋदि—ॐ हीं अहंगमो लो भि हीं लोभिए।

मन्त्र--ध्य नमी भगवते सर्वराजाप्रनावश्य कारिणे नमः स्वाहा । गुण--यन्त्र को अपने पास रवर्खे तथा मन्त्र मे ७ कवडो को अभि

भुष---वन्त्रका अपने पास देखें तथा मन्त्र में ७ केवडी को आभ-मन्त्रित कर, झीरवृक्ष के नीचे पहुँच कर उन्हें उसर को ओर उछाल कर अधर में ही सपक ले, तबुपरान्त उन्हें नगर के चीराहे गर डाल दें तो राजा में मिलाप एवं थेंट्र पुरुषों से सम्मान प्राप्त होता है।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में लाल रग के आसन पर, पूर्वाभिमुख बैठे तथा २१ दिनों तक नित्य १०० बार ऋदि-मन्त्र का कनेर के फूलों के साथ जप करें अर्थात् १०० कनेर ने फ्लों के माथ १०० बार ऋदि-मन्त्र बणे तथा निर्धुन-अग्निम स्तीग, कुन्दक, चन्दन और धृत निर्धित धृप का निर्दोष करें। यत्र व नो अपने समीप रखेंते।

उनत विधि से मन्त्र ने सिद्ध हो जाने पर उसे आवश्यकतानुसार

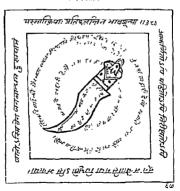
प्रयोग में लाये।

क्षमीरिसत कार्य-साधक एवं नहरू आदि रोग-साशक स्तोच म्लोक-आर्कावतो ऽपि महितोऽपि निरोधतोऽपि तूर्व व चेतिस मया विद्युतोऽसिमश्त्या जातो ऽहिसतेन चमनायव दुःख्यात्रं . यसमाहिकयाः प्रतिकतनित न भावसुन्याः ॥३६॥

ऋदि—ॐ हों अहै गमो हुस्सहक्टुणिबारयाणं खोरसवीणं । मःत्र—ॐ हो श्रों ऍ अहै क्सी को ब्लं फ्रों पूं निमऊण पासना इ.सारिविजयं कुरु कुर स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक सवा लाख की संध्या में जप करने से अभिलयित कार्यों की शिद्धि होती है ।

> ॐ हीं सर्वेदुःख हराय श्रीजिनाय नमः । यन्त्र-विधान



ऋद्धि—ॐ हों अहं गमो इट्टि मिट्टि मक्खं कराए।

मन्त्र—ॐ जानवान्हारवापहारिष्यं भगवत्यं खङ्गारीवेद्यं नमः स्याहा।

गुण—इन मन्त्र से होली की राख को २१ बार अभिमन्त्रित कर उसके द्वारा नहरुवा, जनेवा, उदर तथा हृदय-पीडा के रोगी को, जब तक रोग दूर न हो, तब तक प्रतिदिन झाड़ा देते रहने से उक्त बीमारियाँ दूर होती हैं।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान मे स्वेत राग के आसन पर पूर्वी भिमुख दें तथा श्वेत काष्ट (सफेद लकड़ी) की माला लेकर १४ दिनो तक, नित्य १००० की तक्या मे ऋद्वि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अगिन मे सौंग, कुन्दक, चन्दन तथा घृन मिश्रित धूप का निर्देश करें। यन्त्र को अपने समीप एक्वें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो। जाने पर बावश्यकतानुसार प्रयोग म कार्ये।

-: 0 :--

आकर्षण कारक एवं ज्वरादि नाशक

स्तीत्र क्लोक—स्वं नाय दुःखिजनदस्सल हे शरप्य कारुप्यपुष्पवसते वशिनो वरेण्य भक्त्यानते मधि महेश दर्पा विद्याय दुःखोकुरोह्सनतत्परतां विधिह ॥३६॥

ऋदि-अ ही अहं गमी सव्यज्ञरसंतिकरणं सप्पिसवीणं ।

मन्त्र—करस्यू कर्ती अपे विजये अयंते अपराजिते उपल्यू अभे, इत्यु मोहे, मन्द्र्य स्तम्भे, ह्म्स्य्यू स्तम्मिनि अमुकं मोह्य मोह्य मम वस्य कुरु कुरु स्वाहा।

टिप्पणी---उक्त मन्त्र मे जहीं 'अमुक' शब्द आया है, वहां साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

षिधि—इस मन्त्र के जप से स्त्री-पुरुष में परस्तर आकर्षण होता है। स्त्री जपे तो पुरुष वज्र में होता है और पुरुष जपे तो स्त्री वज्र में होती है। ॐ हों जगठनीयश्यासये श्रीचिताय नमः।

चन्त्र-विधान



(स्तोत्र श्लोक संख्या ३६)

ऋद्धि—ॐ हीं अहं पनो सत्ता वरिएगणिक्जं।

मन्त्र-अन्तमी भगवते अमुकस्य सर्वज्वर शांति कुरु कुरु स्याहा । टिप्पणी--उनत मन्त्र मे जहाँ 'अमुकस्य' शन्द आया है, वहाँ रोगी

व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

गुण—इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर तथा धूप देकर, रोगी स्यक्ति के कच्छ में बाँध देना चाहिए। इसके प्रभाव से सब प्रकार के ज्वर

तया सन्निपात दूर होते हैं।

साधन-विधि—किसी एकान्त-स्थान में हरे राग के आसन पर ईपान कोण की ओर मूंह करके बँठें तथा कत्मक की माला नेकर, ७ दिनो तक नित्य १००८ बार ऋदित-मन्न का जप करें तथा निर्मूम-जीन में गुगुल, निरी एयं पूत निश्चित धूप का निर्मेष करें। यन्त्र को अपने समीप रखें । जनत विधि से मन्त्र पिछ हो जोने पर उसे आवस्पकतानुसार प्रयोग

में लावें।

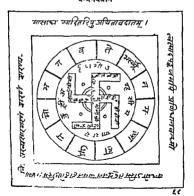
विषम-ज्वरादि नाशक

स्तोत्र-श्लोक—ितः सख्यसारत्रारणं शरणं शरण्य मासाद्य सादितरिषु प्रचितायदातम् । स्वस्पादयङ्कुजमपि प्रणिधानयस्यमे वस्थ्योऽस्मि सङ्भुवनयावन हा हृतोऽस्मि ॥४०॥

ऋद्धि-ॐ हों अहें णमी उण्हसीयवाहविणासयाणं मधुसवीणं । मन्त्र-ॐ नमी भगवते स्टब्यूं नमः स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक जप करने से सब प्रकार के विषम-ज्वर दूर होते हैं।

ॐ ह्रों सर्वशान्तिकराय श्रीजिनाय चरणाम्बुजायः ममः । यन्त्र-विधान



ऋडि-अहीं अहैं पमी उण्ह सीय णासए।

मन्त्र-४ नमो भगवते इत्स्यू नमः स्वाहा ।

गुण-- उमके प्रभाव से इकतरा, तिजारी, चीथंया आदि विषम-ज्यर दूर होते हैं ।

साधन-विधि — किसी एकान्त स्थान में हरे रंग के आसन पर, ईशान कोण को ओर मूँह करके बैठें तथा घड़ाझ की माला लेकर १४ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋदि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम अग्नि में गिरी एवं गुग्गुल मिश्रित धूप का निर्दोप करं। यन्त्र को अपने समीप रक्खें।

डक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग में लागें।

—: o :--

अस्त्र-शस्त्रादि स्तम्भक

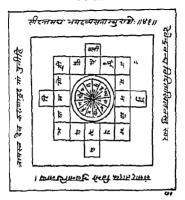
स्तोत्र-ग्लोक—देवेन्द्रबन्द्य चिदिताखिलवस्तु सार संसारतारक विभो भुवनाधिनाय त्रायस्य देवकरणाहृद मां पुनीहि सीदन्तगद्य भयदव्यसनाम्बुरायैः॥४१॥

ऋद्धि—ॐ हीं अहँ णमो यप्पलाहकारवाणं अमइसवीणं । सन्त्र—ॐ नमो भगवते हीं श्रीं वर्ली ऍ ब्लूं नमः स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक जप करने से शत्रु के अस्त्र-शस्त्रादि कुण्डित हो जाते हैं।

ॐ ह्वीं जगन्नायकाय श्रीजिनाय नमः।

यन्त्र-विद्यान



(स्तोत्र श्लोक संख्या ४१)

ऋद्धि—ॐ हीं अहं नमो बय्पसा हत्पए।

मन्त्र-ॐ नमी भगवते बंतवारि नमी हीं श्री बली ऐं ब्लूं नमः।

पुण-इस मन्त्र के प्रभाव से तीर, तलवार, भाला आदि अस्त्र-शस्त्र साधक को चायल नहीं कर पाते ।

साधन-विधि—किसी एकान्त स्थान में कासे रंग के आसन पर, पूर्वाभिमुख केंट तथा काले सूत की माला लेकर २१ दिनों तक नित्य १००० की संख्या में ऋढि-मन्त्र का जप करें एवं निर्धूय अगिन में नमक, मिर्म, गुग्युल तथा मृत मिथित धूप का निर्दोप करें। यन्त्र की अपने समीप रक्खें।

उनत निधि से मन्य के सिद्ध हो जाने पर उसे आवश्यकतानुसार प्रयोग मे लायें।

स्त्री-रोग नाशक

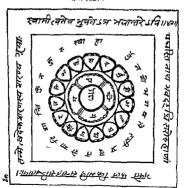
स्तोत्र क्लोकः—मधस्ति नाय भवदर्षित्र तरोष्हाणा, भवतेः फलकिमपि सन्ततसिष्टवतायाः । तन्मे स्वदेकज्ञरणस्य शरण्य पूषाः स्वामो स्वमेव भूवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥४२॥

स्वामा रवमेव भूवनऽत्र भवान्तरऽपि ॥४२॥ ऋदि—ॐ हर्ने अहं णमो इत्यिरत्तरी अणासयाणं अक्खीणमहाण-साण ।

मन्त्र-ॐ हो थीं बतीं ऐं अहं असिआउसा भूर्षुवः स्वः चकेष्यरी देवी सर्वरोग निंद निंद ऋढि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र का नित्य १०८ बार थडापूर्वक जप करने से स्त्रियों से सम्बन्धित समस्त कठिन रोग दूर होते हैं तथा समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

ॐ हीं अशरणशरयाय श्रीजिनाय नमः । पन्य-विद्यान



(स्तोत्र स्लोक सख्या ४२)

ऋद्धि—ॐ हीं अई णमो इस्यि रस रोअणासए।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते स्त्री प्रमूत रोगादि शान्ति कुरु फुरु स्थाहा । गुण—इसके प्रभाव में नित्रयों का प्रदर रोग दूर होता है, रक्त-

स्राव क्य जाना है नथा गभ का "पम्भन होता है।

साधन-विधि — किसी एकान्स-भाग में चित्र-विचित्र (रग-विरगी ल्गी) आसन पर, उत्तर दिका वी ओर मूँह करके बैठे तथा कदली फल (केला के फल) को माला लेकर, २१ दिनो तक नित्य १०६ की सख्या में श्रुद्धि-भन्त का जग नरे गगा निर्धुस अभिन से लौग, कपूर, चर्दन, इलायची, शिलारम एव घृत मिश्रित धूप का निक्षेप करे। यन्त्र को अपने समीप रखले तथा पदावती देवी की मूर्ति का शुमुशी रग के बस्त्राभूपणों से शृङ्गार करे।

जनत विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर उसे आवश्यकतानुसार

प्रयोग में लाये।

भय-नाशक एवं बन्धन-मोक्ष कारक

--. o :--

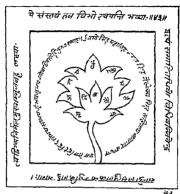
स्तोत्र-श्लोक—इत्थं समाहितधियो विधिवण्जिनेन्द्र सान्द्रोलसयुलक कञ्चुकिताङ्ग मागाः । स्वद्विम्बनिर्मलमुखाम्बुलबद्धलक्ष्याः ये संस्तयं तव विभी रचयन्ति मध्या ॥४३॥

ऋदि—ॐ हों अहे णमी वंदिमीअगाणं सम्वसिद्धाय दणाणं । मन्त्र—ॐ नमो भगवति हिस्म्विवासिन अस्तस्तमांसप्तियेन हयत-मंडलपद्दिषु तुह रणमते वहरणदुद्दे आवासमदि पायालमंडि सिद्धमंडि जोद्देणिमंडि सस्वमुहुमंडि कज्जलपडेज स्वाहा ।

विध-- कृष्णपक्ष को अप्टमी को ईशान दिशा की ओर मूँह करके इस मन्य का जब कर तथा काले घतुरे के बीजो के तेल का दीपक जला-कर, उससे नारियल के खोपरे में काजल पारें। उस काजल द्वारा कपाल पर श्रिप्तल का चिह्न बनाने तथा उसे नेशो में ओजने से सब प्रकार के भय दूर होते हैं तथा चित्त को उद्घिनता सान्त होती हैं।

ॐ हों चित्त समाधि मुतेबिताय भीजिनाय नमः।

यस्त्र-विधान



(म्लोत्र इलोक संख्या ४३)

ऋदि-अ हों अहं णमो बंदि मोअ गाए।

मन्त्र-ॐ नमी सिद्ध महाग्तिः जगत् सिद्ध जेलीवय सिद्ध सहिताय कारागार बंधन मन रोगं छिन्द छिन्द, स्तम्भय स्तम्भय जुंभय जुंभय मनी-बांछित सिद्धि कृत कुरु स्वाहा ।

गुण—इसके प्रभाव से बन्दी बन्धन-मृक्त हो जाता है, रोग शान्त

होता है तथा अभोष्ट कार्य सिद्ध होते है।

साधन-विधि-- किसी एकान्त स्थान में काले सम्यन के आसन पर, आमीय कोण की थोर मुंह करके बैठे तथा काने रंग के मूत की माला लेकर हुए दिनों तक निष्य १००० की मध्या में ऋडि-मरन का अप करे एवं निर्धुम-अपिन में चर्टन, गुणुस तथा लालमिर्च मिश्रित थ्रूप का निश्चेष करें। ग्रन्थ की अपने समीप स्वर्ध।

जक्त विधि में जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब उसे आवश्यकतानुसार प्रयोग में लायें। रोग-रात्रु नाशक एवं व्यापार-वर्द्धक स्तोत्र व्लोक--जननयनकपुदचन्द्र प्रभारवराः

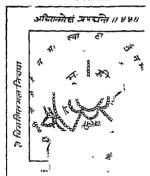
स्वर्ग सम्पदी भुद्धवा।

ते विगलितमलनिचया अचिरान्मीक्षं प्रपद्यन्ते ॥४४॥

श्चादि-ॐ हों अहें पानो अस्त्वयमुह्वायमस्य बङ्गार् मन्त्र--ॐ नट्टहुमयद्वाणे पणटुकम्मट्टनट्टसंसारे । परमट्टनिट्टलट्टे अट्टगुणाधीसरं संवे ॥

विधि--राई, नेमके, नीम के पेसें, कड़वी तूमडी गुगुल--इन पाँचो वस्तुओं को एकप कर उनत मन्त्र से अ फिर फिछले प्रहर में नित्य २०० बार हवन करने में रोग, का नाग होता है। जब तक कार्य सिद्ध न हों, तब तक ह पाहिए।

🌣 हीं परमशांति विद्यायकाय श्रीजिनाय नर यन्त्र-विद्यान



(स्तोत्र श्लोक सच्या 👀

ऋदि-ॐ हीं श्री बलीं नमः।

मन्त्र—ॐ नमी धरणेन्द्र पद्मावतीसहिताय श्रीं वर्ली ऐं अहं नमः स्वाहा।

गुण-इससे व्यवसाय में साभ तथा धन की प्राप्ति होती है।

साधन-विधि-- किसी एवान्त स्थान में लाल रंग के आसन पर, पूर्वाभिमुख के तथा मूंग को माला लेक्ट ४० दिना तक निर्द्ध १००० की सब्दा में ऋदि-मन्त्र का जप करें तथा निर्द्धम-अग्नि में पन्दन, कस्तूरा, शिलारस एवं कपूर मिश्रित धूप का निर्द्धिप करें। मन्त्र-जप की सम्पूर्ण अविधि में एकशान तथा भूमि-सथन करें तथा यन्त्र को अपने समीप रक्छ ।

अवाध म एकाशन तथा भूम-शयन के देता यन्त्र का अपन समाप रक्य । उन्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर, उसे आवश्यकतानुसार अयोग से सार्वे ।

आवश्यक-ज्ञातव्य

श्रीमक्तामर स्तोत्र दिगम्बर तथा श्वेताम्बर—दोनो जैन-सम्प्रदायो मे समान रूप से मान्यता एव प्रतिष्ठा प्राप्त है। इमने रचयिता श्री मानतुङ्ग आचार्य हैं, जिनका स्थित-काल राजा भोज के समय का माना जाता है।

विभिन्न कामनाओं को पूर्ति हेतु इस स्तोत्र को विभिन्न ऋदि तथा मन्त्रों के साथ प्रयोग में लाया जाता है। इस स्तोत्र के मन्त्र-साधन तथा यन्त्र-साधन की विधियों 'कल्याण मन्दिर स्तोत्र' की भाति १थक्-पृथक् न होकर एक ही है अर्थात् मन्त्र-यन्त्र साधना से पूर्व एक बार सम्पूर्ण स्तोत्र का श्रद्धा सहित पाठ करूँ, तदुपरान्त जिस कार्य विशेष के लिए मन्त्र-साधना करानी हो, उससे सम्बन्धित स्तोत्र-श्लोन को एक मोटे कायज पर बडे-बडे असरों में लिखकर साधनास्थलों में नखें, तदुपरान्त उससे यन्त्र को स्वर्ण, चौरी अथवा तांवे के पत्र पर खुदबाकर अपने समीप रखें, फिर 'साधन-विधि' के अनुसार ऋदि तथा मन्त्र का निश्चत सस्था में जप करें।

इस स्तोत्र की मन्त्र-यन्त्र साधना के समय भगवान् आदिनाय स्वामी की प्रतिमा को सम्मुख ग्यने से आरम-रक्षा होती है। यो, प्रतिमा को मम्मुख रखना आवश्यक नहीं माना गया है।

इस स्तोत्र के जिन ऋढि-मन्त्रों के साथ जप-सख्या का उल्लेख नहीं हैं, उन्हें २१ दिन तक नित्य १००० की सध्या में जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए। पूर्वीभिमुख, पवित्र आसन पर बैठना तथा सफेद सूत की माला पर जप करना चाहिए।

सर्विधान विनाशक

हतोतः—मस्तामर प्रणत मौति मणि प्रमाणा-मुद्योतकं दक्षित पावतमो वितानम् । सम्यक् प्रणम्म जिनपाद युगं युगादा-यालम्बनं भवजले पतनां जनानाम् ॥१॥

काडि--ॐ हीं अईणमो अरिहंताणं जमो किणाणं हां हीं हं हों हः अप्ति आनुता अप्रति चन्ने कट् विचयाय क्षी कों नमः स्वाहा ।

मन्य-ॐ ह्रां हीं ह्रं श्री क्तीं ब्लं को ॐ हीं नगः स्वाहा ।



साधन-विधि—पवित्रता पूर्वक नित्य १००० वार कट्टि-मन्त्र का जप करने तथा यन्त्र को अपने पास रखने में मब प्रकार के विध्न तथा उपध्य दूर होते हैं।

मस्तक-पोडा नाशक

क्लोक—यः संस्तुतः सकलवाड्मयतत्त्ववोधा दुद्दभूत बुद्धि गदुभिः सुरलोक नामैः। स्तोत्रेजंगित्तवय चित्त हरेरदारैः स्तोत्ये किताहमपि तंत्रयमं जिनेन्द्रम् ॥२॥ ऋदि-ॐ हों अहं णमो ॐ हो जिणाणं झौं झौं नमः स्वाहा । मन्त्र—ॐ हों शों क्सों ब्लूं नमः सकलार्थ सिद्धीणं।



साधन-विधि—िकसी एकान्न स्थान में काल वस्त्र धारण कर, काले आसन पर पूर्वाभिमुत नो दण्डासन से बैठे तथा कालो माला हाथ में लेकर २१ दिनो तक नित्य १०= बार अथवा ७ दिनो तक नित्य १००० की सख्या में ऋदि-मना का जप करने से काश्रु नष्ट होते हैं तथा सिर-दर्द दूर होता हैं। मन्त्र साधन-काल में नित्य हवन करना चाहिए तथा दिन में एक बार भोजन करना चाहिए। यन्त्र पास में रखने से आधु की दृष्टि बन्द (मजर-बन्द) होती हैं।

सर्व-सिद्धि दायक

ष्लोक—बुद्धया बिनाउपि बिबुधानितराद पोठ स्तीतुं समुद्यतमितिविगतत्रयोऽहम् । बातं बिहाप जनसंस्थितनिष्टुविम्य-मन्यः क इच्छति जनः सहसा गृहीतुम् ॥३॥

ऋद्वि—छ हीं अहैनमो परमोहि त्रिनानं झीं झों नमः स्वाहा । मन्त्र—छ हीं भीं नतीं सिढेम्मो बुढेम्य गर्वसिंड समके भ्यो नमः

स्वाहा। अन्मो भगवते परमतत्वार्यं भव कार्यसिद्धिः हां हीं हु हुः अस्वरूपाय नमः।



अभिमन्त्रित पानी के छोटे मुँह पर देने मे सब प्रमन्न होते हैं तथा यन्त्र को पास रखने से शत्रु को नजर बन्द होती हैं।

जल-जन्तु भय-मोचक

श्लोक—सक्तुं गुणान् गुण-समुद्र सारा द्वकान्तान् कस्ते क्षमः सुरगुरु प्रतिमो ऽपि बुद्धचा। कल्पान्त काल पवनोद्धल नक चक्रं को वा तरोतुमलमस्युनिधि मुजास्थान् ॥४॥ ऋदि—ॐ हों अहँगमी सन्वीहि जिल्लाणं झों झों नमः स्वाहा। मन्द्र—ॐ हों थीं बलों जलयात्रा जलदेवताच्यो ननः स्वाहा।



साधन-विधि—विसी एकान्त स्थान मे बैठकर, सफेद माला लेकर ७ दिनो तक नित्य १००० की संद्या में ऋदि-मन्त्र का जप कर तथा यन्त्र के कल देवताच्यो नमः स्थाहाँ इस मन्त्र द्वारा सात-सात बार एक-एक कंपडी को अभिमन्त्रित करने के बाद ऐसी २२ कर्षाच्या को पानी में टाल देने में उस जनावाय में महातियाँ आदि जल-जीय नहीं आते । मन्त्र-जप के समय खेत पुष्प चढाने चाहिए । पृथ्वी पर शयन तथा एक बार भोजन करना चाहिए ।

नेत्र-रोग-हारक

रलोक—सोऽहुं तवापि तव भक्तिवशान्पुनीश
कतुं स्तवं वियतग्रिक्तरिप प्रवृतः।
प्रीत्वाऽऽस्मवीर्यमयिवायं मृगी मृगेद्धं,
नास्पीत कि निजिप्तिशोः परिपालनार्यम् ॥१॥
ऋदि—ॐ हीं अहैं णमी अणेतीहि जिणाणं श्री श्री नमः स्वाहा।
मन्य—ॐ हीं औं वर्तों को सर्वेतंकट निवारणस्यः सुपार्य प्रकेष्यो
नमी नमः स्वाहा।



,क्षायत-विधि—किसी एकानः स्थान में पीने वस्त्र पहिन कर सथा श्लीते आसन पर बैठकर ७ दिनो तक नित्य १००० की मख्या में ऋदि-सन्त्र का खप करें तथा पीले रंग के पुष्प चढावें एव निर्धूम-अग्नि में कुन्दरू मिश्रित एप का निर्धेष करें । यन्त्र को तमीप रक्खें।

एंक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय जिस

व्यक्ति की आँख दुखती हो उम दिन भर दूखा रखकर सायकाल २१ मतासो को उक्त भरत म अनिनरित्त कर, तथा बनासो को पानी में बोम कर रोगी ब्यक्ति का गिनार जब मन्त्र में अधिमारित्रत जन के छोटे उसकी आंखों पर मारे। उत्तक रूख में हुई थोख ठीक हो जाती है। इस मन्त्र में अभिमारित्रत कर को जुए अथदा जनावार रेपार में सहल देने में उसमें साल रंग के कीछ नहीं पटन। यदि पठ पढ़े हो तो नष्ट हो जाते है। साधनकाल में यहन सम्बाधन काल में यहने समीप रखना चाहिए।

विद्या-प्रसारक

व्होक—अल्पभूतं यूतवता परिहास प्राप्त स्वद्मिनेसरेव मुझरीकुतते वसस्माम् । यक्तीकिल कित मध्ये मधुर्र विरोति तत्त्वाप्रवाप्त्रवारकतिका निकरंकहेतुः॥६॥ निक्ठि—कः हीं बर्द पेमो कुटु बुढोणं हारें हाँ तम. स्वाहा । मन्त्र—कः हीं बर्ग कों पूं स हम य य पः ठः ठः सरस्वती विद्या-प्रतास कुठ कुठ स्वाहा ।



साधन-विधि--िक्सी एकान्त स्थान में लाल रंग के आसन पर, लाल वस्त्र पहिनकर बेठे तथा २१ दिनों तक नित्य १००० को सख्या में मन्त्र का जप करे। यन्त्र को समीप रखं। पूजा के लिए लाल रंग के पुष्प हो तथा कुन्दक मिश्रिन धूप का निर्धूम-अप्ति में निर्भेष करें। साधना-काल में पृथ्वी पर शयन करे तथा केवल एक समय हो भोजन करें।

क्षद्रोपद्रव-निवारक

. श्लोक—स्वत्संस्तवेन भव सन्तति सन्निवढं पापं सणात् स्वयमुपेति शरीरमालाम् । आकारत लोक मिलनीलमशेषमाश् सूर्योगभिन्नमित्र शार्वरमन्यकारसा॥॥।

मूर्योगभिन्निमित्र शार्वरमन्यकारम् ॥७॥ ऋदि—ॐ हों अहें णमो बोज बुद्रोणं झों झों नमः स्वाहा । मन्त्र—ॐ हों हं सो श्रां श्रों की वर्तों सर्व दुरित संकट स्रोपद्रव कट्ट निवारणं कुर दुरु स्वाहा । ॐ हों श्री वर्तों नमः ।



साधन-विधि — किसी एकान्त स्थान में हरेरग के आगन पर पूर्यो भिमुख बैठकर, हरेरण की माना लेकर, २१ दिनो तक नित्य १०६ स ऋदिन्मन्त्रकालप करे। यन्त्रको समीप स्वये। प्रत्य हरेरगकातया

धप सोबान मिथित होनी चाहिए।

जनत विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर अभिमन्त्रित यन्त्र को गल में बौधने से सर्प का विष उत्तर जाता है। यदि मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कफड़ों को किसी सर्प के सिरपर मार दिवा जाय तो वह कीलित हो जाता है। यह मन्त्र सब प्रकार ने विषो को दूर करना है।

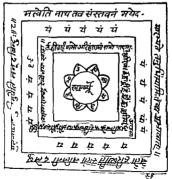
—: ० :---सर्वारिक्ट घोग निवारक

ग्लोक—मस्पेति नाप तव संस्तयनं मपेव मारम्यते तनुधियाऽऽपि तव प्रभाषाचे । चेतो हरिष्यति सत्तां नन्निनीरलेषु मुचताफलछुतिमुपैति ानुव विन्दुः ॥॥॥

ऋदि-अ हीं अहं णमी अरिहताणं णमी पादामुसारिण हार्गे हार्गे

मनः स्याहा ।

मन्त्र—ॐ हां हों हुं हों हुः असि आउसा अप्रति चक्रे कर् विव-काय स्त्रों स्त्रों स्वाहा । ॐ हों सक्सण रामचंद्र देव्ये नमः स्वाहा ।



साधन-धिधि—किसी एकान्त स्थान में बैठकर, रीठा के बीज की माला लेकर २१ दिनो तक निरय १००० का सब्धा में मन्त्र का 'जप करें। यन्त्र को अपने समीप रक्खें। गुग्गुल, पृत तथा नमक की डली मिश्रित धूप का निर्धुम अन्ति में निर्दोष करें।

मन्त्र-सिद्ध हो जाने पर आवश्यक्ता के समय नमक की ७ ढसी लेकर उन्हें १० = बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, उनके द्वारा किसी पीड़ित अंग को झाड़ा देने में पोड़ा दूर होती है। यन्त्र को अपने पास रखने से हर प्रकार के अध्युद्ध दूर होती हैं।

-: 0 :--

अभीष्तित फलदायक

क्लोक—आस्तां तद स्तवनमस्तसमस्त दोर्घ स्वत्संकया ऽपि जगतां दुरितानि हन्ति । दूरे सहस्रकिरणः कुरते प्रमंद, पुराकरेष जलकाम्नि विकासमाञ्जिः॥६॥

ऋदि-ॐ हों अहं गमी अस्तिताणं गमी समिष्ण होहेदराणं हों हों ननः स्वाहा । हों हीं हूं हुः कट् स्वाहा । ॐ नमी ऋदिये नमः ।

मन्त्र—ॐ हों श्री कों क्वों रः रः हह नमः स्वाहा। ॐ नमी कगवते जय यक्षाय हों हुंनमः स्वाहा।



साधन-विधि—उनन मन्त्र हारा ४ कक्रडियो को १०५ बार अभि-मन्त्रित करके चारो दिखाओं से फेंक्र देने से मार्च कौन्तित हो जाता है तथा चोर आदि किसी प्रकार का भय नहीं रहता।

क्कर-विध-निवारक

श्लोक-नात्यद्भुतं मुबन भूषण भूतनाय भूतेगुणेभूवि भवन्तमिष्ठ्यन्तः। जुल्बा भवन्ति भवती तत्रु तेन क्रिवा भूरवाधित य इह नात्मत्तमं करीति।।१०॥

ऋडि—ॐ हों अहे जभी सर्व चुडोर्च इग्ने हमें नमः स्वाहा । मन्त्र जनमध्यान तो जन्मतो वा मनोत्कर्य गुनावादिनीर्याना क्षांता भावे अत्यक्ष चुढानमतो हम्स्ट्यू ॐ हां हों ही हाः थां भीं थूं थः सिद्ध बुढ हतायों भव भव वयद संदूर्ण स्वाहा । ॐ हीं अहें जमो सन्नु विनासा-नाय जय पराजय उपसर्ग हराय नमः ययद सम्पूर्ण स्वाहा ।

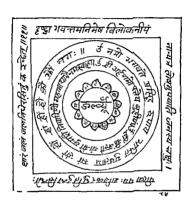


साधन-विधि--किसी एकान्त स्थान में पीने रग के आमन पर बैठे तथा पीले रग की माला नेकर ७ अथवा १० दिनो नक नित्य १०८ बार ऋदि-मन्त्र का जप कर। पीले रग के पुष्प चढाय तथा निर्धूम अग्नि मे कुन्दुरु मिश्रित धूप का निर्धेष करें। यन्त्र को अपने समीप रनख।

उन्त विधि से मन्त्र-मिद्ध हा जाने पर शावण्यवता ने समय १ नमक को उन्ते लेकर उसे १०= शार मन्त्र स शीशर्मान्त्रत गर, खिलाने से कुता काटे का विष असर नही बरसा । यन्त्र का बुना द्वारा काटे गये व्यक्ति के पास रखना चाहिए।

आकर्षण कारक एव वाछापूरक फ्लोक-इंट्वा भवन्तमिनमेय विलोकनीय नात्मत्र तोषमुपवाति जनस्य चलु । पीत्वा पय. शक्तिकर तृति दुःध सित्धो. क्षारं जल जतनिष्ठं रसितु क इन्हेत् ।१११। ऋद्धि - ॐ ह्रीं अहं णमोपत्तेय बुढीण ह्या ह्यी नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ हीं श्रीं बलीं श्रां श्रीं कुमति निवारिप्ये महामायं नमः स्वाहा । ॐ नमो मगवते प्रसिद्ध रूपाय भवित युक्ताय सां सीं सीं ह्रां हीं ह्रीं क्षों स्त्रों नमः ।



साधन-विधि—पवित्र वस्त्र धारण कर, लाल रंग की माला हाथ में लेकर २१ दिनो तक नित्य १०८ बार मन्त्र ना जप करे तथा निर्धूम-अग्नि में कुन्दरू की धूप दें।

कुस्त विधि से मन्य सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय स्नान स्त्र प्रविद्ध प्रस्त्र धारण कर, सफेर रग की माला हाथ में लेकर, खड़े होकर १०इ बार मन्य का जप करे तथा बन्य को समीप रक्खें। धूप, दीप, नैवेद्य स्त्रा फ्ल से अर्बेना करें। इसके प्रभाव संसाध्य-व्यक्ति का आकर्षण होता है और यह समीप चला अस्त्र है। हस्त-मदिवदारक एवं वांछित रूप दायक रलोक—यैः शान्तरागर्णविधः परमाणुमिस्त्वं निर्मापितिश्विभुवनेक सलामभूत । तावन्त एव सनु तेज्यणवः पृथिव्यां यसे समानमवरं न हि स्पमस्ति॥१२॥

यत्त समानमपर न हि रूपमास्त ॥१२॥ ऋद्धि—ॐ हो अर्ह णमो बोही बुडोण झाँ झाँ नमः स्वाहा । मन्त्र—ॐ आं आ अ अः सर्व राजा प्रजा मोहिनी सर्वजन बश्यं कुरु

कुए स्वाहा। ॐ नमो भगवते अनुल बल पराक्रमाय आदीस्वर यक्षाधीष्ठाय ह्रां

हों नमः। ॐ हों श्रो क्लीं जिनधर्मचिन्ताय झों श्रों र हों नमः।



साधन-विधि-किमी एकान्त स्थान में लाज रंग के आसन पर पूर्वी-भिमुख बैठें तथा ताल रंग की माला लेकर ४२ दिन तक नित्य १००० की सख्या में ऋदि-मन्त्र या जप कर तथा दशाग धूप से निर्धम-अग्नि में हवन करें। यन्त्र को अपने समीप रज्यें।

उनन विधि से जब मन्त्र-सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकता के समय इस मन्त्र में १०= बार अभिमन्त्रित-तैल हाथी को पिला देने से उसका मद उत्तर जाता है। प्रयोग के समय यन्त्र को अपने पास रखना चाहिए।

सम्पत्ति-दायक एवं शरीर-रक्षक

स्लोक—वनत्रं यव ते सुरतरीरण नैत्रहारि निःशेष निकित जगदीक्रतयोग्यानम् । दिम्बं कतन्द्र मसितं यय निज्ञाकरस्य यद्दातरे भवति पाण्ड पताशकरस्य ॥१३॥ ऋडि—ॐ हीं शहें पानी ऋजुमदीणं झ्रों स्त्रौ नमः स्वाहा । मन्त्र—ॐ हीं श्री हंतः हों हां द्वां द्वां द्वां सोहनी सर्वजनवस्यं कुठ

कुर स्वाहा । ॐ माना अस्ट सिद्धि की ही स्टब्स्ट्र युदताय नमः । ॐ नमो भगवते सीमान्य रूपाय हो नमः ।

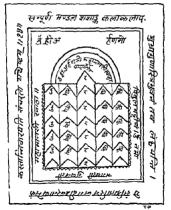


साधन-विधि-किसी एकान्त स्थान मे बैठकर, पीली माला लेकर ६ तो तक नित्य १००० को सब्धा में ऋदि-मध्य का जय करे तथा निर्मुम-अमि में कुन्यर की धुप है। १७६ी पर जयन नथा दिन में एक बार आहार करें। यन्त्र को समीप रखे।

उक्त विधि में मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर अवश्यकता के समय ७ ककडियाँ लेकर, उनमें से प्रत्येक को १०० बार मन्त्र में अभिमन्त्रित कर वारो दिशाओं में पेक दे। इसके प्रभाव से मार्थ में किसी प्रकार का प्रमुनहीं रहता तथा चीर चीरी नहीं कर पाता।

आधि-व्याधि-नाशक

ह्नोक-सम्पूर्ण मण्डत प्राप्ताञ्च कलाकलाव गुद्धां गुणास्त्रिभुवन तव लड्ड्यन्ति । ये सांश्रास्त्रिकगतशेखन नावमेक, कस्तान् निवारति तचरती यथेटम् ॥१४॥ ऋदि-ॐ ही नहं णमी विगुल महीणं डार्डे हमा स्वाहा । सन्त्र-ॐ ही नहं णमी विगुल महीणं डार्डे हमा स्वाहा ।



साधन-**धिधि** —यन्त्र को समीप रखंदे तथा ७ ककडियाँ लेकर प्रत्येक को उक्त सन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करके चारो दिशाओं में फूँक दें। .सके प्रभाव में व्याधि, शत्रु आदि का भय नहीं रहता। वान रोग नष्ट होता है तथा लक्ष्मों की प्राप्ति होती है।

सम्मान-सौभाग्य सम्बर्ख क

श्लोक — चित्रं किमन्न यदि ते निवसाञ्चनाधि-नीतं मनार्गाप मनो न विकारमार्गम् । कल्पान्तकाल महना चलिताचलेन कि मन्दराहिजिखर चलित कदाचित ॥१९॥

तसः १

ोक मन्दरादिशिखर चानत कदाभित् ।११२॥ ऋद्वि---ॐ होँ अहँ णमो दश युद्योण होँ हमेँ नमः स्वाहा । मन्द्र---ॐ नमो सग्वतो युणवतो सुतीमा पृण्यो चञ्च भूंखता मानती। महामानसी रवाहा ।

अं नमो अचित्य बल पराक्रमाय मर्वायं काम रूपाय हीं हीं को श्री

मिस मान प्रतिक नानित अवश्वात मानम् मानित मानम् मानम्

कार्यान्त्रकालमा वात्राचलन

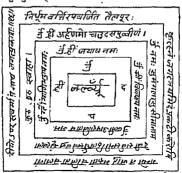
साधन-विधि—लाल रंग के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर तथा लाल को प्राता लिकर १४ दिनों तक नित्य १००० को संख्या में ऋदि-मत का जप कर तथा निर्धूम-अगिन में दशांग धून का निर्देश करें। भोजन दिन गर में केवल एक बार करें। बाज को समीप रखें।

जनत विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय तैल को २१ बार उनत मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपने मुँह पर लगाने से राज-दरवार में सम्मान मिलता है तथा सौमाग्य एवं लक्ष्मी की वृद्धि होती है। ~: •: •

मर्व-विजय टायक

क्लोकः — निर्देष वितरवर्षान्त तैसपूरः । कृत्स्मं नगरत्रयमिदं प्रकटो करोपि । गम्यो न जातु मस्तां चलिताचलानां दीपोऽपरस्त्वमति माय जगरत्रकागः ॥१६॥

ऋडि—ॐ हों अईंगमो चउदसपुत्वीणं झों झों नमः स्वाहा । मन्त्र—ॐ नमः सुमंगला सुप्तीमानाम देवी सर्वसमीहितार्षं सर्व वच्य भृ'खलां कृष कृत स्वाहा ।



साधन-विधि—हरे रंग को माना लेकर ६ दिनौ तक निस्य १००० की संख्या में ऋदि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि में कुन्दरू की धूप हैं। सन्त्र को समीप रक्खें।

उनत विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय १०८ बार मन्त्र को जप कर तथा यन्त्र को साथ लेकर राजदरदार में जाने से झत्रु का भय नहीं रहता। प्रतिपक्षी की हार होती हैं तथा स्वय को विजय मिलती हैं।

--: o :--

सर्व-रोग निरोधक

क्लोक—नास्तं कवाचिदुष्यासि न राहृगम्यः स्पष्टोकरोषि सहसा युगपञ्जगन्ति । नाम्मोधरोदर निदद्ध महाप्रमायः सुर्वातिसायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र सोके ॥१७॥

भूबातसायमाहुनाअत जुना असा सहस्या अहा का निर्मा हो। विकास के ही अही बमी अट्टांग महाणिमित्त कुरालाणं हों। हों। नमः

स्वाहा ।

मन्त्र-ॐ नमो णिम ऊण अहे महे सुद्र विघष्टे सुद्र पीडां जठर पीडां संजय संजय सर्व पीडा सर्व रोग निवारण कुरु कुरु स्वाहा ।

अ नमी अजित मानु पराजयं कुर कुर स्वाहा।

अ नास्त करानि द्रपणासि न राह प्रम्यः

अ नास्त करानि प्रमा अ नामि अ नामि

साधन-विधि—सफेंद रग को माला नेकर ७ दिनो तक नित्य १००० को संख्या मे ऋदि-मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अगिन मे चन्दन की धूप का निर्क्षेप करें। यन्त्र को ममीय रखखें।

उक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर अङ्गते जल को २१ सार अभिमन्त्रित करके रोगों को पिलाने में पैट की असहा पीड़ा, वायु सूल, गोला आदि रोग दूर हो जाते हैं। यन्त्र को रोगी के पास रक्खें।

-· • :-

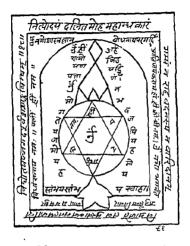
शत्रु-सैन्य स्तम्भक

क्लोक—नित्योदयं दलित मोह महान्यकार गम्यं न राहु बदनस्य न वारिदानाम् । विम्नाजते तथ मुखास्त्रमनस्य कान्ति विद्योतयण्जगदपुर्व गरााङ्क विम्बम् ॥१८॥

ऋदि-ॐ हीं अहं णमी बिउयण यहि पत्ताण हारों हारों नमः स्वाहा।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते जय विजय मोहय मोहय स्तंमय स्तंमय स्वाहा ।

ॐ नमो शास्त्रज्ञान बोधनाय परमाँउ प्राप्ति जयंकराय हां हीं कीं श्रीं नमः। ॐ नमो मगवते शत्रुसैन्य निवारणाय य यं यं कुर विम्बसनाय नमः। वर्ती हीं नमः।

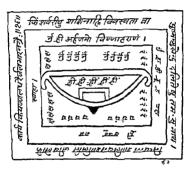


साधन-विधि-साल रग को माला लेकर ७ दिनो तक नित्य १००० की सब्या में मन्त्र का जप करें तथा निर्धूम-अग्नि में दशाग धूप का निर्धेप करें। दिन में केवल एक बार भोजन करें। यन्त्र को समीप रक्खें।

उबत विधि से मन्त्र के सिद्ध ही जाने पर आवश्यकता के समय १०८ बार मन्त्र का जप करने तथा यन्त्र की पास रखने से शत्रु की सेना का स्तम्भन होता है।

उच्चाटनादि रोधक

श्लोक—र्षिक गर्वरीषु प्रशिमाऽहिं विषह्यता था पुरमम्पुखेन्दु दनितेषु तमस्तु नाय निष्पन्नशालिवनशासिनि जीवलोके कार्यं क्रियञ्जल धरैजंतमार नम्नः ॥१८॥

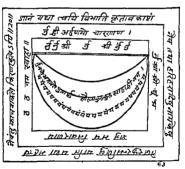


ऋढि—ॐ हीं अहं पमी विज्ञाहराणे हों हों नमः स्वाहा । मन्त्र—ॐ हां हीं ह्नं हुः यस हीं वयद नमः स्वाहा । साधन विधि—उनत ऋढि-मन्त्र का १०६ वार अप फरने तथा यन्त्र पास रखने से दूसरों के द्वारा किये गये मन्त्र, विद्या, जादू, टोना, मूठ आदि का असर गृही होता सवा उच्चाटन का भय नहीं रहता ।

सन्तान-सम्पत्ति-सौभाग्य प्रदायक

क्लोक—झानं यया स्विध विभाति कृतावकाश नैयं तथा हरिहरादियु नायकेषु। तेजः स्फुरन्मणिषु याति ययामहत्त्व नैय तु कावशकते किरणाकृतेऽपि॥२०॥

ऋदि—ॐ हीं अहैं णनो चारणाण हमें हमें नमः स्वाहा । सन्त्र—ॐ श्रां श्रें श्रं शत्रु भव निवारणाय ठः ठः नमः स्वाहा । ॐ नमो भगवते पुत्रार्थं सौहय कुरु कुरु स्वाहा । हीं नमः ।



साधन-विधि—उन्त मन्त्र को १०८ बार अपने तथा यन्त्र को पास रखने से धन सथा सन्तान की प्राप्ति होती है। सौमाग्य एव बुढि को वृढि होती है तथा विजय प्राप्त होती है।

सर्व सुख-सोभाग्य साधक

वलोक-मन्ये वरं हरिक्तावय एव हुट्टा हुएटेषु येपु हुवयं त्वयि तोयमेति । कि वोक्षितेन मक्ता भूवि येन नान्यः किक्नमनो हरित नाव मवान्तरे ऽपि ॥२९॥

ऋदि—ॐ ह्वाँ अहैगमो एशसमपाणं झाँ झाँ नमः स्वाहा । सन्त्र--ॐ नमः श्री माणिभद्र अय पिजय अपराजिते सर्व सौभाग्यं सर्व सौरवं कृष कृष स्वाहा ।

3% नमो भगवते शत्रुभय निवारणाय नमः ।

-)r er		टराद	יו או	7 2	97		\neg
9//28	<u> </u>			าธิบา		सम्मण		_	1
152	1		क्षां ६	i ei e	rे <i>झं झं</i>	e†			श्र
Hal	5416	Bj	Ŧ	Ħ	मो	74	£1.43	أينا) 세
all	80	ej ej	dī.	वार	णा	붜	48	77	4.
de.	189	Æ,	Þ	:FrE	4	4	61.61	\$	3
1	#	er. er.	н	Æ	125	₹	4	MI	378
E H	1			•	4 84			12	\$
#	نيا				ηλhπ				Ì
L	h	<u></u>	10 to	HE L	NBH	PPE	10	y	اـــ

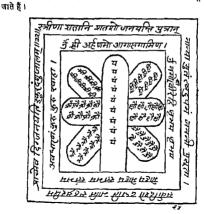
साधन-विधि—उपत मन्त्र को ४२ दिनों तक नित्य १०८ बार जपने तथा यन्त्र को अपने पास रखने से सब लोग अपने अधीन रहते हैं तथा सुख-सीमान्य की वृद्धि होती है।

भूत-पिशाच-बाधा-निरोधक

क्लोक—स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान् नान्या मुतं त्वडुपमं जननी प्रसूता । सर्वादिषो दधति भानि सहस्रर्रहम प्राप्येव दिग्जनयति स्फुरदंगुजालम् ॥२२॥

ऋढि—ॐ हीं अहं णमो आगासगामिणं झौं झौ नमः स्वाहा । मन्त्र—ॐ नमो थी बीरेहि जुंभय जुभय मोहय मोहय संस्प

स्तमम अवधारणं कुर कुर स्वाहा । साधन-विधि—जिस व्यक्ति को डाकिनी, शाकिनी, भूत, विशास, युडैल आदि लगे हो, उसे उक्त मन्त्र द्वारा २१ वार अभिमन्त्रित हुत्दी को गाँठ चुवाने को दें तथा यन्त्र को गने में बाँध दें तो उक्त सभी दोव दूर हो



प्रेस-बाधा-नाशक

इसोवः—स्वामामनिन्तं मुनयः परमे पुमास मादित्यवर्णममलं तमभः परस्तात् । स्वामेव सम्प्रपुष्तभ्य जपन्ति मृत्यु नान्यः शिवः शिवपदस्य पुनीन्द्र पन्याः ॥२३॥

ऋद्धि—ॐ हीं अहं पभी आसी विसाण ध्रों ध्रों नमः स्वाहा । मन्त्र—ॐ नमो भगवती जयावती मम समीहितायै मोक्ष सौख्यं कुरु

हुद स्याहा । ॐ ह्वाँ श्रीं वर्ली सर्वे सिद्धाय श्रीं नमः ।

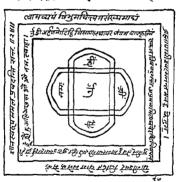
113311	त्वा	माम-	गुन्ति छुन	ग्यः यस	रं प्रमार	7-	
drett.		₫.z	ी अ _{टिण}	में) आसी	<i>विसाणं</i>	- /	_ <u> #</u>
5	10		* ***	7	* * * *		F 23
4	eare?	***	jf	2 €1.	-251) .	3.	नमा विका
ريع	6	4.	橡	न	र्वा]4	HAIR
Piar	8	4.	4	मृ	ঞ	4.	यी भ
3: 1	·F3	*	75.	#	步] []	37
मन्यः क्रि	汞		777	. .	7 4 4 4	,,	130 (Table)
Her.			- फ ्	5 th 3	there w	elt.	
[Ŀ	दे गुन्	בה היו	Sh lett + H	- क्रम	nto.
						٠	€£

साधन-विधि—सर्वप्रयम उन्त मन्त्र को १०८ वार जप कर अपने गरीर को रक्षा करें, तदुपरान्त जिस व्यक्ति को प्रेत-वाधा हो, उसे उक्त मन्त्र द्वारा झाड़ा दें तथा यन्त्र को समीप रक्खें तो सब प्रकार की प्रेत-वाधा दूर हो जाती है।

.सरोरोग-नाशक

क्लोक—स्वामध्ययं विभूमचिन्त्यमसंस्थमाद्यं श्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्ग केतुम् । ग्रोगोश्वरं धिदित ग्रोगमनेकमेकं झानस्वरूपममलं प्रवदित्त सन्तः ॥२४॥ श्रृष्टि —ॐ हों अहै जमो विद्वि चित्ताणं श्रों हों नमः स्याहा । मन्त्र—स्थावर जगमं वाद्यकृतिमं सकल विर्ययद्वभयतेः अश्रमणीमता-यये ट्रांच्यियमान् मुनीन् ते बङ्गमणस्वामी सर्थ हितं कुठ कुठः स्याहा ।

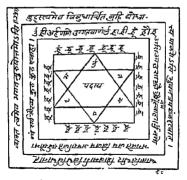
ॐ हो ही हुं हः असि आनुसा झौं झौं नमः स्वाहा ।



साधन-विधि—इस मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित की गयी राख को दुखते हुए सिर पर सगाने तथा यन्त्र को रोगी-व्यक्ति के पास रखने से सभी गिरोरोग दूर ही जाते हैं। मन्त्र का प्रतिदिन १००० बार जप अवस्य करते रहना चाहिए। म्लोक-बुद्धस्यमेय विवृधाचितवृद्धिबोधात

दृष्टि-दोय-निवारक

स्थं मद्धरोऽसि भुवनत्रय शद्धरत्वात् । धातासि धोर शिवमार्गपिधेविधानात् स्यवतं स्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥२४॥ ऋडि—ॐ हों अहं णमो उग्गतवाणं झों झों नम. स्वाहा । मन्त्र—ॐ हों हों हूं हों हः असि आउसा झों झों नमः स्वाहा । ॐ नमो भगवते जय विजय अपराजिते सर्व सौमाग्य सर्व सौस्यं कुर स्वर स्वाहा ।



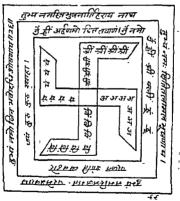
साधन-विधि—उनत मन्त्र की ६/-छत सब्या में आराधना करने तथा यन्त्र को अपने पास रखने से दृष्टि-दोष (नजर) उत्तर जाता है तथा आराधक पर अग्नि का प्रभाव भी नहीं होता।

आधासीसी-पीड़ा विनाशक

क्लोक—तुभ्यं नमस्त्रिभुवनाति हराय नाय तुभ्यं नमः क्षितितलामसभूषणाय । तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय तुभ्यं नमो जिन भवोवधि शोषणाय ॥२६॥

ऋदि—ॐ हीं अहंणमो दित्त तवाणं झौं झौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ नमो हीं श्रीयसीं ह्रं ह्रं परजन शांति ब्ययहारे जयं कुरु कुरु स्वाहा।



साधन-विधि—उनत मन्त्र द्वारा १०८ वारअभिमन्त्रित तैल को सिर पर लगाने तथा यन्त्र को पास रधने से आधासीसी आदि सब प्रकार के सिर-दर्द दूर हो जाते हैं तथा अभिमन्त्रित तैल को मालिश करने एवं अभिमन्त्रित दूध को पिलाने से प्रसुता स्त्री को शीध्र प्रसव होता है।

शत्रु-नाशक

श्लोक—को बिस्मयो ऽत्र यदि नाम गुनैरसैर्प स्त्यं सभितो निरचकासत्वा मुनीस । दोर्परवाल विविधायय जातगर्पैः स्वप्नान्तरे ऽपि न कदाचिदपीक्षितो ऽसि ॥२७॥

ऋदि—ॐ हों अर्ह णमो तत्ततवाणं झों झों नमः स्वाहा । मन्त्र—ॐ नमो चक्रस्वरो देवी चक्रधारिणी चक्रेण अनुकूलं साधय

साध्य शत्रूनुन्मूलय उन्मूलय स्वाहा । ॐ नमो भगवते सर्वायं सिद्धाय सलाय ह्रीं श्रीं नमः।

							-			
192	को दि	<i>}₹#</i>	पेर इ	यदि	नाम	र सुर	रे के	2) .		
I 🕸 I		É) vie	णमेग	तत्तर	वाणं	ार्ज न	में	. 1	쥥.
a) S.R.			ĢŦ	47	A	J ·	÷		चे	₹.
मिसितो	,	<i>i</i> ,	£	Ŧ	मो	ਮ	ग	§ .	240	3
J.	100	15	33	खा	य	ही	Ą	٤	1	ने ब
705	क स्व	in in	72	:#	Ŀ	\$	ð.	SI.	43	47.07
ς, φ	3.40	15	133	坍	₽	<i>₽</i>	4	Sı.	Sep.	व्या र
स्वकानारे	,		<u>ب</u>	#	ħ	Ľ	'n	1	43	177
1	ן ל	nμΣ	-DE	K EZ	n//Ł	anu	ڏس ج	Cto		13
\ `		÷	ple A	ו מנוני	rts II	19/6	121	ny h	ίξ	•
	_	_				_			ga.	,

साधन-विधि—काल रंग की माला पर २१ दिनो तक नित्य १००० की संख्या में मन्त्र का जप करने, काली मिचं का होम करने तथा दिन मे केवस एक बार असोना (बिना नमक) का भोजन करने से मन्त्र सिद्ध हो

जाता है। यन्त्र को अपने समीप रखना चाहिए।

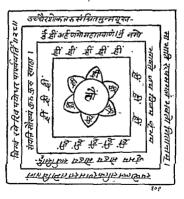
उक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर यन्त्र को पास रखने से शत्रु कोई हानि नहीं पहुँचा पाता ।

सर्व-मनोरथ पूरफ

श्लोक—उन्बेरशोकतरु संधितमुन्मवृष्ट मामाति रूपममलं भवतो नितान्तम् । स्पष्टोल्लसर्किरणमस्त तमो वितान विम्बं रवेरिव पयोधर पार्स्वर्धात ॥२८॥

ऋद्धि—ॐ हीं अहं णमो महातवाणं श्रों हरों नमः स्वाहा ।

मन्त्र--ॐ नमो भगवते जय विजय ज्ंभय ज्ंभय मोहय मोहय सर्व सिद्धि संपत्ति सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।



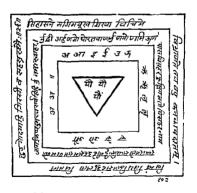
साधन-विधि—उक्त मन्त्र की नित्य आराधना करने तथा यन्त्र को अपने पास रखने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं। सुख, विजय तथा व्यवसाय मे साभ की प्राप्ति होती है। सभी मनोरस पूर्ण होते है।

नेत्र-पीड़ा निवारक

ध्लोकः—िसहासने मणिमयूक शिक्षा विचित्रे विधालने तव यपुः कनकाषदातम् । विम्यं विषद् विलसदगुलतावितानं तुङ्गोदणप्रिंशिरसीच सहस्ररमेः ॥२६॥

ऋदि-ॐ हीं अहं पमी घोर तबाणं हतें झों नमः स्वाहा ।

मन्त्र--ॐ णमो णिम कपायात विसहर फुलिंग मतो विसहर नाम-रकारमसो सम्बसिदिनीहे इह समरंताणमञ्जे जागईकप्युमच्च सम्बसिदि ॐ नमः स्वाहा ।

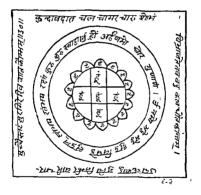


साधन-विधि--उक्त मन्त्र द्वारा १०६ वार अभिमन्त्रित पानी पिछाने तया यन्त्र को पास रखने से दुखती हुई आँखें अच्छी हो जाती हैं तथा विच्छू का विष उत्तर जाता है।

शत्र-स्तम्भन कारक

क्लोक--कुरवाबबात चलचामर चारु शोधं बिम्नाजते तव वपुः कलधौतकान्तम् । उद्यच्छताङ्कः शुचिनिशंर वारिधार मुज्वेस्तरं सुरगिरेरिय शातकीम्मम् ॥३०॥

श्राद्धि—ॐ हीं अहँ गमी घोर गुणार्ण झीं झीं नमः स्वाहा । मन्त्र—ॐ नमी अहे महे क्षुद्र विष्ट्टे क्षुद्रात् स्तंभव स्तंभव रक्षां कुरु कुरु स्वाहा ।



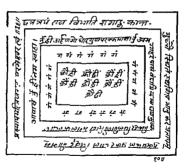
साधन-विधि—उन्त ऋढि-मन्त्र को आराधना करने तथा यन्त्र को पास रखने से शत्रु का स्तम्भन होता है तथा मार्ग ने चोर, सिंह आदि का भय नहीं रहता।

राजसम्मान-प्रदायक

श्लोक—छत्रप्रयं तव विद्याति शशाङ्ककान्त-मुक्तेःस्यतं स्विगतमानुकरप्रतापम् । मुक्ताफल प्रकर जाल विद्वृद्ध शोमं प्रस्यापयत् प्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

ऋद्धि—ॐ हों अहं णमो घोर गुणपरवकमाणं झों झों नमः स्वाहा ।

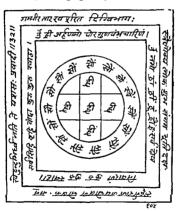
मन्त्र—ॐ उवसागहरं पासं बंदामि कम्मघणमुक्कं विसहर विसणि-र्णासिणं मंगल कल्लाण आवासं ॐ ह्वीं नमः स्वाहा ।



साधन-विधि--उनन मन्त्र को आराधना नथा यन्त्र को पास रखने से राजदरवार में सम्मान मिलता है तथा दाद-खाज आदि वे कष्ट दूर हो जाते हैं।

संग्रहणी-निवारक

ग्लोक—गम्भीरतार रव पूरित विग्विभाग हर्ष्टेमीक्य लोक गुभसङ्गम भूतिदलः। सद्धमराज जयधीयण घोषकः सन् चे बुन्दुभिष्टंबित ते यशतः प्रवादां ॥३२॥ ऋदि—ॐ हीं अहें जानो घोरगुणवमचारिणं झों झों नमः स्वाहा। मन्त्र—ॐ नमो हां हों हुं हीं हुः सर्वदीय निवारण फुर कुरु स्वाहा। सर्वासिद्विज्ञद्वि बांछो कुरु कुरु स्वाहा।

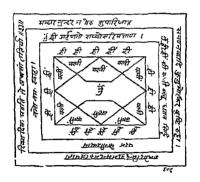


साधन-विधि—उक्त मन्त्र द्वारा क्वारी कन्या ने हाथ से कते हुए सूत को १०८ बार अभिमन्त्रित कर, उसे रोगो-व्यक्ति के गले में बौधने तथा यन्त्र को पास रखने से सब्रहणी आदि सभी उदर-धिकार नष्ट हो जाते हैं।

सर्व-ज्वर संहारक

ब्लोक-सन्दार सुन्दर न मेरु सुपारिजात सन्तानकादि कुसुमोत्कर वृष्टिरुद्धा । गध्योवविन्दुव् मन्दमरुद्धपता विच्या विवः पतित ते वचसां तित्वी ॥३३॥

ऋढि—ॐ हीं अहे णमो सब्बोसहिश्ताणं झाँ झी नमः स्वाहा । मन्त्र—ॐ हीं हीं श्रीं वेदो ब्लूं प्यानिसिंडि परम योगीस्वराय नमो नमः स्वाहा ।

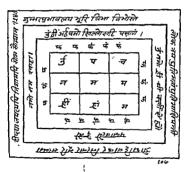


साधन-विधि—नवारी कन्या के हाथ से काते गये सूत को जक्त ऋदि-मन्त्र से २१ बार अभिमन्तित कर, जसका गडा बॉधने, झाडा देने तथा यन्त्र पास में खने से इकडरा, तिजारी आदि सभी ज्वर दूर हो जाते है। इस किया में चृत तथा गुगुल मिश्रित धूप का निर्धूम-जीन में निर्दोप करता चाहिए।

गर्भ-संरक्षक

श्लोक—गुम्मस्प्रमा बलय भूरि विभा विभोस्ते लोकत्रये शृतिमता शृतिमाक्षियन्तो । प्रोश्चद्दिवाकर निरन्तर भूरि मंख्या वीच्या जयस्विपि निशामिष सोमसौम्याम् ॥३४॥ ऋदि—ॐ हीं अहें णसो बिल्लो सहि पत्ताणं हों हों नमः स्थाहा । मन्त्र—ॐ नमी हों श्रीं वनों ऐं हों पद्माबस्य देव्यं नमी नमः स्वाहा ।

ॐ य च य म हां हीं नमः।

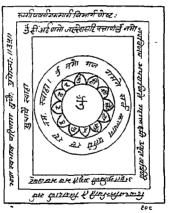


साधन-विधि—कुपुमी रण से रगे हुए कच्चे सूत को उक्त ऋदि-मन्त्र द्वारा १०० बार अभिमन्त्रित कर, उसे गुग्गुल की धूप देकर गर्भवती स्त्री के गले में बौध देने तथा यन्त्र को पास रखने से असगय में गर्भ नहीं गिरता।

ईति-भोति-निवारक

श्लोक—स्वर्गाववर्गगममार्ग विमार्गणेष्टः सहमं तस्व कथनेक पहुस्थितीक्याः। दिव्यध्वनिर्मवति ते विमादायसय मापाद्ययाव परियाम गुणैः प्रयोज्यः ॥३४॥ ऋति —ॐ हों अहे णमो जज्लो सहिष्याणं झों झों नमः स्वाहा। मन्य —ॐ ममो जय विजय अपराजिते महालक्ष्मी अमृत ययिणी

अमृत स्नाविणी अमृतं भव भव वषट् सुधाय स्वाहा । अ नमो गजणमन सर्वकल्याण मूर्तये रक्ष रक्ष नमः स्थाहा ।



साधन-विधि—इस मन्त्र की आराधना स्वानक (मन्दिर जो) मे करें तथा थन्त्र का पूजन करें। मन्त्र की आराधना करने तथा यन्त्र को पात रखने से दुर्भिक्ष, चोरी, मरी, ईति भीति, मिरगी, राज-भय आदि सभी कप्टों से छुटकारा मिनता है।

लक्ष्मी-प्रदायक

श्लोक- जिन्नद्रहेमनवपद्भुत पुञ्जकान्ति पर्युल्लसम्रहमयूल शिलाभिरामौ । पार्वौ पदानि तय यत्र जिनेन्द्र धत्तः पद्मीनि तत्र विमुद्याः परिकल्पवन्ति ॥३६॥

त्रहि-अ हीं अहं जमो विष्यो सहिपताणं हमें झीं नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ हीं श्री किल कुड दंड स्वामिन् आगच्छ आत्म मंत्रान् आकर्षय आकर्षय आत्ममंत्रान् रक्ष रक्ष परमंत्रान् छिव छिद समीहित कुठ कुठ स्याहा ।

1135	3f	नद्रहेम	नव पहु	र पुञ्ज	जनी <u> </u>	
1	2	र्ने ही अह	जमा दिव	नेस्मिट पत्त	णंर्जु ही ह	# 4 A
वरिकाय	2.447.61	Ĵ	_zi	æ ^{ff}	अी.	तिस्ट न विश्व इ
101	80 50€	77	-हां	.€l'	क्ली'	रं स्वा
गम्बद्धा	मसम्भ	च	-€:	ξ.	桑	के राज्य
द्याति तथ	18427	म	य	7	Ē	12.50 M
1	<u>In</u>	ter cr	Y FIRHH	ग्राह द क्रमु	othe Zaki	
		45 2	म खिने	क क	(1121-1	राष्ट
						60€

साधन-बिधि—इस यन्त्र का ताल पुष्पो के द्वारा १२००० की सख्या में जप करें, साथ ही यन्त्र का पूजन भी करें। इस म्हट्टि-मन्त्र की आराधना करने तथा यन्त्र को पाम रखने से सम्मत्ति का लाभ होता है।

दुष्टता-प्रतिरोधक

श्लोक—इत्य यथा तथ विभूतिरभूष्टिननेत्व धर्मोपरेशनविधी न तथा परस्य। यादक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्यकारा, तादक् कृतोग्रहगणस्य विकासिनोऽपि ॥३७॥ ऋदि—ॐ हीं अहं गमी सब्बो सहिपतार्ण हर्गे हर्गे नमः स्वाहा। मन्त्र—ॐ गमी भगवते अत्रतिचक्रे ऍ श्लों स्लूं ॐ हीं मनोबांछित सिद्ध्यैः नमी ममः। अप्रति चक्रे हीं ठः ठः स्वाहा।



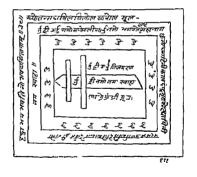
साधन-विधि—उक्त कृद्धि-मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित जल के छोटे मुँह पर मारने तथा यन्त्र को पास रखने से दुर्जन व्यक्ति वणीभूत होता है तथा उसको जिह्वा स्तम्भित हो जातो है।

हस्ति-मद-भंजक तथा सम्पत्ति वर्द्ध क

श्लोक—श्च्योतस्मदाविल विलोल कपोलमूल मत्त्रध्रमद् भ्रमर नाट विदृद्ध कोपम् । ऐरावताभिमभमुद्धतमापतन्त हस्द्वा भय भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥

ऋद्धि—ॐ हों अहैं णनो मणोवलीणं झों झों तमः स्वाहा । मन्त्र—ॐ नमो भगवते अध्ट महानाग कुलोच्चाटिनी कालबंस्ट्र-मृतकोत्यापिनी परमंत्र प्रणाशिनि देवि शासन देवते हों नमो नमः स्वाहा ।

ॐ हीं शत्रु विजय रणाग्रे ग्रांग्रीं ग्रूग्नः हीं नमी नमः स्वाहा।



साधन-विधि--जनत ऋदि-मन्त्र का जप करने तथा यन्त्र पास मे रखने से घन का लाभ तथा हाथी वश में होता है।

सिंह-शिवत-निवारक

ण्वाक—भिन्नेभकुम्भ गलपुरुग्वल शोणितावत मुबताफल प्रकर भूषित भूमिभागः। बद्धक्रमः कनगतं हरिणाधियोऽपि नाष्ट्रामति कम्पुगाचलसिभतं ते॥२६॥

ऋिं टि-ॐ हीं अहँ णमी वचोवनीणं हमें झों नमः स्वाहा । ॐ नमो एषु वृत्तेषु बर्द्धमान तव सबहरं वृत्तिवर्णावेषु मन्त्राः पुनः स्मर्तव्याः अतोना परमंत्र निवेदनाय नमः स्वाहा ।

113611	,	नेगर्ह र्न है	रुम्म र ने अर्ह	ात हु ज प्रश्लेष		शीरी जीपा		ď		ļ
t,	tem's		3	d 9	ते ह	भे 🎉	}	_	o.	394
12/10	T + 77	旅	ð	7	गो	2/	म	部	4	1467
Same	1920	穦	Ħ	-ĒŤ	追	-झी -झी	ai	Ŕ	ख ब्रेनेड	प्रकर ३
4 50	47.37	豫	į.	¥	h	JL.	2y	94	वर्डमा	10/A 3
	Tri	Ĺ	- €	£ 6	Æ (* #	ಕ್ಷ	•	700	4
į,		11/2	y y	'nξ	ik de	2010	cyà.	≥дън		4
•			45	wh	נול פעני	וניג ב	45	H463	R	•

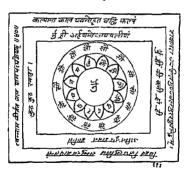
साधन-विधि—उक्त ऋढि-मन्त्र का जप करते तथा यन्त्र को पास रखने से सपं तथा सिंह आदि का भय नहीं रहता तथा भूला हुआ मार्ग मिल जाता है अर्थात् मार्ग मे भटकना नहीं पड़ता।

सर्वाग्नि-शामक

श्लोक-करपान्तकान पषनोद्धत बह्लिकर्प बाबानसं न्यलितमुज्ज्यसमुस्स्कृतिङ्गम् । विषयं जिधस्तुमिव सम्मुखमापतन्तं स्वम्रामकीतन्त्रज्ञनं समयस्यरोधम् ॥४०॥

ऋडि—ॐ हों थहँगमो कायवतीयं झों झों ननः स्वाहा। मन्त्र—ॐ हों श्रीं क्लीं हां हीं थिनिमुपसमनं झान्ति कृह कृद स्वाहा।

ॐ सौं हीं कों क्लीं सुदरपाय नमः।



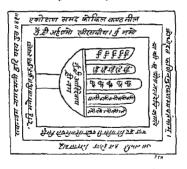
साधन-विधि—उनत ऋदि-मन्त्र डारा २१ बार अभिमन्त्रित जल को घर में चारो ओर छिडक देने तथा यन्त्र को पास रखने से अग्नि का मय मिट जाता है।

भजंग-भय-नाशक

श्लोक—रवतेक्षण समद कोकिल कच्ठ नीलं श्रोग्रोइत फाणनमुःकणमापतस्तम् । आक्रामति कमपुगेन निरस्तराङ्क स्त्यन्नाम नागदमनी हृदि यस्य पुतः ॥४१॥

ऋद्धि-ॐ हीं अहं णमो रवीरसवीण झों झों नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ नमो म्रां श्रं श्रं श्रं श्रं श्रः जलदेवि कमले पप्रहदनियासिनि पद्मोपरिसस्थिते सिद्धि देहि मनोद्याधितं कुर कुर स्वाहा । ॐ ह्रां आदि देवाय ह्रों नमः ।



साधन-विधि—उक्त म्हिंद मन्त्र के जप तथा यन्त्र को पास रखने से राजदरबार में सम्मान प्राप्त होता है। किसे के कटोरे में पानी भरकर उसे उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके सर्प-दिशत व्यक्ति को पिसा देने तथा मन्त्र का झाडा देने से सर्प का विष उत्तर जाता है।

युद्ध-भय-विनाशक

प्रलोकः— बरगतुरङ्ग गजगजित सीमनाद माजो बलं यलवतामिष भ्रुयतीनाम् । उद्यद्विकरमपूल शिखापिबद्धं स्वस्कीर्तनात्तम इवाशुभिवामुपैति ॥४२॥ ऋढि—ॐ हों अहं णको सप्पितवीणं झों झों नमः स्वाहा । मन्त्र--ॐ नमो निम ऊण विसहर विसप्रणासण रोग सोक बोस प्रह कप्पयुमच्चजाई सुहणामगहणसयल सुहदे ॐ नमः स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं बलपराक्रमाय नमः।

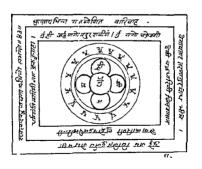
वल्याचुरङ्ग गलगाजित भीमनाद
अधिभट्टियम् एतिहरूको राविहरूकामा विकास वि

साधन-विधि—उक्त ऋदि-मन्त्र की आराधना करते रहने तथा यन्त्र को पास रखने से युद्ध का भय नही रहता।

सर्व शान्ति दाता

इक्षोक—कुन्ताप्रभिन्न गजजीणित वारिवाह वेगावतार तरणातुर वोधमोमे । पुढे जयं विजित दुर्वयजेवपक्षा स्रवत्पादपङ्गवनाश्रविणो लमन्ते।।४३॥

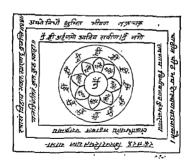
ऋद्वि—ॐ हीं अहै णमो महुरसवीणं होाँ शाँ नमः स्वाहा । मन्त्र—ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रघारिणी जिनशासन सेवाकारिणी क्षुद्रोपद्रविवासिनो धर्मशांतिकारिणी नमः कुर कुरु स्वाहा ।



साधन-विधि—उन्न ऋदि-मन्त्र की आराधना तथा यन्त्र का पूजन करते रहने से सब प्रकार का भव दूर होता है, युन में शस्त्रादि का आधात नहीं लगता तथा राजदरबार में धन का लाभ होता है। (१७४)

सर्वापत्ति-निवारक

ग्लोक—अम्भोनियी कृषितभीषण नक्ष चक पाठीनपीठ भयदोत्वण वाडवानी । रङ्गन्तरङ्ग शिखरस्थित यान ग्रात्रा स्वासं विहाय भवतः स्मरणाद् यजन्ति ॥४४॥ ऋडि—ॐ हीं आहं णमी आसियसवीणं झों झों नमः स्वाहा। मन्त्र—ॐ नमो रावणाय विभीषणाय कृशकरणाय सकाधिपतये महाबल पराक्रमाय मर्नास्वतितं कुरु कुरु स्वाहा ।



साधन-विधि—उन्त श्रृद्धि-मन्त्र की आराधना करने तथा यन्त्र को पास रखने से सभी विपत्तियाँ दूर होती है। समुद्र में दूफान का भय नहीं रहता तथा समुद्र-यात्रा सकुशन सम्बद्ध होती है।

जलोदरादि रोग नाशक एवं विपत्ति निवारक

श्लोक—उद्भूत भीषण जलोहर मारभुग्नाः शोज्यां वशामुग्गतास्त्रमुत जीविताशाः । श्वरपाद पञ्चज रजोऽमृत दिग्धवेहा, मर्ग्या भवन्ति मकरध्वजनुत्परूपाः ॥४५॥

ऋद्वि—ॐ हीं अर्ह णमो अवलोण महाणसाण झी झी नमः स्वाहा । मन्त्र—ॐ नमो नगवतो क्षुदोपद्रव शांतिकारिणो रोगकष्ट प्वरोप-शमनं शान्ति कुर कुर स्वाहा ।

ॐ हीं भगवते भयभीषण हराय नमः।

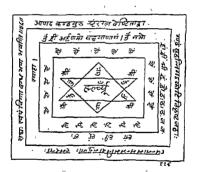
में प्रतामित क्या । । भारत	में अहं को इं	र्ड़ -टी रा	्रं स स	रा ह ग		र्म दशासुप्रमा
अन्दर्भका मुख्य स्था इस्ट इस्ट स्पाहर ।	; j	!	र भ य	म	4	मारमितार
345.400.30	1	!	य	24	4	uer A
13 13		_				
2 311	4 F	:H.	ম	32	F4	\$ 4
	2 12	He.	h	74	F4	3 3
अन्यात अन्याति । अन्याति ।	3,	23	ئڊ	23	_	nga nga
F	Helkhi	בער אזא	sof to	ې دعمار	jur	,
	135 -	الدارخ.	وبحهد	£6. 2	n) b	·

साधन-विधि—उक्त ऋढि मन्त्र की आराधना करने तथा यन्त्र को अपने पास रखने से सब प्रकार के बड़-से-बड़े भय दूर हो जाते हैं, रोग नष्ट होता है तथा उपसर्गादि का भय नहीं रहता।

बन्धन-मुब्ति दायफ

श्लोक—आपावकण्डमुरुगृङ्खल वेख्टिताङ्गा गार्ड बृहन्निगड कोटि निघृष्टजङ्घाः त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः सद्यः स्वयं विगतबन्यभया भवन्ति ॥४६॥

ऋडि—ॐ हों अहँ जमो बड़माणालं हों हों तमः स्वाहा। मन्त्र—ॐ नमो हां हों श्रीं ह्यूं हों हुः ठः ठः जः जः क्षां शीं श्रूं क्षः क्षः स्वाहा।



साधन-विधि—उक्त कृद्धि-मन्त्र का १०० बार जप करते रहने तथा यन्त्र को अपने पास रखकर उसका तीनों समय पूजन करने रहने में बन्धन (कारागार) से छुटकारा गिनता है तथा राजा चादि का मय दूर होता है।

अस्त्र-शस्त्रादि-निरोधक

श्लोक—मसङ्घिपन मृगराज बबानला हि संप्राम बारिधि महोदर बन्धगोरवर्ष् । तस्याशुं नाशमुज्याति षयं सियेव यस्तावकं स्तवसिमं मतिमागधीने ॥४०॥

ऋदि—ॐ हीं अहँ पमो पमो लोए सर्व्व सिद्धायदार्ग यहुनागाण ह्यो ह्यों नमः स्वाहा ।

मन्त्र—ॐ नमो हां हीं हुं हुः यक्ष श्री हीं फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते उन्मत्तभयहराय नमः।

THE THE STREET STREET		££) अर्ह	णभा लो	₹ ₹ /w	व सिंह	נטע	
The transfer of the transfer o		7	महर्भ	पहर अ	गहर अड	£.×	ą	
名 記 翌日 E 文 紀 M M 元 元 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日		7,465	Í	-77	भी	4	1 3	707707
The type of a factor of the control	1	130%	þ	ठ	77	*	킾	业
The type of a factor of the control	रवा.	يود	¥	He Fr	4	ধ	44	왕
The type of a factor of the control	N/	ķ	Ή	14-	T.	¥] \$	세
		٦,	23	hu D.	EK 22.	ላል ዊ ዴ ፡አይ	2	1
	ļ '							

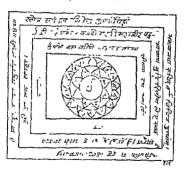
साधन-विधि—उक्त कृद्धि-मन्त्र को आराधना करने शत्रु पर चटाई मन्दने वाले यो विजय प्राप्त होती है, शत्रु वशीश्रुत होता है तया उसके अस्त्रादि निष्पत्त हो जाते हैं एव शस्त्रादि से पाण भी नरी लगता।

सर्व-सिद्धि दायक

ा — स्त्रीप्रधन्न तय जिनेन्द्र गुणैनिबढों भरत्यास्या रचिरवर्ण विचित्र पुष्पान् । प्रते जनो य इह कण्ठगतामजरां त मानधुङ्ग मबसा समुपति लक्ष्मीः ॥ ४६॥

श्रुद्धि--अही सह पनी मववदो महदिमहावीर बहुमाणाणं गुद्धि-रिशोजं लोए सन्ध साहूण झों झों नमः स्वाहा ।

मन्त्र —ॐ ह्रा हीं ह्यू हो हः श्रति आउसा ध्याँ ध्याँ नमः स्वाहा । ॐ जमो बंद्यनारिजे अद्वारह सहस्सतीलांग रथधारिजे नमः स्वाहा । ॐ हर्ति सम्बी प्राप्त्यं नमः ।



साधन-विधि--- उकन मन्त्र का ४६ दिनों तक नित्व १०६ की सब्या में जब करने तथा मन्त्र को पास रखने में मनोबाध्ति कार्यों की सिद्धि होती है तथा जिमें बमीभूत करना हो, उसका चिन्तवत करने में वह बम में हो ाक्षा है।

🞖 श्रिषमण्डल-यन्त्र-साधन

'ऋषि मण्डल-यन्त्र' की पूजा-साधना का विस्तृत विधान 'ऋषि मन्डल मन्त्र करूप' में टपलब्ध है, जो प्रकाशित है। यहाँ केवल सक्षिप्त विधि प्रस्तुन की जा रही है। इस विधि से बन्त्र-साधना करने से साधक की मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं तथा सादवे भव (जन्म) में मोक्ष पद प्राप्त होता है। विधि इस प्रकार है-- 'स्वयम्भू न्तोन्' की रचना श्री समन्तभद्व आचार्यने की थी। भाषाय जीवा जन्म दूसरी शताब्दी में हुआ था। ये काची नगर के निवासी तथा अपने समय के दिग्गज नैयाधिक तथा जैन-सिद्धान्त के प्रकाण्ड मर्मज थे।

अनुश्रति है—एक बार भस्मकं-व्याधि रोगसंग्रस्त होकर ये चरित्रप्रष्ट हो, देश-रेशान्तरों में प्रमण करते हुए काशी पुरी में पहुँचे। यहाँ
विज्ञ-मिन्दिर में नेवेब वडी मात्रा में चढता था। आचार्य सम्तम्ब्र युक्तिबल से उसे क्याट ने भीतर रहकर स्वय खा जाया करते ये। नैवेब चढ़ाने
वाले समझते थे कि उसे भयावान् शिव ही ग्रहण कर तेते हैं। कुछ समय
वाद जब गेग शान्त हो गया और नैवेब बचने लगा तो ब्राह्मणों को आचार्य
की चारामंगे पना चल गयी। उन्हें यह भी काल हो गया कि समस्तभ्र
स्वय जनाचार्य हैं, फलत उन्होंने वाशो-गरेश से इस वार्र में शिकायत
को। तब काशो-नरेश ने आचार्यों से कहा कि वे शिव-प्रतिमा को
नमस्कार वर, जैन-धर्म को त्याग दें। राजाजा सुनकर आचार्य जी ने कुछ
दिनों वा समय मांगा तथा उसी अवधि में 'स्वयम्भू स्तोत्र' को रचना को।
इस स्तोत्र की रचना हो जाने पर आचार्याजी के समस एक यक्षिणी प्रकट
हुई और उसने वहा कि जिस समय आप इस स्तोत्र का गाठ करके
विज्ञ-पिताना को नमस्नार करेंगे, उस समय वहाँ चन्द्रभ्र तीर्थंकर की
प्रतिमा प्रचट हो जायेगी, फलत आपका यश विस्तीणे होगा।

नियत समय पर जब काशी-नरेश तथा ब्राह्मण-वर्ग ने आवायंजी से पुन शिव-प्रतिमा को नमस्कार करने के लिए कहा तो आवायंजी ने वहीं स्वरचित स्वयम्भू स्तीम का पाठ प्रारम्म किया जिसका पहला वाक्य 'वन्दें भितन्य' जच्चाएण नरते ही शिव-प्रतिमा चन्द्रप्रभू को प्रतिमा के पर में परिवर्षित हो गयी। इस बाश्वयं को देखकर सब लोग हत्यभ रह गये। तदुपरान्त बाह्मणो के साथ आवायंजी का शास्त्रायं हुआ, उसमें भी वे विवर्ष रहे। बन्त में, राजा शिवकोटि सहित अनेक लोग आवायजी

ना शिष्यत्व गहण कर जैन धर्मानुयायी बन गये।

'स्वयम्भू स्तोध' के अतिरिक्त आचार्य समातभद्र ने और भी धनेश' प्रन्यों की रचना की। जिनमें से अब इस स्तोध के अतिरिक्त देवागम स्तोध या आप्तमीमासा, युक्त्यनुवासन, जिन शतक एउ प्रतक्रण्ड-श्रावकाचार ही उपलब्ध हैं।

'स्वयम्भू स्तोत्र' मे २४ तीर्थंकरो की अनय-अवग स्तुति की गयी है। इस स्तोत्र का नित्यपाठ करते से साधक की सभी मगोवामनाएँ पूर्ण होती है तथा किसी भी मनत्र-तन्य साधन से पूर्व हम स्तोत्र का पाठ करने से उसमे बीझ सफलता मिनती है। जिज्ञासु गाठको के लिए इस चमरकारो स्तोत्र को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. श्री आदिनाय स्तुतिः

स्ययम्गुवा भूतहितेन भूतले समञ्ज्ञसज्ञानविभूतिचलुवा ।
विराजित येन विधुन्तता तमः, स्वाकरेणेच गुणोरकरं फरं: ॥१॥
प्रजावतियं प्रयमं जिजीवियुः सतास कृष्यावियु कसंसु प्रजा. ।
प्रयुद्धतस्यः पुनरदृभूतोवयो ममस्यतो निविधिदे विदायरः ॥२॥
विहाय य सागरवारिवाससं वधूमियेमां यसुधावधूं सतीन् ।
पुनुभुरिरवाकुकुलाविरासवान् प्रमुः प्रववाच सहिंग्युरच्युतः ॥३॥
स्वदोषमूलं स्वसमाधिकसा निनाय यो निदंयमस्मसाहित्यामम् ।
जगाद तस्यं जगतेर्जयेरेऽञ्जसा वभूव च बहायदामृतेवदर. ॥४॥
स विरवचकुर्वृयमोर्जवतः सतो समयविद्यास्मवृतिकरः ।
पुनातु चेती मम मामिनन्दनो जिनो जित्तकुलकवादिरासनः॥॥॥

२. श्री अजितनाय स्तृतिः

प्रस्य प्रभावात् त्रिविवच्युतस्य कोझस्यिष कीवमुखारियन्दः।
श्रेवसायितम्प्रीय वन्ध्रुयगेश्यकार नामाजित इत्यवन्ध्यम् ॥६॥
अधायि यस्याजितशासनस्य सतौ प्रणेतुः प्रतिमञ्ज्ञवार्थम् ॥ प्रमृह्यते नाम परं पिवत्रं स्थसिद्धिकामेन जनेन लोके ॥७॥
यः प्राद्भुरासीरममुश्रवित्रभून्ना मध्याश्यालीनकलञ्ज्ञसात्यं।
महामुनिर्मृतस्यनोपदेशे यथारीयन्द्राभ्युद्याय मारयान्।॥६॥
येन प्रणोतं पृष्ट धर्मतीयं प्रेष्टं जनाः श्रास्य क्यनित दु खम् ।
साञ्चः ह्यं चन्दनपञ्जसीतं गज्ञप्रदेशः इय धर्मतत्याः॥६॥
स ष्रहृतिष्टः सप्रमित्रसप्र्यावित्रधान्तकल्यागदीयः।
स ष्रहृतिष्टः सप्रमित्रसप्र्यावित्रधान्तकल्यागदीयः।
लक्ष्यात्मतस्योराजितात्मा जिन थियं मे मण्यान् विधत्ता ॥१०॥

३. श्रो संभव जिन स्तुतिः

स्य शम्मय सभवतर्यरोगे सतय्यमानस्य जनस्य सोके।
जासीरहारुस्मित्र एव वैद्यो वैद्यो यथानावरुका प्रशास्त्र ॥११॥
। जियनगणमर्गायामि पण्यतिम्याव्यवायदीयम् ।
द्य जाउज्जन्मजरान्त्रान् गिरञ्ज ना शास्त्रिम् नामस्य स्था।
शातहृद्योनेयक्त हि सीस्य गुरणान्यायायनामान्तेषु ।
गुर्णाम्यृद्धिस्य तपस्यस्य तापस्तदायायायनामान्तेषु ॥११॥
वश्यस्य मोक्षस्य तयोग्य हेतु बद्धस्य मुक्तस्य फल च मुक्ते ।
स्याद्वादिनो नाथ तर्वय मुक्त नैकान्तरुर्व-स्वमतोर्डास शास्त्र ॥१४॥
शास्त्रेष्यस्य स्वत्रस्य पुण्यकीर्ते स्तुरस्य प्रवृत्त किन्नु माह्नोऽसः।
तथाणि भवत्या स्नुत्वादययो ममार्य देया शिवतातिमुक्वं ॥१२॥

४. श्री अभिनन्दन जिन स्तुतिः

गुणाभिनन्दार्शभनन्दमी भवान् यवा १५ क्षातिसखीमशिष्यान् । समाधिनत्रस्तदुषोपवस्तये हयेन नैग्रव्यपुणे चायुजत् ॥१६॥ अचेतने तत्हुनवत्पीर्धाप मभेदमित्याभिनिवेशस्यकृत् । प्रभदगुरे स्थावरनिभ्योने च स्त जगतत्त्वमाधिगृहदुभवान् ॥१७॥ क्षुधाविदु स्थातिकारत रियनिनं चेन्द्रियार्धप्रम्यात्पसीस्थत । तनो गुणो नास्ति च देहर्रहिनोरितीर्दामस्य भगवान् व्यक्तित्वत् ॥१६॥ जनोऽनितोसोऽप्यनुवत्थयोयते भयादकायप्यिह् न प्रवस्ति । इहारायनुवायनुवन्धयोपिद्दरस्य मुखे सत्वज्ञतीति चात्रवीत् ॥१६॥ त चानुवत्योस्यऽननस्य तायकृत्वारोभिन्दहि मुखतो न च स्थिति ।

श्री नुमित तीर्थकर्रति

अ वयसत्त सुमितर्स्तिनस्य स्यय मत येन सुयुप्तिनीतग् । पतस्य सेपेषु यतेषु नास्ति सवक्रियाकारणसत्वितिद्धि ॥२१॥ अनेकमेक च तदेव तस्य भेदान्यस्तानिम्द हि सरम् ॥२२॥ मृपोपावरोऽन्यतस्य सोपे तस्ययत्वीपार्धि ततोनुपाह्यम् ॥२२॥ गः वयवित्तदसस्यानित ते नास्ति पुष्प तस्य प्रसिद्धम् । तद्यान्यनावय्तुतमप्रमाण स्यवन्यित्वः तय दृष्टितोऽपत् ॥२२॥ न तद्या निरवापुरेत्वपैति न च क्रियाकारणम्त्र युवतम् । ।कास्तो जन्म सती न नासी दोपस्तम् पुद्गलमावतोऽस्ति ॥२८॥ विधिनिवेधरच कर्मचिद्रिस्टो स्विक्षया मुस्यगुण्य्यवस्या। इति प्रणीतिः मुमतेस्तवेयं मतिप्रवेकः स्तुवत्राऽस्तु नाय ॥२४॥

६. श्री पद्मप्रभ जिन स्तुतिः

पद्मप्रमः पद्मप्तारालेश्वः पद्मालयालिङ्गितचार्मूर्गतः।
यमो मथान् मध्यपयोरहाणां पद्मालराणामिय पद्मवन्तुः।।२६॥
यमार पद्मां च सरस्वतीं च मवान्युरस्तारमितृप्रितलक्ष्म्याः।।
सरस्वतीमेव समप्रशोमां सर्वजलक्ष्मी ज्वलिता विगुध्तः।।२०॥
सरीररिम्मयसः प्रमोदते बालार्करिमच्छिवरालिव ।
नमस्तलं पल्लवयमिय त्वं सहस्वप्रमान्युर्वार्भवारैः।
पादाम्युर्वः पातितमारवर्षे भूमो प्रमानं विज्ञहतं भूत्यै।।२६॥
गुणास्युद्धिवभूषमध्मलस्यं नात्यज्वस्तितुमसं तवर्षे।
प्रागेव मार्विकमुतातिमिवतमी बालमालाप्यतीविमत्यम्।।३०॥

७. श्री सुपार्श्व जिन स्तुति

स्वास्थ्यं धवारयन्तिकमेव पुसां स्वायों न भोगः परिभगुरात्मा ।
स्वारेज्वंगाग्न च तापमातिरितीदमास्यद्भगवान् सुवारवः ॥३१॥
अजङ्गमं जंगमन्यवन्त्रं यमा तथा जीवयृत शरीरम् ।
धोमस्यु पृति सचि तापमं च स्तेही युणानीति हितं स्वमास्यः ॥३२॥
असंप्यमाविवमंवितव्यतेय हेतुद्वयाविष्कृतकार्यसिङ्कः ॥३२॥
असंप्यमाविवमंवितव्यतेय हेतुद्वयाविष्कृतकार्यसिङ्कः ॥३२॥
अनीरवरी जन्तुरहं कियातः सहस्य कार्येश्वित साध्ववादीः ॥३३॥
विभेति मृत्योनं ततोऽस्ति मोशी निव्यमित्रं वाज्यति नास्य लामः ।
तथापि वालो मयकामवस्यो वृधा स्वयं सप्यतः इत्यवादीः ॥३४॥
सर्वस्य सरवस्य भवान्त्रमाता मोतेय वालस्य हिताबुग्रास्ता ।
गुणावनोकस्य जनस्य नेता ममाणि भवस्या विरावृद्योश्वरा ॥३३॥

प्री चन्द्रप्रभ तीर्थकर स्तुतिः

चन्द्रप्रमं चन्द्रमरीचिगौरं चन्द्र द्वितीयं द्यतीव कान्तम् । चन्देशितवन्दं महतामुगीन्द्र जित जितस्वान्तकवायवन्यम् ॥३६॥ यस्यान्तकमोपरिवेपमिन्नं तमस्तागोरेरित् रश्मिनिरम् । ननारा बाह्यं बहुमानसं च ध्यानप्रदीपातिशयेन मिन्नम् ॥३०॥ स्यवक्षाोरियव्ययमदाविम्सा धाकृतिहानार्वेविमदा बभुद्यः। प्रवाबिनो यस्य मदाईगण्डा गजा यया केशिरणो नितादः ॥३६॥ यः सर्वेलोके परमेष्टितायाः पदं बसूवाद्भृतकर्मतेजाः। अनःतपामाक्षरियश्यचतुः समन्तवुःखक्षयशासनस्य ॥३६॥ स दन्द्रमा भव्यष्टुमुद्रतीनां विपन्नदोवास्त्रकलञ्जूदेषः। व्याकोश्वराङ्ग्यायमयूलमातः पृष्यान् पवित्रो भगवान्मनो मे ॥४०॥

श्री पुष्पदंत तीर्थकर स्तुतिः

एकान्तर्हाट्यप्तिपंधि तस्यं प्रमाणिसद्धं तदतत्स्यमायम् ।
त्यथा प्रणीतं मुणियं स्वधान्ना नैतत्तमालोद्धपदं त्यवन्यः ॥४१॥
तदेव च त्यान्न तदेव च स्यात्त्या प्रतितिस्तय तत्क्यंचित् ।
नात्यन्तमन्यत्यमनन्यता च सिर्धोनियेपस्य च सून्यवीपात् ॥४१॥
नित्यं तदेवेद्यमिति प्रतितेनं नित्यमन्यत्प्रतिपत्तिसिद्धः ।
न तद्धिवद्धं चिहरन्तरङ्गानिमित्तनंमित्तकयोगतस्ते ॥४३॥
अनेजमेर्कः च पदाय व्याच्यं युक्ता इति प्रत्यवदप्रकृत्या ।
आकांक्षिणः स्यादिति व निपाता गुणानपेकोऽनियमेऽभयादः ॥४४॥
गुज्यधानार्यमिदं हि वावयं निमस्य ते तद् द्विष्यतामन्यस्य ।
ततोऽभिवन्यं जगदीश्वराणां ममाणि साधोस्तव पादपश्रम् ॥४४॥

१०. श्री शीतलनाय स्तुति

म श्रीतलारचन्द्रवनद्ररस्मयो न गाङ्गसम्भो न च हारयण्ट्यः।
यथा गुन्दतेऽनधवात्रयरस्यः श्रामंषुगर्माः शिविदा विविश्वतं ॥४६॥
युष्पामिन्तागानत्वातृष्मृष्टितं, मनो, निजं सानमयामृताम्बुष्तिः।
स्विद्यवरस्यं विवदाहमोहित यथा भिवग्मःत्रगुणैः स्वविद्यहं ॥४०॥
स्वश्मीनिने कामगुषे च तृष्णया दिवा श्रमात्तां निश्चि शेरते प्रशाः।
स्वसम्यं नवतंदियमप्रसत्तवानजागरेयात्मविगुद्धवर्तान् ॥४०॥
अपत्यवित्तोत्तरत्वोकतृष्या तपस्यनः केचन कमं कुवेते।
स्वानुतर्गनमत्तानित्ताया त्रयां प्रवृत्ति सम्प्रीरवाष्णव् ॥४६॥
स्वानुतर्गनमत्त्रानित्ताया त्रयां प्रवृत्ति सम्प्रीरवाष्णव् ॥४६॥
स्वानुतर्गनेवगितरतः वय निवृतः वव ते ११ बुद्धितयोद्धवस्ताः।
ततः स्वनिश्चेयसमाइनावर्युव्वप्रवेक्षंजनवीततेष्ठपते ॥४०॥

११. श्री श्रेयांश जिन स्तुतिः

श्रेधान् जिनः श्रेयति बत्मेनीमाः श्रेयः प्रनाः शासदनेवयास्यः । भवश्यकारो भुवनत्रवेधिसम्प्रेको यथावीतधनो विवस्यान् ॥४१॥ विधिवयक्तप्रतियेशस्यः प्रमाणमन्त्रान्यतरस्यधानम् । गुणोप्परो पुस्पनियामहेतुनंयः स हप्टाम्तसमयंनस्ते ॥४२॥ विवक्षितो मुख्य इतीव्यतेऽत्रयो गुणी विवक्षी न निरास्मकस्तै । तथारिमित्रानुमयाविशवितद्वयाविधः कार्य्यकरं हि धस्तु ॥५३॥ हब्दान्तसिद्धायुभयोविषावे साध्यं प्रसद्ध्येत्र सु ताद्गस्ति । यत्सर्वर्थकान्तनियामवृष्ट त्वदीयदृहिटविभयत्यशेषे ॥४४॥ एकान्तव्हिटप्रतिषेधितिद्विन्यीयेषु भिर्मोहरिषुं अतिसम् क्षेत्रत्यविभूतिसम्राद् ततस्त्वमहम्रति मे स्तवाहः ॥५५॥

१२. श्री वासुपूज्य स्तुतिः

शिषामु पूज्योऽप्युवयिक्यामु त्यं वामुपूज्यस्थिदरोन्द्रपूज्यः। मग्रापि पूज्योऽरुपियगमुनीन्द्र चीर्वाचिया कि तयनो न पूज्यः॥४६॥ न पूजवार्थस्त्विव धौतरागे न निन्वया नांथ विधातवरी । तथापि ते पुण्यगुणस्मृतिर्नः पुनातु चित्तं बुरिताञ्जनेन्यः॥१७॥ पूज्यं जिनं स्वाचेयतो जनस्य सावद्यलेशो बहुपुण्यराशी। बोदाय नालं कणिका विषस्य न दुविका शीतशियान्बुराशी।।५८॥ गुणदोषसूर्तेनिमत्तमभ्यन्तरमूलहेतोः । बाह्यं अध्यात्मवृत्तस्य तदञ्जभूतमध्यन्तरं केवलमप्यल ते ॥४६॥ बाह्येतरोपाधिसमग्रतेषं कार्येषु ते द्रव्यगतः स्वभावः। नैवान्यया मोक्षविधिश्च पुतां तेनाभिवन्द्यस्य मृषिर्वुधानाम् ॥६०॥

१३. श्री विमलनाथ स्तृतिः

य एव नित्यक्षणिकादयो नया मिनोऽनपेक्षाः स्वपरप्रणाशितः। त एव तस्त्रं विभलस्य ते मुनेः परस्परेक्षाः स्वपरोपकारिणः ॥६१॥ पर्यकताः कारकमर्थसिखये समीक्ष्य शेषं स्वसहायकारकम् । तथेव सामान्यविशेषमातृका नयास्तवेष्टा गुणमुख्यकल्पतः ॥६२॥ प्रसिद्धसामान्यविशेषयोस्तव । परस्परेक्षान्वयभेदलिखतः समप्रतास्ति स्वपरावमासकं यया प्रमाणं भृवि बुद्धिलक्षणम् ॥६३॥ विशेषवाच्यस्य विशेषणं वची यतो विशेष्यं विनियम्यते च यत । तयोश्च सामान्यमतिप्रसञ्यते विवक्षितारस्यादिति तेऽन्यवर्जनम् ॥६४॥ नयास्तव स्यात्पदसरयलाज्ञिकता रसोपविद्धा इह लोहधातवः। भवन्त्विमप्रेतगुणा वतस्ततो भवन्तमार्याः प्रणिता हितैविणः ॥६४॥

१४. अथ अनन्तनाथ स्तृतिः

, अनन्तबोषाशयिषप्रहो ग्रहो वियञ्जयान्मोहमयश्चिरं हृदि । यसो जिनस्तस्यरुची प्रसीवता स्वया ततो भूमंगयाननन्तजित् ॥६६॥

१७. श्री कुन्युनाय स्तुतिः

कुंयुप्रभृत्यस्तितसस्यदर्यकतानः कृथुजिनो च्यरजरामरणोपशान्त्यै । त्वं धर्मचक्रमिह वर्सयस्मिमृत्यं भूत्वापुरा क्षितिपतोश्यरचक्रपाणिः ॥६१॥

तृष्णाचिषः परिवहन्ति न घान्तिरासा-मिष्टेग्द्रियार्थविभवैः परिवृद्धिरैव । स्थित्यैव कामपरितापहर निमित्त--मित्यात्मवान्विषयमीस्ववेराङ्मुसोऽसूत् ॥=२॥ त्रपः परमदुश्चरमाचरंस्त्व-माध्यात्मिकस्य तपसः परिवृहणायम् । ध्यानं निरस्य कलुपद्वयमुत्तरस्मिन् ध्यानद्वये यवृतिषेऽतिशयोऽपन्ने शदशा हत्या स्वकर्मकदुकप्रकृतिश्चतस्रो रत्तत्रयातिशयतेजसि जातवीर्यः। सकलवेदविधेविनेता विम्राजिषे रयम्रे यथा विवति दोष्तर्रचिविवस्वान् ॥६४॥ यस्मान्मुनीन्द्र तव लोकपितामहाद्या विद्याविभूतिकणिकामसि नाप्नुवस्ति । तस्माद्भवन्तमजमप्रतिमेयमार्याः स्तुत्य रेतुवन्ति सुधियः स्वहितैकतानाः ॥८४॥

१८. श्री अरहनाथ स्तृति:

पुणस्तोकं सदुल्लंध्य तद्यहुद्यक्या स्तुतिः। अतनस्यातं गुणा यवजुमगययास्त्विय सा क्यम् ॥ ६६॥ तयापि ते मुनीन्द्रस्य यतो नामापि कीतितम् ॥ पुनाति पुण्यकीर्तेन्द्रततो कृपाम किञ्चन ॥ ६६॥ तथापि ते मुनीन्द्रस्य यतो नामापि कीतितम् ॥ पुनाति पुण्यकीर्तेन्द्रततो कृपाम किञ्चन ॥ ६६॥॥ स्तुत्रीभियामयत् ॥ ६६॥॥ साम्राज्यं सार्वमीमं ते जरत्नुजीम्बामयत् ॥ ६६॥ तव रूपस्य सौन्द्रयं इध्द्या तृत्तिमनापियान् ॥ ह्यसः शाकः सहस्राक्षो यमूत्रं बहुविस्तयः ॥ ६६॥ मोहरूवे रिष्टुः पापः कथायमस्ताधनः ॥ ह्यस्तिस्तर्युक्तस्यत्वस्तयः ॥ ६६॥ कन्वस्यस्ताधनः ॥ इद्यत्तास्यस्त्रास्तरस्या ॥ द्याः स्त्रास्तराद्वितः ॥ ६६॥ कन्वस्यविद्यान्त्रस्याः ॥ द्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ हृशाः कन्वस्यविद्यान्त्रस्याः ॥ द्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ हृशाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ द्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ इत्यान्तराद्वाः ॥ द्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ इत्यान्तराद्वाः ॥ द्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ इत्यान्तराद्वाः ॥ द्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ द्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ द्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ इत्यान्तराद्वाः ॥ द्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ द्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ द्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ द्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ द्वाः स्वराद्वाः ॥ द्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ द्वाः स्त्रास्ताद्वाः ॥ द्वाः स्त्रास्त्रास्तिः ॥ स्त्रास्तराद्वाः ॥ द्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ स्त्रास्तराद्वाः ॥ स्त्रास्तराद्वाः ॥ स्त्रास्तराद्वाः ॥ स्त्रास्तराद्वाः ॥ स्त्रास्तराद्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ स्त्रास्तराद्वाः ॥ स्त्रास्तराद्वाः ॥ स्त्रास्तराद्वाः ॥ स्त्रास्तराद्वाः ॥ स्त्रास्तराद्वाः ॥ स्त्रास्वाः स्त्रास्तराद्वाः स्त्रास्तराद्वाः ॥ स्त्रास्तराद्वाः ॥ स्त्रास्तराद्वाः ॥ स्त्रास्तरस्तराद्वाः ॥ स्त्रास्तर्वाः ॥ स्त्रास्तर्वाः स्त्रास्तर्वाः ॥ स्त्रास्तर्वाः स्त्रास्तर्वाः ॥ स्त्रास्वाः स्त्रास्तर्वाः ॥ स्त्रास्तर्वाः ॥ स्त्रास्तर्वाः स्त्रास्तर्वाः

कवायनात्नां द्विपतो अमाथिनामधैषयग्नाम भवानशेषयित् । विज्ञोषणं मन्त्रयदुर्मदामयं समाधिर्मयन्वयुर्णयोनात्रयत् ॥६७॥ परिक्रमान्दुर्भयनीचमातिनी त्वया स्वतृत्वासिरिदायंशीपिता । कसंग्रधर्माकंगमस्तितेमसा परं ततो निवृतिष्ठाम तावकम् ॥६८॥ सुद्धत्वयि श्रीमुभात्वमन्त्रते द्वियन् त्विय प्रत्ययवत्प्रभीयते । स्वानुवासीनतमस्तयोरिप प्रभो परं विश्वमिदं तविहृतम् ॥६६॥ स्वमीदुशस्तावृत्र इत्ययं सम प्रलायलेगोऽस्वमतेर्महायुने । क्षत्रेयमाहास्म्यमनीरयप्रिषि शिवाय संत्यग्रं इवामृताम्बुधैः॥७०॥

१५. श्री धर्मनाय स्तुतिः

धमेतीयेमनधं प्रवर्त्तयम् धमं इत्यनुमतः सतो मवान्। क्रमंकलमवहत्तपोऽनिमिः शमं शारवत्तमवाप शङ्कर. ॥७१॥ देवमानविनकायस्तमे रेजिये परिवृत्तो बृतो बुग्धेः। तररकापरिवृत्तोरितपुष्कत्तो स्योमनीव शशत्ताङ्कतोऽमतः ॥७२॥ प्रातिहार्यविभवः परिष्कृतो देहतोऽपि विरतो भवानमृत्। मोक्षमार्गमधियकरामराशिष सांसनफर्त्तयणादुरः ॥७३॥ क्रायवावयमनसां प्रवृत्तयो नाडमयस्तव मुनेदिवकीर्यया। नासमीस्य भयतः प्रवृत्तयो धीर तावकमचिन्त्यमोहितम् ॥७४॥ मानुर्यो प्रकृतिमभ्यतीतवान् देवतास्यपि च देवता यतः। तन नाष परमासि देवता श्रेयसे जिनवृत् प्रसीद नः ॥७३॥

१६. श्री शान्तिनाथ स्तुतिः

विद्याय रक्षां परतः प्रजानां राजा चिरं योऽप्रतिमग्रतायः।
व्यद्यात्पुरस्तात्स्यत एव शान्तिर्मृनिरंपामृतिरिवाधमान्तिम् ॥७६॥
चक्रेण यः शत्रुभयंकरेण जिस्या नृरः सर्वतरेन्द्रवक्षम् ।
समाधिषक्रेण पुनिजाध महोदयो दुर्णयमोहचत्रम् ॥७०॥
राजिया राजसु राजांतहो रराज यो राजानुमोगतन्त्रः।
आहंन्यतक्ष्म्या पुनरात्मतन्त्रो देवासुरोवारसमे रराज ॥७०॥
यस्मत्रमृद्राजिन राजवकं मुनौ रयावीधित धर्मचक्रम् ॥७६॥
पूज्ये मुद्वः मौजति देवचक ध्यानोन्तुवे ध्वित क्रनात्वकम् ॥७६॥
स्यदोषसान्त्याविहितात्मग्रान्तिः ग्रान्तिविद्यात शर्ण्यातानाम् ।
भूयाद्मवक्ष्मेत्रमार्थे शान्तिज्ञिनो मे भगवान् शरण्यः॥॥०॥

१७. श्री कुन्युनाय स्तृतिः

कृंगुप्रमृत्यखिलसस्यवयैकतारः कृर्युजिनो ज्वरजरामरणोवशांस्यै । स्थं धर्मचक्रमिह् बत्तंयस्मिमृत्यं भूस्वापुरा क्षितिवतोस्वरचकवाणिः ॥दश्।

तृष्णाचिषः परिवहन्ति न शन्तिरासा-मिष्टेन्द्रियाधंविभवेः परिवृद्धिरेव । श्यित्वेव कावपरितापहर निमित्त-मित्यात्मवान्त्रिययसीस्वयराङ्मुखोऽसूत् ॥६२॥ बाह्यं तपः परमृश्यनरमाचरंस्त्व-माध्यात्मिकस्य तपसः परिवृहणायम् । ध्यानं निरस्य कलुपद्वयमुत्तरस्मिन् ववृतिचेऽतिशयोपपन्ने ॥द३॥ ध्यानद्वये स्यकम्कद्रकप्रकृतिश्चतस्रो रत्नत्रयातिशयतेनसि जातवीर्याः। सकलयेदविधेविनेता विम्राजिपे व्यम्ने यथा विवृति दोष्तर्शचिविवस्वान् ॥६४॥ यस्मान्मुनीन्द्र तव लीकवितामहाद्या विद्याविभूतिकविकासित नाप्युवन्ति । तस्माद्भवेन्तमजमप्रतिमेयमार्थाः स्तुत्य स्तुवन्ति सुधियः स्वहितैकतानाः ॥८५॥

१८. श्री अरहनाय स्तृति:

आयत्यां च तदास्ये च वुःखयोनिनिरसत्ता। तृष्णानदो स्वयोत्तीर्णा विद्यानावा विविक्तवा ॥६२॥ अन्तकः ऋन्दनो नृषां जनगण्वरसाखा सदा। स्वामन्तकान्तकं प्राप्य व्यावृत्तः कामकारतः ॥६३॥ भुवावेषायुध्यागि । विद्यादमस्यापरम् । रूपमेव तवाचच्टे धीर दोपविनिग्रहम् ॥६४॥ समन्ततोऽङ्गभासां ते परिवेषेण भूयसा। तमो बाह्यमपाकीर्णमध्यातमं ध्यानतेजसा ॥६५॥ सर्वज्ञयोतिषोद्भूतस्तावको महिमोदयः। कं न कुर्यात् प्रणेष्ठं ते सत्त्वं नाय सचैतनम् ॥६६॥ यागमतं श्रीमत्सर्वभाषास्वभावकम् । त्रीणयत्यमृतं यद्वत् प्राणिनो व्यापि ससदि ॥६७॥ अनेकान्तारमद्ध्टिस्ते सती शुन्यो विपर्ययः। त्ततः सर्वे मूर्योक्तं स्यात्तवयुक्तं स्वधाततः ॥६८॥ ये परस्वतितोत्रिद्धाः स्वदोवेभनिनीतिनः। तपस्विनस्ते कि कुर्युरपात्रं स्वन्मतथिय: ॥६६॥ ते तं स्दघातिनं दोपं शमीकर्त्तुमनीश्वराः। रवद्द्रियः स्वहनो यालास्तरःयावनतय्यतां थितां ॥१००॥ सदेकनित्यवयतव्यास्तद्विपक्षात्रच ये सर्वथेति प्रदुष्यन्ति पुष्यन्ति स्वावितीहिते ॥१०१॥ -नियमत्यागी यथादृष्टमपेक्षकः । स्याच्छब्दस्तावके न्याये नान्येपामात्मविद्विषाम् ॥१०२॥ अनेकास्तोऽध्यतेकास्तः त्रमाणनयसाधनः । अनेकान्तः प्रमाणान्ते तदेकान्तोर्जपतामयातु ॥१०३॥ इति निष्पमपुष्तिशासनः प्रियहितयोगगुणानुशासनः। अरजिनवमतीर्यनायकरत्वमिव सतां प्रतिबोधनायकः ॥१०४॥ मतिगुणविभवानुरूपतरत्वि यरदागमद्दिरूपतः। गुणक्रुरामपिकिरचनोदितं मम भवतादुरिताशनोदितम् ॥१०५॥

१६. श्री मल्लिनाय स्तुति:

यस्य महर्षेः सकलपदार्थप्रत्यवदोधः समजनि साक्षात् । सामरमर्त्यं जगदिव सर्वं प्राञ्जलिमृत्या प्रणिपतित हम ॥१०६॥ पस्य च मृतिः कनकमयीव स्वस्कुरदामाकृतपरिवेषा । धागिव तस्यं कषितुकामा स्यात्मउपूर्वा रममित साधून ॥१००॥ यस्य पुरस्ताद्विगतितमाना न प्रतितीक्यां कृषि विववत्ते । मूरिष रम्या प्रतिपदमासीग्जात्तविकाराग्युजमुद्दुस्ता ॥१०॥॥ यस्य समग्ताज्जिनशितिरांशोः शित्यकतायुग्वहिषमवीऽसून । तीर्यमिष स्यं जननसमुद्रमासितसस्योत्तरणयोज्यम् ॥१०॥॥ यस्य च गृक्तं परमत्तयोऽनिग्यानमनतं दृत्तिमयाक्षीत् । तं जिनविहं कृतकरणीयं /मिल्लमशल्यं मरणमितीऽनिम ॥११०॥

२०. श्री मुनिसुवत जिन स्तुति:

सिंघगतमुनिमुखतिस्वितिर्मृतियृग्यते मुनिगुखतीःनयः ।
मुनिगरियदि निर्दमी मवानुङ्वरिगरत्यरिवोत्ततीमयत् ॥१११॥
परिणतिशितकण्टरागमा कृतमदनियद्वियद्वामया ।
तविज्ञतस्यः असूत्रमा पहुर्तारिवेदवेच शोभितम् ॥११२॥
शाश्चित्वविव्यक्ष्मित्वे सुरिभातरं विरक्षो निर्म यपुः ।
तव गिवमतिविद्यमयं यते पदि च वाङ्ममनतोऽपमीहितम् ॥११३॥
स्वितिव्यनिर्देशमा परमचरं च चगरमितिश्चम् ॥११३॥
स्वितिव्यनमारीयस्या परमचरं च चगरमितिश्चम् ॥११३॥
स्वितिव्यनमारीयस्या निरम्मयं वता परस्य ते ॥११४॥
सुरितमनस्यक्तमार्थः निर्दम्योगवनेन निर्देश्च ।
अभववभवनियवान् भवान् भवनु ममापि मदीपगीतये ॥११॥

२१. श्री निमनाय जिन स्तुति:

स्तुतिस्तोतुः साधो कृश्यलपरिणामाय स तदा, भवेन्मा या स्तुद्धः फलमपि ततस्तदम् च सतः । किमेदं स्वाधोनाज्जगित मुलमे श्रायसप्ये, स्तुयाम्नद्या पिद्धान्मस्तामपि पूर्व्यमेमिणिजम् ॥११६॥ त्वधा धीमन् बद्धात्रणिधमनसा जन्मनियलं । समूलं निर्मित्नं त्वस्तात विद्वयां मोश्यदयो ॥ स्वितं निर्मित्नं त्वस्ताति स्वाधि जानज्योतिविभयकिरणंभाति भयवन् सम्बन्धन्यति द्या श्रावित्यास्यत्मस्यः ॥११७॥ विद्ययं धार्यं चानुमयमुभयं निथमपि तत् । विद्ययं धार्यं चानुमयमुभयं निथमपि तत् । विद्ययं प्रत्ये स्वत्यन्यत्मस्यः ॥ स्वत्यन्यत्मयद्याम् साम्यन्यस्य स्वाम्यन्यस्य स्वाम्यस्य स्यस्यस्य स्वाम्यस्य स्वाम्यस्य स्वाम्यस्यस्य स्वाम्यस्य स्वाम्यस्यस्य स्वामस्यस्य स्वामस्यस्य स्वामस्यस्य स्वामस्यस्य स्वामस्यस्यस्य स्वामस्यस्यस्य स्वामस्यस्य स्वामस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्

ब्रहिसामुतानां जगित विदितं ह्राय परमं।

न सातत्रारम्मोस्त्यपुरिष च यत्राध्मविद्यौ ॥

ततस्तरिसद्धधर्यं परमकश्यो पग्यमुष्यं।

भवानेवात्याशील च विकृतवेयोपधिरतः।।११६॥

यपुर्मृपावेयय्यवधिरिहेत गान्तिकरणं।

यतस्तं सचट्टं स्मरारावियातंकविकायम्।।

विता मीमः शस्त्रेरव्यहृदयामपिवितयं।

ततस्तं निर्मोहः शरणमिस नः शांतिनिनयः।।१२०॥

२२. श्री नेमिनाथ जिन स्तुति:

भगवानपिः परमयोगदहनहुतकत्मपेन्धन.। ज्ञानविषुलिकरणैः सकलं प्रतिबुध्य बुद्धकमलायतेक्षणः ॥१२१॥ हरिवंशकेतुरनवद्यविनयदमतीर्थनायक. शीलजलधिरमवो विभवस्त्वमरिष्टनेनिजिनकुजरोऽजरः ॥१२२॥ त्रिदशेन्द्रमौलिमणिरत्नकिरणविसरोपचुम्बितम् । पादपुगलममलं भवतो विकसत्कुशेशयदलारणोदरम् ॥१२३॥ नसचन्द्ररश्मिकवचातिरुचिरशिखराड्गुलिस्थलक्षः स्वार्थनियतमनसः गुधिय प्रणमन्ति मंत्रमुखरा महर्षयः ॥१२४॥ द्यतिमद्रगाञ्जरविविम्बिकरणजटिलां गुमण्डलः । नौलजलदजलराशिवपुः सहयन्युक्तिरंदडकेतुरोश्वरः ॥१२५॥ हलभृब्य ते स्वजनभवितमुदितहृदयी जनेश्वरी । धर्मविनथरितकौ सुतरां चरणारविदयुगलं प्रणेमतुः॥१२६॥ ककुदं भुवः सचरयोपिटुपितशिखरैरलंकृतः। मेघपटलपरिवीतनटरतत्र लक्षणानि लिखितानि विज्ञिणा ॥१२७॥ बहतीति तीथंमृविभिश्च सततमभिगम्यतेऽद्य च । प्रीतिविततहृदयः परितो भृशमूज्जयन्त इति विश्वतोऽचलः ॥१२८॥। बहिरन्तरप्युभयथा च करणमविधाति नार्थकृत्। नाथ युगपदिवतं च सटा स्विमदं तलामलकवद्विवेदिय ॥१२६॥ अत्रएव ते युधनुतस्य घरतगुणमद्भुनोदयम्। न्यायविहितमवधार्य जिने त्वयि सुप्रसन्नमनसः हियता वर्षे ।।१३०॥

२३. श्री पार्श्वनाथ जिन स्तुति:

तमासनीर्सः सधनुस्तरिह्युणैः प्रकीणंवीमाशानिवायुवृध्विभः ।
बसाहर्कसैरिवसंदर्भते महानना यो न चचाल योगतः ॥१३१॥
बहुत्स्लामण्डलमण्डेपन यं गुरुत्तिहिरिद्धः स्वीपर्तागाम् ।
जुगूहृतागो घरणो घरापरं विरागसन्ध्यातिबन्ध्वो यया ॥१३२॥
स्वयोगनिहिंत्रगनिशातप्रारमा निशास्य यो दुर्ज्यमोहिर्विद्धयम् ।
स्वयोगनिहिंत्रगनिशातप्रारमा निशास्य यो दुर्ज्यमोहिर्विद्धयम् ।
स्वयोगसर्वः विध्यत्मस्त्रम् तिस्तीस्त्रपुर्वात्मत्यास्यदं पदम् ॥१३३॥
समीश्यरं वीध्य विध्यतस्त्रम्तं तिसीस्त्रपुर्वातस्यास्यदं पदम् ॥१३३॥
समीश्यरं वीध्य विध्यतस्त्रम् तिसीस्त्रपुर्वातस्यास्ययं पदम् ॥१३३॥
स सत्यविद्यातपसां प्रणायकः समप्रधीद्यक्ष्यस्यग्रीष्टिबिष्प्रमः ॥१३५॥
स्वासदा पार्श्वीजनः प्रणम्यते विज्ञोनभिष्यापयवृष्टिबिष्प्रमः ॥१३५॥

२४. श्री महावीर जिन स्तुति:

कीर्स्या मुवि भासितया थीर स्वं गुणसमुत्थया भासितया। भासोडसमासितया सोम इव व्योम्नि कृदशोभासितया ॥१३६॥ त्रव जिन शासनविभवो जयति कलायपि गुणानुशासनविभवः। दोषकशासनविभयः स्तुवंति चैनं प्रमाकृशासनविभवः ॥१३७॥ स्यादादस्तव दृष्टेष्टाविरोधतः स्यादादः । अनवराः इतरो न स्यादादो सद्वितयविरोधान्मुनीखराध्स्याद्वादः ॥१३८॥ त्वमसि सुरासुरमहितो प्रन्यिकसत्त्वाशयप्रणामामहितः। स्रोक्षत्रयपरमहितोऽनावरेणञ्योतिरुवलद्वामहितः। 1135811 सभ्यानामभिरुचितं दधासि गुणमूपणं श्रिया चारुचितम्। मन्तं स्वस्यां रुचितं जयसि च मुगलांछनं स्वकान्त्या रुचितम् ॥१४०॥ त्यं जिन गतंमदमायस्तव भावानां मुमुक्षुकामदमायाः। थीमदमायस्त्वया समादेशि सप्रयामदमायः ॥१४१॥ गिरिभित्यवदानवतः थीमत इव दन्तिनः भयद्दिनवतः। शमवादानवतो गतमूजितमपगतप्रमादानवतः ॥१४२॥ बहुगुणसंपदसकलं परमतमपि मधुरवचनविग्यासकलम् । वय भवतभवतंतकलं तव देव मतं समन्तभद्रं सकलम् ।।१४३।।

सम्पूर्ण दस महाविद्या तन्त्र महाशास्त्र

ले॰ तन्त्राचार्य पं॰ राजेश दीक्षित

विश्व जनमानम में देवी भगवती ने देत पौराणिक स्वरूप प्रचलित है यथा-कार्क लारा, महाविद्या (पोर्स्म), भूवनेक्दरी, निपुर भैरवी, छित्रमस्ता, धूमावती, बगलापूर्व मातञ्जी, कमलाप्त्रिक्त (कमला) वे सामी मातञ्जी, कमलाप्त्रिक्त (कमला) वे सामी मातञ्जी, कमलाप्त्रिक्त के सिमित्र स्वरूप हैं। मह्म महाप्त्रम्य से सभी देवियों के लाग्निक निता भी को ही शात रहते हैं तथा वे कित्ती भी कोमत पर उन्हें नहीं बताते । साथ से सम्बन्धित के पत्न, यूवा, यूव, साधनविद्या, अवनिपर सवज्य, सहस्रात्म आदि विभिन्न विषयों को विषयों है। देवी भक्तों को ककता थोग्य महान् प्रस्य, सभूमं सुतहरी उप्पेदार कपडा वादिन सिह्त सवित्र प्रवित्र का मृत्य २२५% कालवर्ष 10) उपरोक्त सम्य असान्या

- (1) काली तन्त्र शारत्र (2) तारा वन्त्र शास्त्र
- (3) महाविद्या (पोड्सी) तन्त्र शास्त्र
- (4) मुबनेश्वरी एवम् छित्रमस्ता तन्त्र शास्त्र
 - (5) बगलामुखी एवम् मातङ्गी तन्त्र शास्त्र
 - (६) भैरवी एवम् धूमावती तन्त्र शास्त्र
 - (7) कमलारिमका (लक्ष्मी) तन्त्र शास्त्र

प्रत्येक पुस्तक का भूत्य 30 ६० डान खर्च 7 ६० अलग ।

कीतुकरत्न भाण्डागार-वृहत् इन्द्रजाल

ले॰ ओझा बाबा

आजनन बाजार में इन्हजात बहुत मित्रते हैं जिन्होंने इस विषय की गम्भीरता व न्दास प्राय कर रखा है। इस पुस्तक में परमस्ति ओहा बाबा ने सम्पूर्ण जीवन का शा-निवोडकर रख दिया है। इसाप्रय ने सिद्धि देने बाने मान्य, बन्न, तन्त्र साम्मोहन, उच्चादन वस्त्रीकरण आदि विधि सहित दिये गये हैं। प्राणित व स्रोजन्य पुस्तक वा प्रस्य 30) ह० आव .खर्म 7) ह० अलग।

प्रयोगात्मक कुण्डलिनी तन्त्र

से॰ महाँच यतोग्द्र

(डा॰ वाय॰ डो॰ गहराना)

हुण्डानिनी जागरण पर एकमात्र प्रयोगिक पुस्तक जिसमे लाग्य तत्व शान के विद्याल, कुण्डानिनीयोग के आसन, प्राणायाम, धारणा और ध्यान के विशेष शासक, दुण्डानिनी है हूर पक्तों से आये के विशेष विदारण आदि क्षिय रूप से दिये गये हैं। 150 से प्रधिक रोत के सारे चित्र पृष्ठ सक्या 396 सजित्ह पूच्य 75 कुण डाक खर्ज 10 कुण असम ।

पुस्तकं मंगाने का पता

दीप पव्लिकेशन अस्पताल रोड, आगरा–३

सम्पूर्ण दस महाविद्या तन्त्र महाशास्त्र

से॰ तःत्राचार्यं पं॰ राजेन टीक्षित

विश्व जनमानम में देवी भगवती के दस पौराणिक स्वरूप प्रचलित है यथा-कासी तारा, महाविद्या (योड्सी), भूवनेश्वरी, त्रिपुर भैरवी, छिन्नगस्ता, धुमावती, वगुलामा माताजी, कमलात्मिका (कमला) । ये सभी भगवती पराशक्ति के विभिन्न स्वरूप हैं । प्रस

महाग्रन्थ में सभी देवियों के तान्त्रिक, काम्य प्रयोग दिये गये हैं जो सिर्फ महान सिद्ध-योगियं को ही जात रहते हैं तथा वे किसी भी कीमत पर उन्हें नहीं बताते । साथ में सम्बन्धित करे चन्त्र, पूजा, जप, साधनविधि, उपनिषद सतजप, सहस्रनाम आदि विभिन्न विषयो को दिष

- भाग है। देवी भक्तों को सकलन योग्य महान प्रत्य, सम्पूर्ण सुनहरी टप्येदार कपड़ा वाइन्तिन सहित सचित्र प्रत्य का मुख्य '225% डाकप्पर्व 10) उपरोक्त प्रत्य अलग-अलग सहित सचित्र ग्रन्थ का मुख्य '२२5/क फिल्दों मे भी है।
 - (I) काली शन्त्र शास्त्र (2) तारा तन्त्र शास्त्र
 - (3) महाविधा (पोड्सी) तन्त्र शास्त्र (4) मुवनेश्वरी एवम् छिन्नमस्ता तन्त्र शास्त्र
 - (5) बगलामुखी एवम् मातङ्गी तन्त्र शास्त्र
 - (6) भैरवी एवम् धुमावती तन्त्र शास्त्र
 - (7) कमलारिमका (सक्ष्मी) तन्त्र शास्त्र
 - प्रत्येक पुस्तक का मुख्य 30 ६० डाक खर्च 7 ६० अनुग ।

कौतुकरत्न भाण्डागार-वृहत् इन्द्रजाल

ले॰ ओझा बाबा

आजकल बाजार में इन्द्रजाल बहुत मिलते हैं जिन्होंने इस विषय की गम्भीरता को खात्म प्राय कर रखा है। इस पुस्तक में परमसिद्ध ओझा बाबा ने सम्पूर्ण जीवन का ज्ञान निचोडकर रख दिया है। दत्तात्रय ने सिद्धि देने वाले मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र सम्मोहन, उच्चाटन, वधीकरण आदि विधि सहित दिये गये हैं। सचित्र व सजिल्द पुस्तक का मुक्य 30) ६० डाक ·छवं7) रु० अलग।

प्रयोगात्मक क्रण्डलिनी तन्त्र ले॰ महर्षि यतीन्द्र

(डा॰ वाय॰ डी॰ गहराना)

कुण्डलिनी जागरण पर एकमात्र प्रयोगिक पुस्तक जिसमे आत्म तत्व ज्ञान के सिद्धान्त, कुण्डलिनीयोग के आसन, प्राणायाम, धारणा और ब्यान के विशेष प्राटक, कुण्डलिनी ने पर चको से आगे के विशेष विवरण बादि विशेष रूप से दिये गये हैं। 150 से अधिक रंगीन व सादे चित्र पृष्ठ संद्या 396 सजिल्द मूल्य 75 ६० डाक खर्च 10 ६० अलग।

पुस्तक मंगाने का पता

दीप पव्लिकेशन अस्पताल रोड, आगरा-३